मनभावन लोकगीत

350 से अधिक पारंपरिक एवं आधुनिक लोकगीत

डॉ. शरद अग्रवाल

कॉपीराइट © डॉ. शरद अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित।

लोकगीत जनता की संपत्ति होते हैं, उन पर किसी का एकाधिकार नहीं हो सकता. इस पुस्तक में लिखे हुए गीतों को उपयोग करने में कॉपीराइट का कोई बंधन नहीं है. इन का अधिक से अधिक उपयोग करें और अन्य लोगों को भी इनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें.

प्राक्कथन

लोक साहित्य में लोकगीतों को अपना अलग ही आनंद है. एक समय में इनका बड़ा महत्व था. किसी भी उत्सव में महिलाएँ ढोलक की थाप पर लोकगीत अवश्य गाती थीं और नृत्य भी करती थीं. संगीत के अतिरिक्त इसमें हंसी

मजाक का भी मिश्रण होता था. अब इलैक्ट्रोनिक फ़िल्मी संगीत के आगे यह विधा दम तोड़ रही है. अपने समाज की इस अमूल्य परंपरागत धरोहर को सहेज कर रखने की आवश्कता है. लोकगीत मुख्यत: पांच प्रकार के होते हैं : संस्कार गीत, गाथा-गीत (लोकगाथा), पर्वगीत, जीविका गीत और जातीय गीत.

1. संस्कार गीत लोक भाषा में जन्म उत्सव, मुण्डन, पूजन, जनेऊ, विवाह आदि अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को संस्कार गीत कहते हैं. जैसे : सोहर (जच्चा), बन्नी, बन्ना, घुड़चढ़ी, गौरी पूजन, जयमाल, विदाई आदि.

2. गाथा-गीत (लोकगाथा) विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित लोकगाथाओं पर आधारित लोक गीत को लोकगाथा या गाथा-गीत कहते हैं. जैसे : आल्हा, ढोला, भरथरी, नरसी भगत, बंजारा आदि.

3. पर्वगीत लोक समाज के द्वारा विशेष पर्वों एवं त्योहारों पर गाये जाने वाले मांगलिक-गीतों को 'पर्वगीत' कहते है.

जैसे : राज्य में होली, दिपावली, छठ, तीज, कजरी, रामनवमी, जन्माष्टमी आदि अन्य शुभअवसरों पर गाये जाने वाले गीत पर्वगीत होते हैं.

4. जीविका गीत देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों द्वारा अपना कार्य करते समय जो गीत गाते जाते हैं उन्हें पेशा गीत कहते हैं. जैसे : ग्रामीण क्षेत्रों में गेहूं पीसते समय 'जाँत-पिसाई', खेत में सोहनी, रोपनी, छत की ढलाई करते समय 'थपाई' तथा छप्पर छाते समय 'छवाई', आदि गीत जीविका गीत कहलाते हैं.

5. जातीय गीत ऐसे गीत जिसे समाज के विभिन्न क्षेत्रों की विशेष वर्गों द्वारा सुने और गाये जाते है, उन्हें जातीय गीत कहते हैं. जैसे : झूमर, बिरहा, प्रभाती, निर्गुण, कहरवा, नौवा भक्कड, बंजारा, आदि. लोकगीतों की उत्पत्ति कैसे हुई?

लोकगीतों की उत्पत्ति समाज के लोगों द्वारा ही की जाती है. जब इसे पूरे समाज द्वारा गाया जाने लगता है तो इसे लोकगीत कहने लगते हैं. लोकगीतों की उत्पत्ति कागज़ पर लिखकर प्रकाशन से नहीं हुई हैं बल्कि ये मौखिक रूप से उत्पन्न होते हैं और मौखिक परम्परा में जीवित रहते हुए एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलते रहते हैं. लोकगीतों की विशेषताएँ : लोकगीत लोकभाषा में होते हैं और इन्हें लोक समाज के द्वारा गाया जाता है. ये जन समुदाय के गीत होते हैं और मौखिक परम्परा में जीवित रहते हैं. लोकगीत आसान लय में गाए जाते हैं जिससे समाज के सामान्य व्यक्ति भी इन्हें गा सकें. इनकी भाषा भी आसान होती है जिससे सभी लोग इनका आनंद ले सकें. लोकगीतों में में बहुत से वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है जैसे कि ढोलक, मंजीरा, चिमटा, झांझ, सारंगी, सिंगी, ढपली, हारमोनियम, खड़ताल, घुंघरू आदि. कई लोकगीतों के साथ लोकनृत्य भी किया जाता है जैसे कि झूमर, बिहू, गरबा आदि. लोगों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही लोकगीत किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति और विचारों से परिचय कराते हैं. इन से देश के विभिन्न क्षेत्रों के रीति रिवाज, रहन- सहन, पर्व, धर्म, संस्कार, इतिहास आदि की पहचान होती है.

डॉ. शरद अग्रवाल

सबरंग लोकगीत

1. गाड़ी वाले दुपट्टा उड़ा जाए रे

(लोकगीतों की नायिका सब से संवाद करती हुई चलती है. यहाँ वह गाड़ी हाँकने वाले से बतिया रही है. हो सकता है कि इस काव्यकथा का नायक ही गाड़ी हाँक रहा हो)

गाड़ी वाले दुपट्टा उड़ा जाए रे
जरा धीरे चलो जरा हौले चलो

सिर पर घड़ा घड़े पर गागर
सिर पर घड़ा घड़े पर गागर
गाड़ी वाले कमर बल खाए रे जरा धीरे चलो जरा हौले चलो

सावन गरजे भादो बरसे
सावन गरजे भादो बरसे
गाड़ी वाले चुनर भीगी जाए रे जरा धीरे चलो जरा हौले चलो

2. सासुल पनियाँ कैसे जाऊँ रसीले दोऊ नैना

(गोपी अपनी सास से कह रही है कि पानी भरने कैसे जाऊँ, मैं कमजोर हूँ गगरी कैसे उठाऊँ. ऊपर से वहाँ रसीले नैनों वाला छेड़ता भी है. सास कहती है कि छोटी ननद को साथ ले जा. पनघट पर पहुँचते ही , कदम्ब की छाँव में बैठे छलिया ने बाँह पकड़ ली. दुष्ट ननदी ने घर जा कर सास से चुगली कर दी कि भाभी का तो कोई यार है. सास ने बलम को सिखाया तो उसने थप्पड़ घूंसे लगाए. इस दुष्ट ननदी को जल्दी शादी कर के भेज दूँगी और फिर उसका नाम भी न लूंगी).

सासुल पनियाँ कैसे जाऊँ रसीले दोऊ नैना।
मोरी बारी है उमरिया, मैं कैसे धरूं गगरिया,
मेरी पतली कमर बल खाए, रसीले दोऊ नैना,
सासुल पनियाँ...
बहू ओढ़ो चटक चुनरिया, और सिर पर धरो गगरिया,
छोटी ननदी ले लो साथ, रसीले दोऊ नैना,
सासुल पनियाँ...
वह बैठा कदम की छइयाँ, झट आकर पकड़ी बइयाँ,
बीबी घर मत कहियो जाय, रसीले दोऊ नैना,

सासुल पनियाँ -------
वह ननदी असल छिनरिया, घर आके कह दीं बतियाँ,
अम्मा भाभी का कोऊ यार, रसीले दोऊ नैना,
सासुल पनियाँ -------
सासुल ने बलम सिखाये, उन्ने थप्पड़ चार लगाए,
संग घूँसे भी बरसाए, रसीले दोऊ नैना,
सासुल पनियाँ -------
फागुन में ब्याह करूँगी, और जेठ में गौना दूँगी,
ननदी फिर ना लूँगी नाम, रसीले दोऊ नैना,
सासुल पनियाँ -------

3.चले जाना बजरिया ओ राजा जी

(नायिका अपने पति से चुनरी लाने की मांग कर रही है, लेकिन चुनरी पहनती है तो नजर लग जाती है. नजर उतारने के लिए वैद्य बुलाए गए वो ननदी को लेकर भाग गए)

चले जाना बजरिया ओ राजा जी-2
झाँसी शहर की लागी बजरिया,
ले दो ले दो चुनरिया ओ राजा जी –

चुनरी पहन गोरी अंगना में बैठी,
लागी लागी नजरिया ओ राजा जी –

दिल्ली शहर से वैद्य बुलाओ,
झारो-2 नजरिया ओ राजा जी –

दिल्ली शहर के वैद्य हरामी,
मांगे-2 ननदिया ओ राजा जी -
बारी सी ननदी जनम की चंचल, भागी-2 वैद्य लेके ओ राजा जी

4.हमरी गुलाबी चुनरिया, लग जइहै नजरिया

(गुलाबी चुनर ओढ़ने से नजर लगने का डर है. सास को बैर है इस लिए तरह तरह के काम करने को कह रही है. नाजुक बहू जो भी काम करेगी में उस में कुछ न कुछ खतरा है, इसकी काम करे भी कैसे)
हमरी गुलाबी चुनरिया, लग जइहै नजरिया-2
सासू हमारी जनम की वैरिन, हमसे बनवावे रसोइया,
लग जइहै नजरिया

सासू कहें बहू खाना बना लो, हमरी तो जल गई उंगलिया
लग जइहै नजरिया
सासू कहे बहू पनिया भर लो, हमरी लचक गई कमरिया
लग जइहै नजरिया
सासू हमारी कहे झाड़ू लगा लो, हमरी तो मुड़ गई कलइया,
लग जइहै नजरिया

5.सूरज मुख न जइवे, न जइवे, हाय राम बिंदिया के रंग उड़ जाये

(सूरज के सामने जाने में इस बात का खतरा है कि बिंदिया का रंग उड़ जाएगा. बिंदिया पहन के निकलीं तो ससुर की नज़र लग गई, ननदी अलग बिंदिया के लिए ललचा रही है. पिया के मन को बिंदिया भा गई तो क्या हुआ यह बताने में लाज आ रही है.)

सूरज मुख न जइवे, न जइवे, हाय राम बिंदिया के रंग उड़ जाये
हाय मोरी बिंदिया
लाख टका की मोरी बिंदिया, ओ मोरी बिंदिया,
वो तो ससुरा की लागी नजरिया, कि हाय मोरी बिंदिया

बिंदिया पहन के निकसी अंगनवाँ, निकसी अंगनवा,
वो तो नन्दी के जिया ललचाये कि हाय मोरी बिंदिया.........

बिंदिया पिया के ऐसे मन भाये, ऐसे मन भाये
हमसे कहयो न जाये कि हाय मोरी बिंदिया

6.चले आओ सैया रंगीले, मैं वारी रे

(पिया को बुलाते हुए नायिका कह रही है कि उसके बिना कोई भी गजरा, कोई भी जेवर और कोई भी श्रृंगार अच्छा नहीं लगता.)

चले आओ सैया रंगीले, मैं वारी रे – 2

सजन मोहे तुम बिन भाये न गजरा, भाए न गजरा
न मोतिया, चमेली न जूही न माँगरा,
चले आओ सैया रंगीले, मैं वारी रे – 2

सजन मोहे तुम बिन भाये न जेवर जी भाये न जेवर रे,
न झुमके, न कंगन, न झूमर न झांझर रे,

चले…
सजन मोहे तुम बिन भाये न श्रृंगा
र, जी भाये न श्रृंगार
चले आओ सैया रंगीले, मैं वारी रे – 2

7.दुपट्टा मेरा रेशमी कोई गोटा लगा देना

(पिया दूर बसा हो तो सलोनी नायिका के नखरे कौन उठाएगा.)

दुपट्टा मेरा रेशमी कोई गोटा लगा देना – 2
सोने की थाली में भोजन परोसा
खिलैया मेरा दूर बसे, कोई आके खिला देना, दुपट्टा मेरा रेशमी –

चांदी के लोटा में पानी भरायो
पिलैया मेरा दूर बसे, कोई आके पिला देना, दुपट्टा मेरा रेशमी –

लौंगा इलायची के बीड़ा लगाये
रचैया मेरा दूर बसे, कोई आके रचा देना, दुपट्टा मेरा रेशमी

बेला चमेली की सेजा सजायी
सुलइया मेरा दूर बसे, कोई आके सुला देना, दुपट्टा मेरा रेशमी –

8.कहाँ गिरा कंगना, और कहाँ गिरी किलिया

(कंगना और नाक की कील तो आंगन और छत पर गिरीं हैं इसलिए उन्हें तो सास, ननद और जेठानी से झगड़ कर ले लूंगी, लेकिन बिंदिया तो सेज पर गिरी है, उसे तो हंस के ही मांगूंगी.)

कहाँ गिरा कंगना, और कहाँ गिरी किलिया,
कहाँ गिरी रे सिर माथे की बिंदिया-

आंगन में गिरा कंगना, और छत पै गिरी किलिया,
सेजो पै गिरी रे सिर माथे की बिंदिया

कैसे मांगू कंगना, और कैसे मांगू किलिया
कैसे मांगू रे सिर माथे की बिंदिया

लड़के मांगू कंगना, झगड़ के माँगू किलिया
हंस के मांगू रे सिर माथे की बिंदिया

9.बीरन आये है लिवइआ, भेज दो बलम

(भैया बुलाने आये हैं. लाड़ली का मन पीहर जाने को कर रहा है. पर बलम हैं कि भेजने को राजी नहीं हैं. उनकी भी क्या गलती है. सावन में वियोग कैसे सहेंगे. लाडली तरह तरह से समझा रही हैं, मसलन - खाना होटल में खा लेना, हमारी फोटो से मन लगा लेना वगैरा वगैरा-)

बीरन आये है लिवइआ, भेज दो बलम, पीहर भेज दो बलम
सावन में हम पीहर जइवे, भादो में आ जइवे,
नहीं तो रोयेगी मेरी मइया, भेज दो बलम

जब बालम हम पीहर जइवे, तुम भूखे मत रहियो- 2
होटल खुले हैं बजरिया, भेज दो बलम

जब बालम हम पीहर जैवे, सर पै हाथ रख दइयो
फोटो टंगी है अटरिया, भेज दो बलम

10.मेरे पैरों की पायल मंगा दो पिया

(पति को पायल मंगाने के लिए मना रही हैं और साथ ही पायल को देख कर जो लोग जलेंगे उन का इलाज भी बता रही हैं.)

मेरे पैरों की पायल मंगा दो पिया-2
मेरी पायल को देख देख, सासू जलें,उनका खाना अलग करवा दो पिया,
मेरे पैरों कि पायल -
मेरी पायल को देख देख नन्दी जले,उन्हें ससुरे की गैल बता दो पिया।
मेरे पैरों कि पायल -
मेरी पायल को देख देख देवर जले,उन्हें छोटी सी गुड़िया मंगा दो पिया।
मेरे पैरों कि पायल –

11.चूड़ियाँ बंगलौरी बंगलौरी मेरे हाथों में -

(बंगलौरी चूड़ियाँ पहन कर बहूरानी सब से दो दो हाथ करने का हौसला रखती हैं. हर किसी से लड़ने को अलग अलग पैंतरा है इन के पास.)

चूड़ियाँ बंगलौरी बंगलौरी मेरे हाथों में –

सास बहू में हुई लड़ाई रसोई के बीच में
लड़ ले सासू लड़ ले,ये बेलन मेरे हाथ में।
चूड़ियाँ बंगलौरी बंगलौरी मेरे हाथों में –

ननद भाभी में हुई लड़ाई आंगन के बीच में,
लड़ले ननदी लड़ ले, ये चुटिया मेरे हाथ में
चूड़ियाँ बंगलौरी बंगलौरी मेरे हाथों में –

मिया बीबी में हुई लड़ाई सेजों के बीच में
लड़ ले बालम लड़ ले ये लालन मेरी गोद में
चूड़ियाँ बंगलौरी बंगलौरी मेरे हाथों में –

देवर भाभी में हुई लड़ाई कमरे की बीच में
लड़ ले देवर लड़ ले, ये साजन मेरे साथ में
चूड़ियाँ बंगलौरी बंगलौरी मेरे हाथों में –

12.हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.

(पति पत्नी की मजेदार नोंक झोंक. पत्नी दहेज़ के रुपयों का ताना दे रही है तो पति उसके मैके के साधारण रहन सहन का.)

पत्नी - हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.
दयजे में तुमने रूपइया गिनवाय लये,
रुपइया गिनवाय के तुम काहे बिकाय गये,

खरी खोटी अब न सुनाव मोरे सैंया,
हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.

चौका न करिहों, मैं बर्तन न करिहों,
एक हमे नौकर लगाओ मोरे सैया.
हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.

पति - हमसे न अंखिया दिखाव मोरी गोरी
मैके में पहनत थी लाली चुनरिया
हमसे न माँगो जरीदार लंहगा,

पत्नी - हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.

पति - मैंके में खाती थी ज्वार और बाजरा,
हमसे न होटल कहो मोरी गोरी.

पत्नी - हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.

पति - मैके में घूमीं गोरी खेत और गलियाँ,
हमसे न मार्केट कहो मोरी गोरी,

पत्नी - हमसे न अंखिया दिखाव मोरे सैंया.

13.रिक्सा बलम नहीं लाये

(मर्दों को पैदल चलने का शौक होता है. वे यह नहीं समझ सकते कि जनानियों को पैदल चलने में कितनी दिक्कत होती है.)

(तर्ज - जब से बलम घर आये)
रिक्सा बलम नहीं लाये, पैदल चला नहीं जाये –

जेठ मास की तेज दुपहरी, सजना तुम हो बड़े बेदर्दी
कोमल बदन कुम्हलाये, पैदल चला नहीं जाये –

रात को कहते तुझे पिक्चर दिखाऊँगा,
तेरे खातिर सवारी मंगाऊंगा,
सुबहा को ये पलट जाये, पैदल चला नहीं जाये –

14.सितारे झड़ जायेंगे कहा मानो

(नखरे और मीठी मीठी नोंक झोंक लोकगीतों के प्रिय विषय हैं. देखिए वयस्कों के जमघट में गाया जाने वाला एक ऐसा ही लोकगीत. थोड़ी अश्लीलता का बुरा न मानें.)

सितारे झड़ जायेंगे कहा मानो-2
ओ राजा मेरे नयनो को हाथ न लगाना,
ये कजरा बह जायेगा, कहा मानो –

ओ राजा मेरे कन्धों को हाथ न लगाना
ये अंचरा उड़ जायेगा, कहा मानो –

ओ राजा मेरी अंगिया में हाथ न लगाना,
ये जुबना बिगड़ जायेगा, कहा मानो –

ओ राजा मेरी कमर में हाथ न लगाना,
भरतपुर लुट जायेगा, कहा मानो-

15. कसम तुम को राजा तुम कहा मानो

(कुछ लोकगीत नाचने गाने वालियों की महफ़िल के लिए भी बने हैं.)

कसम तुम को राजा तुम कहा मानो
के राजा मेरे बालों को हाथ न लगाना,
नागिन से लिपट जाएँगे, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरी बिंदिया को हाथ न लगाना,
हाथ से चिपट जाएगी, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरे झुमकों को हाथ न लगाना,
के मोती बिखर जाएँगे, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरी तिलड़ी को हाथ न लगाना,
के लड़ियाँ उलझ जाएँगी, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरी तगड़ी को हाथ न लगाना,
कमरिया लचक जाएगी, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरे कंगन को हाथ न लगाना,
के कंगन चुभ जाएगा, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरी पायल को हाथ न लगाना,
के घुँघरू बिखर जाएँगे, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरी साड़ी को हाथ न लगाना,
सितारे झड़ जाएँगे, कहा मानो,
कसम तुम को -------
के राजा मेरी चोली को हाथ न लगाना,
लाज से मर जाऊँगी, कहा मानो,
कसम तुम को -------

(तिलड़ी - तीन लड़ियों वाला हार)

16.इसी दम पे गुलूबंद गढ़इ दे बलमा

(स्त्रियों की आपसी हंसी मजाक में हास्य के साथ थोड़ी अश्लीलता भी होती है, लेकिन लोकगीतों में सब चलता है.)

इसी दम पे गुलूबंद गढ़इदे बलमा।
पाँच तोला सोना मंगाइ दे बलमा, जिसमें हरवा भी हो
जिसमें झुमकी भी हो,
फिर सेजो पे चमाचम होय बलमा, इसी दम पे -
एक पाव चाँदी मंगाइ दे बलमा,जिसमें पायल भी हो
जिसमें लच्छे भी हो,
फिर सेजों पर छमाछम होय बलमा, इसी दम पे -
एक सेर मिठाई मंगाइ दे बलमा, जिसमें लड्डू भी हों, जिसमें पेडे भी हों,
फिर सेजों पे गपागप होय बलमा, इसी दम पे -
एक थान रेशम मंगाइ दे बलमा, जिसमें गद्दा भी हो और रजाई भी हो,
फिर सेजों पे कशमकश होय बलमा, इसी दम पे –

17.हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै

(स्त्रियों की आपसी हंसी मजाक में सबसे अधिक खिंचाई बुद्धू बालमा की ही होती है.)

हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै-2
सबकी गाड़ी में हार्न बजत है, हमार बलमा सीटी दे दे चलावे,
(हमार बलमा टूटी थाली बजावे)
हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै।
सबकी गाड़ी में लाइट जलत है, हमार बलमा लालटेन ले चलावे,
हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै।
सबकी गाड़ी में बैटरी लगत है, हमार बलमा धक्का दे दै चलावे,
हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै।
सबकी गाड़ी में गद्दी बिछत है, हमार बलमा टाट पट्टी बिछावे,
हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै।
सब की मोटर में बीबी बैठत है, हमार बलमा दूजी औरत बिठावे,
हमार बलमा मोटर गाड़ी चलावै।

18. कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूंगी

(छत के ऊपर बनी कोठरी में ही लोकगीतों की नायिका अपने पति को प्रेमपाश में फंसा कर उँगलियों पर नचाती है और घर के सारे सदस्यों की खबर लेती है.)

कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूंगी

जो मेरी सासु प्यार करेगी सब तीरथ करवा दूंगी
जो मेरी सासु लड़े लड़ाई रोटी को तरसा दूंगी
कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूंगी

जो मेरी जिठनी प्यार करेगी सारा काम करा दूंगी
जो मेरी जिठनी लड़े लड़ाई दो चूल्हे करवा दूंगी
कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूंगी

जो मेरा देवर प्यार करेगा बी ए पास करा दूंगी
जो मेरा देवर करे लड़ाई मूंगफली बिकवा दूंगी
कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूंगी

जो मेरी ननदी प्यार करेगी जल्दी व्याह कर दूंगी
जो मेरी ननदी लड़े लड़ाई गौने को तरसा दूंगी
कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चला दूंगी

19.प्यारे नन्दोइया सरौता कहाँ छोड़ आये

(नन्दोई के साथ हंसी ठिठोली करना सलहज का जन्मसिद्ध अधिकार है. इस सारे प्रकरण में सब से ज्यादा बुद्धू बेचारा पति ही बनता है.)

प्यारे नन्दोइया सरौता कहाँ छोड़ आये-2
नन्दी खाये डली सुपाड़ी और कत्था नन्दोइया,
मैं तो खाऊ पान के बीड़े, चूना खाये सैयां। सरौता कहाँ..

नन्दी देवर नीबू खायें, और चीकू नन्दोइया,
मैं खाऊँ बम्बई के केले, छिलके खाये संइया। सरौता कहाँ..

नन्द बेचारी बस में धूमे, और पैदल नन्दोइया,
मैं घूमू मोटर गाड़ी में पीछे भागे संइया। सरौता कहाँ..

नन्दी खाये खील बताशे, और लड्डू नन्दोइया,
मैं खाऊं रबड़ी के दौने, पत्तल चाटे सइयाँ। सरौता कहाँ..

ननद बेचारी मैके जाये, और दफ्तर नन्दोइया,
मैं सखियों संग मौज मनाऊं, बच्चे पाले सँया। सरौता कहाँ ..

(इसी शीर्षक से एक अलग गीत यह भी है)

सरौता कहाँ भूल आए प्यारे नन्दोइया ?
सो मेरी सखी लड्डू कचौरी किसको, वो बाहर नन्दोइया खड़े जी जरा उनको।
सो मेरी बहना सूखे से टुकड़े किसको, वो घर में मियाँ मोधू पड़े जी जरा उनको।

सो मेरी सखी शरबत के प्याले किसको, वो बाहर नन्दोइया खड़े जी जरा उनको।
सो मेरी बहना खारा सा पानी किसको, वो घर में मियाँ मोधू पड़े जी जरा उनको ।

सो मेरी सखी पानों के बीड़े किसको, वो बाहर नन्दोइया खड़े जी जरा उनको।
सो मेरी बहना पीपल के पत्ते किसको, वो घर में मियाँ मोधू पड़े जी जरा उनको।

सो मेरी सखी मलमल के कुरते किसको, वो बाहर नन्दोइया खड़े जी जरा उनको।
सो मेरी बहना फटा पजामा किसको, वो घर में मियाँ मोधू पड़े जी जरा उनको।

सो मेरी सखी तकिए और तोशक किसको, वो बाहर नन्दोइया खड़े जी जरा उनको।
सो मेरी बहना टूटी खटोली किसको, वो घर में मियाँ मोधू पड़े जी जरा उनको।

20.मेरे बलमा की ऊँची अटरिया

(सजनी को मइके जाना है. साजन का मन है कि जाने से पहले एकांत में मिलन हो जाए. पर बैरी ज़माना हमेशा से प्यार का दुश्मन रहा है. मिलन में आने वाली अड़चनों का वर्णन सुनिए इस मजेदार गीत में.)

मेरे बलमा की ऊँची अटरिया, मिलन जाने कब होगा।
पहन ओढ़ गोरी आंगन में बैठी, मैके से आये गये नऊआ,
मिलन जाने..
खिला पिला मैने नऊआ बिदा किये, आय गये मैके से बम्हना,
मिलन जाने..
पैसा रूपया दे मैंने बम्हन विदा किये, इतने में आय गये वीरा,
मिलन जाने..
जब तक बीरन तुम मोटर ले आओ, हो आऊँ सैंया की अटरिया,
मिलन जाने..

जब तक अटरिया की सीढ़ी चढ़ी मैंने, आय गई मोटर बैरनिया,
मिलन जाने..
बीरन संग मैं मोटर में बैठी, छज्जे से झाँक रहे सैयां,
मिलन जाने..

इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है -

मेरे सइयाँ की ऊँची अटरिया
मेरे सइयाँ की ऊँची अटरिया, मिलन जाने कब होगा,
मिलन जाने ओ हो, मिलन जाने कब होगा।
कर सिंगार मैं जाने लागी,
आ गईं उनकी अम्मा, मिलन जाने -------
पैर दबा मैंने अम्मा विदा कीं,
आ गई ननद बिजुलिया, मिलन जाने -------
चुनरी दे मैंने ननदी विदा की,
आ गए देवर खिलड़िया, मिलन जाने -------
गेंद-बल्ला दे मैंने देवर विदा किए,
पीहर से आ गया नउआ, मिलन जाने -------
लड्डू-पूड़ी दे मैंने नउआ विदा किया,
इतने में आ गए भईया , मिलन जाने -------
चुनरी ओढ़ मैं डोले में बैठी,
टप-टप रोवें सइयाँ, मिलन जाने -------

21.मैं ससुराल नहीं जाऊँगी डोली रख दो कहारों

(लोकगीत की नायिका मायके में रह रही है. ससुराल से बुलावे तो आ रहे हैं लेकिन सास, ससुर, नन्द, नन्दोई, जेठ या देवर बुला रहे हैं तो कैसे आ जाएगी. जब बलमा बुलायेंगे तभी तो आएगी.)

मैं ससुराल नहीं जाऊँगी डोली रख दो कहारों,
साल दो साल नही जाऊंगी डोली रख दो कहारों।

पहला संदेशा ससुर जी का आया, अच्छा बहाना ये मैंने बनाया,
बुड्ढे के साथ नहीं जाऊँगी, डोली रख दो कहारों।

दूजा संदेशवा सास जी का आया, बुढ़िया ने हाय मुझे कितना सताया,
इस बुढ़िया को अब मैं सताऊँगी, डोली रख दो कहारों।

तीजा संदेशवा ननदिया का आया, इसने इशारो में मुझको नचाया।

उंगली पे इसको नचाऊँगी, डोली रख दो कहारों।

चौथा संदेशवा नन्दोइ का आया, मैं चल पड़ी थी मगर याद आया,
इतनी जल्दी मैं कैसे मान जाऊँगी डोली रख दो कहारों।

पंचवा संदेशा मेरे पियाजी का आया, कोई बहाना न फिर याद आया,
नंगे पांव दौड़ी चली जाऊँगी, मैके में लौट के न आऊँगी।
डोली ले लो कहारों।

(इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है)
बिना डोली के आए भौजी हम न जाएँ जी।
पहला बुलावा ससुर जी का आया,
ऐसे बुड्ढे के संग भौजी हम न जाएँ जी, बिना डोली -------
दूजा बुलावा जेठ जी का आया,
ऐसे मुछन्दर के संग भौजी हम न जाएँ जी, बिना डोली -------
तीजा बुलावा देवर जी का आया,
ऐसे छोरा के संग भौजी हम न जाएँ जी, बिना डोली -------
चौथा बुलावा नंदोई जी का आया,
ऐसे छलिया के संग भौजी हम न जाएँ जी, बिना डोली -------
पाँचवा बुलावा बलम जी का आया,
अपने रसिया के संग भौजी अभी जाएँ जी,
अपने राजा के संग बिना डोली जाएँ जी।

22.हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा

(बगिया में जाने में बड़े लफड़े हैं. बार बार ससुर जी के पैर पड़ो, जेठ जी से घूँघट करो, देवर को खेल खिलाओ, नन्दी के झगड़े और नन्दोई के नखरे सहो. और तो और पिया जी भी मौका देख कर अकेले में बुलाने की कोशिश करते हैं. सब से अच्छा है कि बगिया में जाओ ही नहीं).

हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा।
वहि बगिया में ससुर जी का डेरा, हम बार-बार पइयाँ न पड़िहें राजा।
हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा।
वहि बगिया में जेठ जी का डेरा, हम बार-बार घुँघटा ना कढ़िबे राजा।
हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा।
वहि बगिया में देवर जी का डेरा, हम बार-बार खेलवा ना खेलबै राजा।
हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा।
वहि बगिया में ननदी का डेरा, हम बार-बार झगड़ा ना सहिबै राजा।

हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा।
वहि बगिया में नंदोई जी का डेरा, हम बार-बार नखरे ना सहिबै राजा।
हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा।
वहि बगिया में बलम तुम्हरा भी डेरा, हम बार-बार सेजिया ना जैबै राजा।
हम बार-बार बगिया ना जैबै राजा ।

23.आपन देंहियाँ सँभारौं कि तौहे बलमा

(ये बलमा भी कैसे लस्सू हैं कि जहाँ भी सजनी जाए, पीछे ही लगे रहते हैं. अब बेचारी कोई काम करे, खुद को संभाले, या बलमा की ही देखभाल करती रहे).

आपन देंहियाँ सँभारौं कि तौहे बलमा

रोटिया सेंकन गयी, संग गये बलमा।
आपन रोटिया सँभारौं कि तोहें बलमा।
आपन देंहियाँ सँभारौं कि तौहें बलमा।

पनिया भरन गयी, संग गये बलमा।
आपन गगरी सँभारौं कि तोहें बलमा।
आपन देंहियाँ सँभारौं कि तौहे बलमा।

कपड़ा धोवन गयी, संग गये बलमा।
आपन धोतिया सँभारों कि तोहें बलमा
आपन देंहियाँ सँभारौं कि तौहे बलमा।

सेजिया सोवन गयी, संग गये बलमा।
आपन तकिया सँभारों कि तोहें बलमा।
आपन देंहियाँ सँभारौं कि तोहें बलमा॥

24.मैं अगरवालिन, बलम मोर बनिया

(ज्यादातर बनिये अग्रवाल होते हैं, इसलिए उनकी पत्नी अपने को अगरवालिन कह रही है. बेचारे पतिदेव उसकी बड़ी सेवा करते हैं. वह बैठी देखती है और पतिदेव कुएँ से पानी भरते हैं, रोटियाँ सेंकते हैं और पंखा झलते हैं). (बेनिया माने हाथ का पंखा)

मैं अगरवालिन, बलम मोर बनिया।
मैं गई कुइयाँ, संग गये बलमा, मैं बैठी ताकूँ, बलम भरें पनिया।
मैं अगरवालिन, बलम मोर बनिया।

रोटिया सेंकन गयी, संग गये बलमा, मैं बैठी ताकूँ, बलम सेंकैं रोटिया।
मैं अगरवालिन, बलम मोर बनिया।
सेजिया सोवन गयी, संग गये बलमा, मैं लेटी सोऊँ, बलम हाँके बेनिया।
मैं अगरवालिन, बलम मोर बनिया।

25.गोरिया चली नैहर को, बलम सिसकी लैके रोवें

(कोई कोई बलम बड़े चिपकू होते हैं जो पत्नी के नैहर जाने पर उसके वियोग में रोते सिसकते रहते हैं. ऐसे ही एक बलम की कहानी सुनिए)

गोरिया चली नैहर को, बलम सिसकी लैके रोवें।
बागों में रोवें, बगीचों में रोवें,
डलिया पे सिर देइ मारैं, बलम सिसकी लैके रोवें।
तालों पे रोवें, तलैयों पे रोवैं,
गगरी पे सिर देइ मारैं, बलम सिसकी लैके रोवें।
महला पे रोवें दुमहला पे रोवैं,
डेवढ़ी पे सिर देइ मारैं, बलम सिसकी लैके रोवें।
पढ़तउ कि रोवें पढ़उतउ कि रोवैं,
पटिया पे सिर देइ मारैं, बलम सिसकी लैके रोवें।
सेजिया पे रोवें, सेजरिया पे रोवैं,
तकिया पे सिर देइ मारैं, बलम सिसकी लैके रोवें।
गोरिया चली नैहर को, बलम सिसकी लैके रोवें।

(इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है)

गोरी चली नैहर को, चली नैहर को,
बलम सिसकी ले के रोवें।
सेजों पे रोवें, अटरिया पे रोवें,
तकिए पे सिर दे मारें, बलम सिसकी --------
कोठे पे रोवें, और आँगन में रोवें,
चौखट पे सिर दे मारें, बलम सिसकी --------
तालों पे रोवें, तलइयों पे रोवें,
धोबी के कन्धा पे सुबकें, बलम सिसकी --------
बागों में रोवें, बगीची में रोवें,
पेड़ों से लिपट के रोवें, बलम सिसकी --------

26.नाज़ुक नरम कलाई रे, पनिया कैसे लाऊँ

(गीत की नायिका को कुएँ से पानी भरने जाना है. ससुर, जेठ और देवर तो सारी सुविधाएँ मुहैया कराना चाहते हैं, पर सास, जेठानी और देवरानी डाह के मारे मरी जा रही हैं और तरह तरह के अड़ंगे लगा रही हैं. अंत में प्यारे बलम जी का ही सहारा है)

नाज़ुक नरम कलाई रे, पनिया कैसे लाऊँ ।
अपने ससुर जी की बड़ी दुलारी, आँगन कुइयाँ खनाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
सासू हमारी जनमवा की बैरी, आँगन कुँइयाँ पटाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
अपने जेठ जी की बड़ी दुलारी, रेशम की रस्सी मंगाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
हमरी जेठानी जनमवा की बैरी, रेशम की रस्सी जलाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
अपने देवर जी की बड़ी पियारी,सोने का कलश मँगाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
हमरी देवरानी जनमवा की बैरी, सोने का कलश बिकवाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
अपने बलम जी की बहुत पियारी, सौ-सौ कहार लगवाई रे
पनिया कैसे लाऊँ।
नाज़ुक नरम कलाई रे, पनिया कैसे लाऊँ ॥

इस गीत को इस प्रकार भी गाया जाता है

मोती भरी मांग मोरी सास रानी पानी को भेजें.
जाय कहियो मोरे प्यारे ससुरजी से,
अंगना में कुइयाँ खनाय दें, बहू रानी पानी को जइहैं.
जाय कहियो मोरे प्यारे जेठजी से,
सोने का गगरी मंगा दे, छोटी रानी पानी को जैइहैं.
जाय कहियो मोरे प्यारे देवर जी से,
रेशम की रस्सी मंगा दें, भौजी रानी पानी को जइहैं.
जाय कहियो मोरे प्यारे सैंया जी से,
गगरी में हाथ लगाइ दें, तोरी रानी पानी को जइहैं.

27.हम तुम दोनों रहेंगे, सदा घुंघरू बजेंगे

(शादी से पहले से ही दूल्हा दुल्हन एक दूसरे के रिश्तेदारों को किस निगाह से देखते हैं इसका वर्णन करने वाला एक हास्य व्यंग्य से भरपूर लोकगीत)

हम तुम दोनों रहेंगे, सदा घुंघरू बजेंगे,
दुल्हा-दुल्हन बनेगें, सदा घुंघरू बजेंगे.
तुम्हारा भाई हमारा साला, अड़ियल टट्टू दिल का काला,
डंडा मारा करेंगे, हम तुम दोनों रहेंगे.
तुम्हारा भाई हमारा जेठ, उसका भटके जैसा पेट,
मटका फोड़ा करेंगे, हम तुम दोनों रहेंगे
तुम्हारी बहन तिरही आड़ी, जैसे बेपहिये की गाड़ी,
धक्का मारा करेंगे, हम तुम दोनों रहेंगे.
तुम्हारी बहन हमारी साली, वो तो फूलों की है डाली
खुश्बू सूंघा करेगें, हम तुम दोनों रहेंगे.
तुम्हारी मां हमारी सास, वो तो चूल्हे की है राख,
बर्तन मांजा करेंगें, हम तुम दोनों रहेंगे.
हमारी माँ तुम्हारी सास, वो तो मैके की है आस
मैके जाया करेंगे हम तुम दोनों रहेंगे.

28.क्या सासू जी लटको झटको, क्या मटकावो कूल्हे

(जो महिलाएं बेटे की शादी में बहुत खुश हो रही होती हैं उनको सावधान करने के लिए एक हास्य पूर्ण लोकगीत - बहू आते ही घर पर राज करेगी या चूल्हा अलग करेगी).

क्या सासू जी लटको झटको, क्या मटकावो कूल्हे,
डोले में से जब उतरूंगी, अलग करूंगी चूल्हे।

कौन करेगा चौका बरतन कौन भरेगा पानी,
कौन करेगी मेरी रसोई, मैं तो घर की रानी।

ससुर करेगा चौका बर्तन, जेठ मरेगा पानी,
नन्द करेगी मेरी रसोई, मैं तो घर की रानी।

29. नई झुलनी के छैया बलम दुपहरिया बिताय लो

(झुलनी - मोतियों वाली लटकन. सजनी अपने बलम को इस बात के लिए रिझा रही हैं कि दोपहर के समय बलम उस के पास ही रहें. वारिश से बचाने के लिए बढ़िया मकान बनवा दें, गर्मी में पंखा डुला दें और ठंड से बचाने के लिए गले से लगा लें).

नई झुलनी के छैया बलम दुपहरिया बिताय लो।
चार महीना के बरखा परत है,
भीगे रे हमरी चुनरिया, बलम तनि बंगला छवाई दो।
नई झुलनी के छैया बलम दुपहरिया बिताय लो।
चार महीना के गर्मी पड़त हैं,
टप टप चुए रे पसीना, बलम तनि पंखा डुलाय दो।
नई झुलनी के छैया बलम दुपहरिया बिताय लो।
चार महीना के जाड़ा पड़त है,
थर थर काँपे बदनवा बलम तनि गलवा लगाय लो,
नई झुलनी के छैया बलम दुपहरिया बिताय लो।

30.बलम हमका लइ ना गये

(मौसम कोई भी हो बलमा से विरह बहुत परेशान करती है).

बलम हमका लइ ना गये।

चार महीना की गरमी पड़त है,
टप -टप चुवत पसिनवा, बलम हमका लइ ना गये।

चार महीना का बरखा पड़त है,
टप-टप चुवत बँगलवा, बलम हमका लइ ना गये।

चार महीना का जाड़ा पड़त है,
थर-थर काँपै बदनवा, बलम हमका लइ ना गये।

31.भूसा बिकाय मोहे लाए दियो लटकन

(लटकन - झुमके. गहनों के लिए स्त्रियों में कितनी दीवानगी होती है इसकी एक झलक. चाहे भूसा बेचना पड़े, बैल बेचने पड़ें, खेत बेचने पड़ें या आदमी को खुद बिकना पड़े, लटकन लाने जरूरी हैं).

भूसा बिकाय मोहे लाए दियो लटकन।

भूसा बिक जइहैं तो बैल क्या खइहैं -2
बैला बिकाय मोहे लाए दियो लटकन।

बैल बिक जइहैं तो खेती कैसे हुइहैं -2

खेतवा बिकाय मोहे लाए दियो लटकन।

खेत बिक जइहैं तो हम क्या खइहैं -2
आपहिं बिकाय मोहे लाए दियो लटकन।

भूसा बिकाय मोहे लाए दियो लटकन।

32.डू नॉट टच माई अंचरवा मोहन रसिया

(बृजभाषा और इंग्लिश के मेल से बना एक बहुत ही मजेदार लोकगीत).

डू नॉट टच माई अंचरवा मोहन रसिया।

आई एम द डॉटर ऑफ़ वृन्दावन की,
यू आर द सन ऑफ़ गोकुल रसिया।

आई एम द ब्यूटीफुल फेयर कलर की,
यू आर द हैंडसम काले साँवरिया।

आई एम गोइंग फॉर पनिया भरन को,
यू आर कमिंग टू मिलन रसिया।

33. मैं तो चंदा जैसी नार, राजा क्यों लाए सौतिनिया

(मुझ जैसी सर्व गुण संपन्न पत्नी के होते हुए तुम सौतन लाने की सोच भी कैसे सकते हो).

मैं तो चंदा जैसी नार, राजा क्यों लाए सौतिनिया।
जो मैं होती अंधी कानी तो लाते सौतिनिया,
मेरे हिरनी जैसे नैन राजा क्यों लाए सौतिनिया।
मैं तो चंदा जैसी ----------
जो मैं होती लँगड़ी लूली तो लाते सौतिनिया,
मेरी हंसनी जैसी चाल राजा क्यों लाए सौतिनिया।
मैं तो चंदा जैसी ----------
जो मैं होती गाँव गँवारन तो लाते सौतिनिया,
मैं तो B.A , M.A पास राजा क्यों लाए सौतिनिया।
मैं तो चंदा जैसी ----------
जो मैं होती बाँझ बँझारन तो लाते सौतिनिया,

मेरे दो दो सुंदर लाल राजा क्यों लाए सौतिनिया।
मैं तो चंदा जैसी ----------

34. मोरी कदर न जानी रे अनाड़ी बलमा

(बलमा इस कदर अनाड़ी हैं कि सजनी फरमाइश कुछ करती है और वह करते कुछ हैं. पान मंगवाया तो पीपल हिला दिया, कत्था लाने को कहा तो कलकत्ता पहुंचा दिया, चूना लाने को कहा तो जूनागढ़ पहुँच गए वगैरह वगैरह).

मोरी कदर न जानी रे अनाड़ी बलमा
हमने कहा था राजा पान ले के आना,
उन्ने पीपलिया हिला दी रे अनाड़ी बलमा, मोरी कदर ---------
हमने कहा था राजा कत्था ले के आना,
उन्ने कलकत्ता पहुँचाय दई रे अनाड़ी बलमा, मोरी कदर ---------
हमने कहा था राजा चूना ले के आना,
उन्ने जूनागढ़ पहुँचाय दई रे अनाड़ी बलमा, मोरी कदर ---------
हमने कहा था राजा छाली ले के आना,
उन्ने गूलरिया हिला दई रे अनाड़ी बलमा, मोरी कदर ---------
हमने कहा था राजा पंखा ले के आना,
उन्ने छप्परिया हिला दई रे अनाड़ी बलमा, मोरी कदर ---------
हमने कहा था राजा मेले ले के जाना,
उन्ने मूड़रिया हिला दई रे अनाड़ी बलमा, मोरी कदर ---------

35.छोटे से हमारे बालमा, गोदी के हमारे बालमा

(जिन सजनी के बालमा छोटे कद के होते हैं उन्हें बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ती है, लेकिन कोई कुछ भी कहे बलम तो अपने ही हैं)

छोटे से हमारे बालमा, गोदी के हमारे बालमा।
चलता मुसाफिर यूँ कहे, गोदी का तुम्हारा क्या लगे,
मारे सरम के मर गई, गोदी से पटक दिये बालमा।
खेतों में पटक दई गागरी, रेती में पटक दिये बालमा,
खेतों में बिखर गई गागरी, रेती में सुबक रहे बालमा।
मारे सरम के मर गई, गोदी में उठा लिए बालमा,
चलता मुसाफिर कुछ भी कहे, गोदी के हमारे बालमा।

36.हय आने दो, हय आने दो परदेसी बलम को

(साजन परदेस गया हो तो सास बहू को बहुत तंग करती है. सजनी इंतज़ार कर रही हैं कि बलम के आने पर गिन गिन के बदले लूंगी)

हय आने दो, हय आने दो परदेसी बलम को,
एक एक की दो दो लगा दूँगी।

आप तो लूँगी रेसम की साड़ी, सइयाँ को सूट सिला दूँगी,
सास मरी को, हय सास मरी को, फटी सी साड़ी,
ऊपर से पैबंद लगा दूँगी, हय आने दो ——-

आप तो खाऊँ लड्डू पेड़े, सइयाँ को रबड़ी खिला दूँगी,
सास मरी को, हय सास मरी को, रूखी सूखी रोटी,
ऊपर से नोन लगा दूँगी, हय आने दो ——-

आप तो पीऊँ सोडा लेमन, सइयाँ को कोक पिला दूँगी,
सास मरी को, हय सास मरी को, तत्ता सा पानी,
ऊपर से मिर्ची मिला दूँगी, हय आने दो ——-

आप रहूँगी कोठी बँगला, सइयाँ को संग बुला लूँगी,
सास मरी को, हय सास मरी को, टूटी झोंपड़िया,
ऊपर से छप्पर छवा दूँगी, हय आने दो ——-

37.दुखड़ा कासे कहूँ मोरी गुइयाँ

(जिनके बालम छोटे हों उनका दुखड़ा वाकई में बड़ा भारी है)

दुखड़ा कासे कहूँ मोरी गुइयाँ
दुखड़ा कासे कहूँ मोरी गुइयाँ, अरे सइयाँ बड़े जलइया।
पाँच बरस की मैं ब्याह को आई,
ढाई, ढाई, अरे ढाई बरस के सइयाँ, दुखड़ा कासे ——-
तेल लगाऊँ, फुलेल लगाऊँ,
थपक थपक मैं सइयाँ को सुलाऊँ, दुखड़ा कासे ——-
थपकत थपकत आँख मोरी लग गई,
अरे सइयाँ को, सइयाँ को लै गई बिलइया, दुखड़ा कासे ——-
आँगन में ढूँढ आई, चौतरे पे देख आई,

नाली में, अरे नाली में करें छपक छइयाँ, दुखड़ा कासे ——-

38.मैं रेशम का तार री ननदिया, मैं सोने का तार री ननदिया

(हर सजनी का सपना होता है कि बलम गोरा चिट्टा होना चाहिए, लेकिन किस्मत में काला लिखा हो तो कोई क्या करे)

मैं रेशम का तार री ननदिया, मैं सोने का तार री ननदिया।
मेरे ससुर के सात हैं बेटे, मैं काले को ब्याही री ननदिया।
दिल्ली शहर में लागी बजरिया, काले को बेचन गई री ननदिया।
मैं रेशम का तार ——
गाजर-मूली सब कोई लेवे, काले को कोई ना लेवे री ननदिया।
वहीं छोड़ मैं घर को चल दी, पीछे से फुदकता आया री ननदिया।
मैं रेशम का तार ——
अट्टे के ऊपर छोटी अटरिया, उसी में बन्द कर आई री ननदिया।
सुबह सवेरे ताला खोला, तो काले से गोरा पाया री ननदिया।
मैं रेशम का तार ——

39.बड़े गज़ब की बात

(लोकगीतों में कुछ बड़े अजीब अजीब तरह के मजाक भी चलते हैं. साजन को आखिर बिल्ली कैसे ले जा सकती है? वैसे यहाँ बिलइया का मतलब सौतन से भी हो सकता है)

बड़े गज़ब की बात,
बलम को लै गई बिलइया रात।

ना थे भूखे, ना थे प्यासे, सोए थे खाकर भात,
बलम को लै गई बिलइया रात।

ना थे छोटे, ना थे मोटे, छह बच्चों के बाप,
बलम को लै गई बिलइया रात।

ना थे इकले, ना थे दुकले, सोई थी लेकर साथ,
बलम को लै गई बिलइया रात।

ना थे भूखे, ना थे प्यासे, सोए थे खाकर भात,
बलम को लै गई बिलइया रात।

40.अटरिया पे चोर बीबी दीवा जलइओ

नंदोई से मजाक करना सलहज का जन्म सिद्ध अधिकार होता है. कोई फूफा कितने भी टेढ़े क्यों न हों, सलहज के सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं)

अटरिया पे चोर बीबी दीवा जलइओ।
मेरा बलम तो लम्बा लम्बा,
यह नाटा नाटा कौन, बीबी दीवा जलइओ, अटरिया पे ——-
मेरा बलम तो गोरा गोरा,
यह काला काला कौन, बीबी दीवा जलइओ, अटरिया पे ——-
मेरा बलम तो दुबला पतला,
यह मोटा मोटा कौन, बीबी दीवा जलइओ, अटरिया पे ——-
मेरे बलम की तो मूँछें नहीं हैं,
यह मूँछों वाला कौन, बीबी दीवा जलइओ, अटरिया पे ——-
मेरे बलम की तो बाँकी चितवन,
यह ऐंचकताना कौन, बीबी दीवा जलइओ, अटरिया पे ——-
मेरे बलम तो गए नौकरी,
नन्दोई जैसा कौन, बीबी सोटा लगइओ, अटरिया पे ——-
(बहुत से हिन्दी भाषी क्षेत्रों मे ननद को बीबी या बीबीजी कहने का रिवाज है)

41.क्या क्या बनाऊँ साग सब्जी बताते जाना

(सारी सब्जियों की शक्ल तो ससुराल के किसी न किसी बन्दे से मिलती है, बेचारी बहूरानी क्या पकाए?)

क्या क्या बनाऊँ साग सब्जी बताते जाना।
कद्दू तो राजा मेरे मैं ना बनाऊँगी, ना ही बनाऊँगी घुँइयाँ,
मोटा सा कद्दू मुझे सुसर लगत है, घुँइयाँ लगे सासुलिया,
बताते जाना।
बैंगन तो राजा मेरे मैं ना बनाऊँगी, ना ही बनाऊँगी भिंडी,
काला सा बैंगन मोहे जेठ लगत है, भिंडी लगे जेठनिया,
बताते जाना।
आलू तो राजा मेरे मैं ना बनाऊँगी, ना ही बनाऊँगी तोरी
गोल बेडौल आलू देवर लगत है, तोरी लगे देवरनिया,
बताते जाना।
चटनी टमाटर की मैं ना बनाऊँगी, ना ही बनाऊँगी मिर्ची,

लाल टमाटर नन्दोई लगत है, मिर्ची लगे नन्दुलिया,
बताते जाना।

42.छोटी मिरच बड़ी तेज सजना, मोहे छोटी न जानो

(मुझे छोटी समझने की गलती मत करना, जैसे छोटी सी हरी मिर्च बहुत चरपरी होती है वैसे ही मैं भी बहुत तेज हूँ)

छोटी मिरच बड़ी तेज सजना, मोहे छोटी न जानो।
जैसे सड़क पर कार चलत है,
ऐसे चलाय दऊँ तोहे सजना, हाँ हाँ तोहे सजना,
मोहे छोटी न जानों।
जैसे गगन में पतंग उड़त है,
ऐसे उडाय दऊँ तोहे सजना, हाँ हाँ तोहे सजना,
मोहे छोटी न जानों।
जैसे हाट में ककरी बिकत है,
ऐसे बेच आऊँ तोहे सजना, हाँ हाँ तोहे सजना,
मोहे छोटी न जानों।

43.वो रतियाँ खेली घनसारी, बलम तोसे हार गई

(प्रेम का खेल भी बड़ा अजीब है, इस में जो हारता है वही वास्तव में जीतता है)

वो रतियाँ खेली घनसारी, बलम तोसे हार गई।
टीका भी हारी राजा, झूमर भी हारी,
हार गई छल्ला निशानी, बलम तोसे हार गई।
माला भी हारी राजा, झुमके भी हारी,
हार गई पायल निशानी, बलम तोसे हार गई।
तगड़ी भी हारी राजा, गुच्छा भी हारी,
हार गई कंगन निशानी, बलम तोसे हार गई।
लहँगा भी हारी राजा, चूनर भी हारी,
हार गई अँगिया निशानी, बलम तोसे हार गई।
छल से भी हारी राजा, बल से भी हारी,
हारी मैंने बारी जवानी, बलम तोसे हार गई।
(घनसारी – बादल के समान काली)

44.ले लो बलम गोदी ले लो, तुम्हारी सजनी डूबी जाय

(लोक मेधा का भी कोई जवाब नहीं है. कैसी कैसी सिचुएशंस पर लोक गीत बनाए हैं. आपसी हंसी मजाक का उत्कृष्ट उदाहरण)

ले लो बलम गोदी ले लो, तुम्हारी सजनी डूबी जाय
जब नदिया पैरों तक आई, ले लो बलम गोदी ले लो,
हमारी पायल भीजी जाय, नदिया गहरी ——-
जब नदिया घुटनों तक आई, ले लो बलम गोदी ले लो,
हमारा लहँगा भीजा जाय, नदिया गहरी ——-
जब नदिया मेरी कमर पे आई, ले लो बलम गोदी ले लो,
हमारी चुनरी भीजी जाय, नदिया गहरी ——-
जब नदिया गरदन तक आई, ले लो बलम गोदी ले लो,
हमारा नेकलेस भीजा जाय, नदिया गहरी ——-
जब नदिया मेरे सिर तक आई, ले लो बलम गोदी ले लो,
तुम्हारी सजनी डूबी जाय, नदिया गहरी ——-

45.काहे को देओ पिया गारी रे, पिया गारी रे, जरा धीरे पुकारो

(संयुक्त परिवार की अपनी बंदिशें होती हैं, बेचारी सजनी को उन्हें भी निभाना है. लेकिन बलमा को इन बातों से कोई मतलब नहीं है, उन्हें तो सजनी का साथ चाहिए)

काहे को देओ पिया गारी रे, पिया गारी रे, जरा धीरे पुकारो।
सास भी जागै ननदिया भी जागै ,
कैसे आऊँ चितसारी रे, चितसारी रे, जरा धीरे पुकारो।

माँ भी सो गई बहनिया भी सो गई ,
छमछम आओ चितसारी, रे चितसारी, जरा धीरे पुकारो।

उँगली पकड़कर पहुँचा जो पकड़ा,
फट गई रेशम सारी रे, हाँ हाँ सारी रे, जरा धीरे पुकारो।

एक के बदले दो दो दिला दूँ, एक के बदले साड़ी दो दो दिला दूँ,
कंठ से लग जाओ प्यारी, रे जरा प्यारी रे, जरा धीरे पुकारो।
(चितसारी = चित्रशाला का अपभ्रंश, अटारी जिसकी दीवारों पर चित्र बने या लगे हों।)

46.जीजी से कर के बहाना, जीजाजी मेरे कमरे में आना

(जीजा और साली का रिश्ता भी मजाक का होता है. कभी कभी मजाक ज्यादा बोल्ड भी हो जाता है, लेकिन लोक गीतों में इतना तो चलता है)

जीजी से कर के बहाना, जीजाजी मेरे कमरे में आना।
मेरे कमरे की, खिड़की खुली है, चुपके से चले आना,
जीजाजी मेरे ———
सोने की थाली में, छै रस व्यंजन, खा के खिला के चले जाना,
जीजाजी मेरे ———
आले का लोटा, हिमाले का पानी, पी के पिला के चले जाना,
जीजाजी मेरे ———
मघई पान का, बीड़ा लगाया, चब के चबा के चले जाना,
जीजाजी मेरे ———
दीपक की जोत में, चौपड़ बिछाई, जीत हार कर जाना,
जीजाजी मेरे ———
लाल पलंग पर धौरी चद्दर, सो के सुला के चले जाना,
जीजाजी मेरे ———

47.ससुर घर मन ना लगे मोरी गुइयाँ

(ससुराल में मन न लगे तो तो अल्हड़ बहू क्या क्या कर सकती है, उसकी एक बानगी)

ससुर घर मन ना लगे मोरी गुइयाँ।
सो मोरी गुइयाँ, सुसरे की बड़ी-बड़ी मूंछें
मैं कैंची से काट आई हो मोरी गुइयाँ ॥ ससुर घर ———-

सो मोरी गुइयाँ, सासुल का रेशम का बटुआ
मैं चूल्हे में झोंक आई, हो मोरी गुइयाँ ॥ ससुर घर ———-

सो मोरी गुइयाँ, जेठा की बड़ी-बड़ी बहियाँ
मैं स्याही बखेर आई, हो मोरी गुइयाँ ॥ ससुर घर ———-

सो मोरी गुइयाँ, जिठनी की पचरंग चुनरी
मैं कूएँ में डाल आई, हो मोरी गुइयाँ ॥ ससुर घर ———-

सो मोरी गुइयाँ, देवर की बड़ी-बड़ी फुटबलिया
मैं हवा निकाल आई, हो मोरी गुइयाँ ॥ ससुर घर ———-

सो मोरी गुइयाँ, ननदी की छोटी-छोटी गुड़ियाँ

पड़ोसी के फैक आई हो मोरी गुइयाँ ॥ ससुर घर ———-

48.चुनर हमने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा

(कभी कभी लोक गीतों में बेतुके मजाक भी होते हैं, लेकिन साथ मिल बैठ कर इन में भी बड़ा रस आता है)

चुनर हमने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा।
ससुर सुनेगा हम्नरा क्या रे करेगा,
सास हमने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा।
ससुर सुनेगा, अपना करम ठोकेगा,
तुझमें बजाएगा डंडा,
सास तूने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा ॥ चुनर हमने —-
जेठ सुनेगा हम्नरा क्या रे करेगा,
जिठानी हमने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा।
जेठ सुनेगा, अपना सिर कूटेगा,
तुझमें बजाएगा डंडा,
जिठानी तूने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा ॥ चुनर हमने —-
राजा सुनेंगे हम्नरा क्या रे करेंगे,
ननद हमने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा ॥ चुनर हमने —-
राजा सुनेंगे, दूजा ब्याह करेंगे,
तुझे पठा देंगे पीहर,
ननद तूने दे डाली रे, जब माँगन को आया फकीरा ॥ चुनर हमने —-

49.मैं उल्टा पुल्टा कर आई नींद के मारे

(हास्य की विशेषता होती है कि वह विकृति से उत्पन्न होता है. सखियों के बीच में गाया जाने वाला हास्यपूर्ण गीत)

मैं उल्टा पुल्टा कर आई नींद के मारे।
हमरे बलम जी ने कंघा माँगा,
मैं शीशा पकड़ा आई नींद के मारे ॥ मैं उल्टा पुल्टा —-
हमरे बलम जी ने कुरता माँगा,
मैं लहँगा पकड़ा आई नींद के मारे ॥ मैं उल्टा पुल्टा —-
हमरे बलम जी ने टोपी माँगी,
मैं चोली पकड़ा आई नींद के मारे ॥ मैं उल्टा पुल्टा —-
हमरे बलम जी ने ललना माँगा,

मैं गुड़िया पकड़ा आई नींद के मारे ॥ मैं उल्टा पुल्टा —-

50.जो मन में आए सोई ले ले ननदिया

(ननदी को कुछ देने में भौजाई का मन किस कदर कसकता है, लेकिन ननदी भी एक ही ढीठ है, ले कर ही मानेगी)

जो मन में आए सोई ले ले ननदिया
तेरा जिया चाहे सोई ले ले ननदिया—2
बरतन नहीं दूँगी मेरे चौके का सिंगार हैं
बरतन में से चम्मच दूँगी —-2, डंडी लूँगी तोड़ ननदिया ॥
तेरा——
कपड़े नहीं दूँगी मेरे बक्सों का सिंगार हैं
कपडों में से अँगिया दूँगी—- 2, बंद लूँगी तोड़ ननदिया ॥
तेरा ——
गहने नहीं दूँगी मेरे तन का सिंगार हैं
गहनों में से आरसी दूँगी — 2, छल्ला लूँगी तोड़ ननदिया ॥
तेरा –

51.मेरा नौं डांडी का बीजना, मेरे ससुर ने दिया गड़वाय

(ससुर, जेठ और देवर लाड़ करें यह तो हमारा हक है, लेकिन काम वाम को न कहो, उसमें बड़ी मुसीबतें हैं)

मेरा नौं डांडी का बीजना, मेरे ससुर ने दिया गड़वाय,
झनाझन बाजे बीजना जी मेरा नौं डांडी का बीजना
मेरी सास कहे बहू पीस ले,
मेरे राजा जी हिलावे हाथ, छाले पड़ जाए हाथ में
अरे छाले पड़ जाए हाथ में
मेरा नौ डांडी का बीजना, मेरे जेठा जी ने दिया गड़वाय
झनाझन बाजे बीजना
मेरी जिठानी कहे बहू छान ले,
मेरे राजा जी हिलावे हाथ, काली पड़ जाए धूप में
अरे काली पड़ जाए धूप में
मेरा नो डांडी का बीजना मेरे देवर ने दिया गढ़वाय झनाझन बाजे बीजना
मेरी देवरानी कहे दीदी गूँध ले,
मेरे राजा जी हिलावे हाथ उंगली मुड़ जाए चून में

अरे उंगली मुड़ जाय चून में
झनाझन बाजे बीजना मेरा नौं डांडी का बीजना
(नौं डांडी का बीजना" का अर्थ नौ रंग-बिरंगी डंडियों को जोड़कर बना एक सुंदर हाथ का पंखा)

52. हाय लग न जाए नज़रिया हमको

(ससुर, जेठ और देवर सब नई बहू के लाड़ में लगे हैं, और उन्हें इस बात की फ़िक्र है कि कहीं उन्हें नजर न लग जाए)

हय लग न जाए नजरिया हमको।
हमरे ससुर ने गहने गढ़वाए,
हय सब से भारी तगरिया हमको॥
हय लग न जाए —
हमरे जेठ ने कपड़े बनवाए,
हय फूलन वारी चुनरिया हमको॥
हय लग न जाए —
हमरे देवर ने महल बनवाए,
हय खिड़की वारी अटरिया हमको॥
हय लग न जाए —
हमरे बलम ने सेज सजाई,
हय रेसम वारी चदरिया हमको॥
हय लग न जाए —

53. तगरी सोने की

(एक समय था जब सोने तगड़ी हर स्त्री का सपना होती थी. बहुत कहने सुनने पर पिया जी बनवा दी तो अब पहन के घबरा रही हैं और वैद्य को दिखाने को कह रही हैं)

तगरी सोने की, हय हय तगरी सोने की
दइयो बनवाय, तगरी सोने की।
मैं तो गई हाथरस मंडी, मैंने एक जनी पे देखी,
मेरो वाई दिन से, हय वाई दिन से
जिया ललचाय, तगरी सोने की।
पिया दिल्ली शहर को जइयो, अच्छो सो सोनो लइयो,
अरे मेरठ में, अजी मेरठ में
दइयो गढ़वाय, तगरी सोने की।

मैं तो तगरी पहन भई ठारी, मेरे दुनिया परी अगारी,
मेरो वाई दिन से, हय वाई दिन से
जिया घबराय, तगरी सोने की।
पिया शहर आगरे जइयो, वहाँ से स्यानों वैदा लइयो,
मेरी दइयो जी, एजी दइयो जी
नबज़ दिखवाय, तगरी सोने की।

54. उढ़वाय देओ चुनरिया

(महंगी चुनरी ओढ़ने का स्त्रियों को कितना शौक होता है यह तो सभी जानते हैं. चुनरी ओढ़ी तो नजर लग गई, फिर वैद बुलाए गए. लेकिन जाने कहाँ से ननदी इस किस्से में फिट कर ली गईं. उन से पीछा छुडाने का जुगाड़ भी ढूँढ़ लिया)

उढ़वाय देओ चुनरिया हाय रे पिया,
तेरा दिल तो हजरिया, हाय रे पिया।

चुनरी ओढ़ मैं अंगना में ठाड़ी,
मोहे लग गई नजरिया, हाय रे पिया।

दिल्ली शहर से वैदा बुलवाओ,
दिखवाय देओ नबजिया, हाय रे पिया।

वैदा को लड़का बड़ो रंगीलो,
उन्ने माँगी ननदिया, हाय रे पिया।

सइयाँ हमारे बड़े भोले भाले,
विन्ने दै दई ननदिया, हाय रे पिया।

देवर हमारे बड़े नटखटिया,
विन्ने छीन लइ ननदिया, हाय रे पिया।

55. लटकनिया हमारी गली में गिरी

(कानों की लटकन कहीं गिर जाए तो बेचारे नौकर चाकरों या जनम की बैरन सास ननद पर चोरी का इल्जाम लगाया जाता है. खैर राजा जी को गली में मिल गई तो सब इल्जाम से बच गईं)

लटकनिया हमारी गली में गिरी।
मैने तो जानी बागन में गिरी,

वो तो मालिन बिचारी को चोरी लगी ॥
लटकनिया हमारी —-
मैने तो जानी तालन पे गिरी,
वो तो धोबिन बिचारी को चोरी लगी ॥
लटकनिया हमारी —-
मैने तो जानी कुअटन पे गिरी,
वो तो धीमरी बिचारी को चोरी लगी ॥
लटकनिया हमारी —-
मैने तो जानी महलन में गिरी,
वो तो ननदी बिचारी को चोरी लगी ॥
लटकनिया हमारी —-
मैने तो जानी सेजन पे गिरी,
वो तो राजा जी बोले गली में मिली ॥
लटकनिया हमारी —-

56. ननदिया चली गयी सुनो पिया लड़ के

(ननदी भी क्या अजीब चीज है, इसको कितना भी दे दो इसका पेट ही नहीं भरता)

ननदिया चली गयी सुनो पिया लड़ के

जिठानी को सौ रुपये सासुल को दो सौ
ननदिया को दिए पिया छह सौ रुपये गिन के
ननदिया चली गईं सुनो पिया लड़ के

सासुल को कंगन दिए जिठानी को झाले
ननदिया को दिया पिया हार हीरे जड़ के
ननदिया चली गईं सुनो पिया लड़ के

जिठानी को सूट दिया सासुल को साड़ी
ननदिया को दिया पिया लहंगा मोती जड़ के
ननदिया चली गईं सुनो पिया लड़ के

57. काला री बालम मेरा काला

(एक तो बलम जी काले हैं इस बात का गम है, ऊपर से उनकी करतूतें भी ऐसी हैं कि क्या कहा जाए)

काला री बालम मेरा काला ।
जेठ गए दिल्ली ससुर बम्बई,
काला गया री कलकत्ता नगरिया ,
काला री बालम मेरा काला ।

जेठ लाए लड्डू ,ससुर लाए बर्फ़ी,
काला लाया री काली गाजर का हलुआ,
काला री बालम मेरा काला ।

जेठ लाए साड़ी ,ससुर लाए लहँगा,
काला लाया री ,काली साटन की अँगिया,
काला री बालम मेरा काला ।

जेठ लाए गुड्डा ,ससुर लाए गुड़िया
काला लाया री ,काली कुतिया का पिल्ला ,
काला री बालम मेरा काला ।

58. कजरा बिकन को आया रे, कजरा ले लो कजरा

(सास को फैशन करने का शौक तो बहुत है लेकिन सलीका बिलकुल नहीं है. इतना सारा काजल ले लिया है कि मटके में रखना पड़ रहा है. सलाई की जगह मूसल से आँख में डाल रही हैं और खुद शीशा देखने की बजाए बुढ़ऊ को दिखा रही हैं)

कजरा बिकन को आया रे, कजरा ले लो कजरा।
द्योरानी जेठानी ने धेले का लीना,
सासुल ने रुपया निकाला रे, कजरा ले लो कजरा।

द्योरानी जेठानी ने डिबिया में रक्खा,
सासुल ने मटका सँभाला रे, कजरा ले लो कजरा।

द्योरानी जेठानी ने सलाई से साला,
सासुल ने मूसल सँभाला रे, कजरा ले लो कजरा।

द्योरानी जेठानी ने शीशे में देखा,
सासुल ने ससुरा बुलाया रे, कजरा ले लो कजरा।

59. अटरिया से उतरे जी हमरे साँवरिया

(सजनी बड़ी होशियार हैं, सांवरिया कुछ भी कह गए हों, वे तो सब को यही बताएंगी कि उन्हें काम करने को मना कर गए हैं)

अटरिया से उतरे जी हमरे साँवरिया,
वो चुपके चुपके बोल गए हमरे साँवरिया।

सास मुझसे पूछे, ननद मुझसे पूछे,
तुम्हें क्या कह गए तुम्हरे साँवरिया।
पीसन को मना कर गए, पोवन को मना कर गए,
खाने को हमसे कह गए, हमरे साँवरिया, अटरिया से ———-

जिठानी मुझसे पूछे द्योरानी मुझसे पूछे,
तुम्हें क्या कह गए तुम्हरे साँवरिया।
चौके को मना कर गए, बरतन को मना कर गए,
बैठन को हमसे कह गए, हमरे साँवरिया, अटरिया से ———-

अड़ोसन मुझसे पूछे पड़ोसन मुझसे पूछे,
तुम्हें क्या कह गए तुम्हरे साँवरिया।
झाड़ू को मना कर गए, पोंछे को मना कर गए,
सोने को हमसे कह गए, हमरे साँवरिया, अटरिया से ———-

60. हुई कैसी तबाही राम कैसे बताऊँ

(नई नवेली सजनी के बलम किस कदर लाड़ कर रहे हैं. लेकिन जब उन्हें इस लाड़ का वांछित प्रतिफल नहीं मिलता तो एकदम नाराज भी हो जाते हैं)

हुई कैसी तबाही राम कैसे बताऊँ
पहली बार मैं सास के आई, मुझे अट्टे पे सुलाया राम कैसे बताऊँ
अट्टे पे सुलाया मुझे अट्टे पे सुलाया, मुझे भूख लग आई राम कैसे बताऊँ
भूख लग आई मुझे भूख लग आई, वो तो बर्फी ले के दौड़े राम कैसे बताऊँ
बर्फी ले के दौड़े वो तो बर्फी ले के दौड़े, मैंने एक टुकड़ा खाया राम कैसे बताऊँ
एक टुकड़ा खाया मैंने एक टुकड़ा खाया, मुझे प्यास लग आई राम कैसे बताऊँ
प्यास लग आई मुझे प्यास लग आई, वो तो शरबत ले के दौड़े राम कैसे बताऊँ
शरबत ले के दौड़े वो तो शरबत ले के दौड़े, मैंने एक घूँट पिया राम कैसे बताऊँ
एक घूँट पिया मैंने एक घूँट पिया, मुझे ठंड लग आई राम कैसे बताऊँ
ठंड लग आई मुझे ठंड लग आई, वो तो कंबल ले के दौड़े राम कैसे बताऊँ
कंबल ले के दौड़े वो तो कंबल ले के दौड़े, मैंने एक कोना ओढ़ा राम कैसे बताऊँ

एक कोना ओढ़ा मैंने एक कोना ओढ़ा, मुझे गर्मी लग आई राम कैसे बताऊँ
गर्मी लग आई मुझे गर्मी लग आई, वो तो पंखा ले के दौड़े राम कैसे बताऊँ
पंखा ले के दौड़े वो तो पंखा ले के दौड़े, मुझे नींद लग आई राम कैसे बताऊँ
नींद लग आई मुझे नींद लग आई, वो तो डंडा ले के दौड़े राम कैसे बताऊँ
डंडा ले के दौड़े वो तो डंडा ले के दौड़े, मैं ज़ोरों से चिल्लाई राम कैसे बताऊँ
ज़ोरों से चिल्लाई मैं तो ज़ोरों से चिल्लाई, मुझे सास बचाने आई राम कैसे बताऊँ
हुई कैसी तबाही राम कैसे बताऊँ।

61. कदर मोरी ना जानी, ओ राजा जानी

(बेचारी पत्नी अपने पति को खुश करने के लिए सब कुछ करने को तैयार है, लेकिन पति है कि उस की कदर ही नहीं जानता)

कदर मोरी ना जानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे खाने का शौक है, आ जा रसोई के बीच,
करूँ तेरी मेजबानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे पीने का शौक है, आय जा जमुना के तीर,
पिलाऊँ तुझे ठंडा पानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे चौपड़ का शौक है, आ जा हवेली के बीच,
खिलाऊँ तुझे दिलजानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे पढ़ने का शौक है, आ जा तू आँगन के बीच,
करा दूँ तुझे याद नानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे कुश्ती का शौक है, आ जा अखाड़े के बीच,
दिखाऊँ तुझे पहलवानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे लड़ने का शौक है, आ जा कचहरी के बीच,
कराऊँ तुझे काला पानी, ओ राजा जानी।
जो राजा तुझे तलब लगी है, आ जा अटरिया के बीच,
कराऊँ तुझे मनमानी, ओ राजा जानी।

62. लै चल मेले में भरतार, पड़ूँ मैं तोरे पइयाँ

(एक समय था जब मनोरंजन के साधन आम लोगों को उपलब्ध नहीं थे. तब महिलाओं और बच्चों को मेले में जाने का बहुत आकर्षण हुआ करता था. पति लोग इस बात से परेशान रहते थे कि मेले में खर्च करने के लिए पैसे कहाँ से लाएँ)

लै चल मेले में भरतार, पड़ूँ मैं तोरे पइयाँ

पड़ूँ मैं तोरे पइयाँ, और करूँ निहोरे सइयाँ,
लै चल मेले में भरतार, पड़ूँ मैं तोरे पइयाँ

मैं ठाड़ी हुकम चलाऊँ, तेरे घर की नार कहाऊँ,
मैंने कर लियो साज सिंगार, अब देर करो मत सइयाँ,

मेरी गाँठ न फूटो धेला, बिन पैसन कैसो मेला,
का पे माँगन जाऊँ उधार, हठ छोड़ दे मोरी गुइयाँ।

तेरी गरज पड़े तो अइयो, चल छोड़ दै मेरी बहियाँ।
तुम्हें छोड़ के पीहर जाऊँ, फिर लौट कभी ना आऊँ,

क्यों रूठ गई मेरी प्यारी, कर मेले की तैयारी,
तोपे तन मन दऊँ निसार, मैं लै लऊँ तेरी बलइयाँ।

63. मोरा सैयाँ अभागा न जागा

(नकबेसर - नाक में पहने जाने वाला आभूषण जोकि सामान्य नथ से थोड़ा बड़ा और जड़ाऊ होता है. गीत में पत्नी की आकांक्षाओं को न समझ पाने वाले लापरवाह पति का अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन है)

मोरा सैयाँ अभागा न जागा
नकबेसर कागा ले भागा, हाय सैंयां अभागा ना जागा,

उड़-उड़ कागा मोरी बिन्दिया पे बैठा
अरे मोरे माथे का सब रस ले भागा,
नकबेसर कागा ले भागा, अरे मोरा सैंयाँ अभागा ना जागा,

उड़-उड़ कागा मोरी नथुनी पे बैठा
मोरे होंठ्वा का सब रस ले भागा,
नकबेसर कागा ले भागा, जुल्मी सैंयाँ अभागा ना जागा,

उड़-उड़ कागा मोरे करधन पे बैठा
पापी जोबना का सब रस ले भागा मोरा
अरे नकबेसर कागा ले भागा, मोरा सैंयां अभागा ना जागा

64. चूनर जयपुर की पचरंगी, मोकू लाय दे लांगुरिया

(लांगुरिया को देवी का प्रमुख सेवक और द्वारपाल माना जाता है. लोकगीतों में उसे एक चंचल और रसिक युवक के रूप में चित्रित किया जाता है. देवी माँ तक अपनी बात पहुँचाने के लिए लोग लांगुरिया को संबोधित करते हैं)

चूनर जयपुर की पचरंगी, मोकू लाय दे लांगुरिया,
ला दे लांगुरिया, कै मोकू लाय दे लांगुरिया,
चूनर जयपुर की पचरंगी ....

चारो कोने चार रंग के, बीच लहरिया होय,
कभी न फीकी पड़े, धुबनिया चाहे जितनी धोय,
चूनर जयपुर की पचरंगी....

ऐसी चूनर होय के जामें, चंदा तारे चमकें,
हीरा पन्ना जड़ी किनारी, मोती दम दम दमकें,
चूनर जयपुर की पचरंगी....

चूनर ओढ़ चलूँ तेरे संग में, मैया के दरबार,
मैं नाचूँ और तोय नचाऊँ, छमछम सौ सौ बार,
चूनर जयपुर की पचरंगी....

65. अँगना में राजा कुआँ खुदवइयो

(प्रेम भरे वार्तालाप के कई आयाम होते हैं जिन में कल्पना की नई नई उड़ान देखने को मिलती है. इस लोक साहित्य की रस से परिपूर्णता किसी भी उच्च साहित्य से कम नहीं है)

अँगना में राजा, कुआँ खुदवइयो

ऐसो कुआँ खुदवइयो मोरे राजा, जिसके हों राजा, ऊँचे नीचे पाट
एक लंग राजा हम पनिया भरत हों, दूजी लंग राजा तुम, मल मल न्हाओ

ऐसी बगिया लगवइयो मोरे राजा, जिसमें हों राजा, अमवा अनार
एक लंग बोलें राजा मोर पपीहरा, दूजी लंग राजा, कोयलिया कुकाय

ऐसी मेहँदी मँगाओ मोरे राजा, छुअत हथेली, चुए रंग लाल
एक लंग काढ़ूँ राजा लहर लहरिया, दूजी लंग राजा, नाम तुम्हार

ऐसी चुड़ियाँ मँगाओ मोरे राजा, जिनपे हो राजा, अजब बहार
एक लंग दीखें राजा रंग बिरंगी, दूजी लंग राजा, झलक तुम्हार

ऐसी चूनर मँगाओ मोरे राजा, जिसके होंए राजा, झिलमिल तार
एक लंग राजा तोसे नैना मिलत हों, दूजी लंग राजा छुपे मुखड़ा हमार

66. कोऊ दिन उठ गयो मेरा हाथ

(लोक साहित्य में हास्य रस का चरम उत्कर्ष. साथ ही प्रेम की मिठास का यह भी एक आयाम है)

कोऊ दिन उठ गयो मेरा हाथ, बलम तोहे ऐसा मारूंगी,
ऐसा मारूंगी बलम तोहे ऐसा मारूंगी,

चिमटा मारूं बेलन मारूं फुंकनी मारूंगी,
जो बालम तेरी मैया बचावै, वाकी चुटिया उखाड़ूंगी,

थाली मारूं कटोरी मारूं चमचा मारूंगी,
जो बालम तेरी बहना बचावै, वाकी चुनरी फाड़ूंगी,

लाठी मारूं डंडा मारूं झाड़ू मारूंगी,
जो बालम तेरो भैया बचावै, वाकी मूंछे उखाड़ूंगी

कोऊ दिन उठ गयो मेरा हाथ,
बलम तोहे ऐसा मारूंगी

<u>इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है -</u>
किसी दिन उठ गया जो मेरा हाथ, बलम ऐसा मारूंगी
कभी देखा जो सौतन के साथ बलम ऐसा मारूंगी

अब तक देखी प्रेम नजरिया, अब गुस्सा भी देख सांवरिया
मैं तो गिरूंगी बनके बिजुरिया,
जरा होने तो दे बरसात, बलम ऐसा मारूंगी

देर से आना जल्दी जाना, रोज बनाना एक बहाना
कल देखूंगी आज तो माना,
कल भी हुई जो यही बात बलम ऐसा मारूंगी

67. मैं अलबेली गुदाय आई गुदना

(अपने पतियों की अनुपस्थिति में स्त्रियाँ उन की खूब मजाक उड़ाती हैं, लेकिन इस में भी उनका प्यार छिपा होता है)

मैं अलबेली गुदाय आई गुदना
मैं जो गई पानी भरने संग गए सजना,
टूट गयी रस्सी लटक गये सजना
मैं अलबेली...
मैं जो गई रोटी करने संग गए सजना,
फूल गई रोटी पिचक गए सजना
मैं अलबेली...
मैं जो गई चोटी करने संग आये सजना,
टूट गई कंघी चटक गए सजना
मैं अलबेली...

68. सास तो दुबली हो गई, बहुओं के आने से

(बहुएँ इकट्ठी होती हैं तो साँसों की खूब खबर लेती हैं. लोक गीतों की एक विशेषता यह भी है कि हँसी मजाक में जो चाहे कह दिया जाए, कोई बुरा नहीं मानता)

सास तो दुबली हो गई, बहुओं के आने से।
सास तूने क्या खाया था, जेठा के होने में,
बहू री मैंने गन्ने खाये, लाला के होने में,
तभी तो वो लंबे हो गए, गन्नों के खाने से ॥
सास तो दुबली —
सास तूने क्या खाया था, दिवरा के होने में,
बहू री मैंने जामुन खाये, लाला के होने में,
तभी तो वो काले हो गए, जामुन के खाने से ॥
सास तो दुबली —-
सास तूने क्या खाया था, ननदी के होने में,
बहू री मैंने मिर्चें खाईं, लाली के होने में,
तभी तो वो ततैया हो गई, मिरची के खाने से ॥
सास तो दुबली —-
सास तूने क्या खाया था, राजा के होने में,
बहू री मैंने गोले खाये, लाला के होने में,
तभी तो वो भोले हो गए, गोलों के खाने से ॥
सास तो दुबली –

69. बुरा हाल है राजा जी का, जिनकी दो दो घर वाली

(जिनकी दो पत्नियाँ होती हैं उनका हाल वाकई बुरा होता है)

बुरा हाल है राजा जी का, जिनकी दो दो घर वाली।

खेतों में से राजा आए, बुला रही ऊपर वाली,
सीढ़ी लगा के लागे चढ़ने, खींच रही नीचे वाली।
वो क्या तुमरी लगे लुगाई, मैं क्या लागूँ महतारी,
ऊपर देखें नीचे देखें, भैकलयाए राजा जी,
बुरा हाल है ——-
(इसी प्रकार बागों से, तालों से, हाट से)
(भैकलयाए – घबराए हुए, जिसकी समझ में कुछ न आ रहा हो)
इसी थीम पर एक और लोकगीत है

70. वो क्या करें जिनकी दो दो नारी

(दो पत्नियां हों तो घूमने और मौज करने के लिए दोनों तैयार रहती हैं, लेकिन काम करने के लिए दूसरी को आगे कर देती हैं)

वो क्या करें जिनकी दो दो नारी।
बड़की कहे हम जयपुर को जाएँगे, छुटकी करे दिल्ली की तैयारी।
वो क्या करें जिनकी दो दो नारी
बड़की कहे हम मेले को जाएँगे, छुटकी करे पीहर की तैयारी।
वो क्या करें जिनकी दो दो नारी
बड़की कहे रोटी छुटकी बनावे, छुटकी कहे आज बड़की की बारी।
वो क्या करें जिनकी दो दो नारी
बड़की कहे मोरे सइयाँ छबीले, छुटकी कहे मोरे सइयाँ अनाड़ी।
वो क्या करें जिनकी दो दो नारी

71. तीन तिरियों के बीच, फँस गए लाला जी

(दो तक तो बात फिर भी ठीक थी, जिन की तीन पत्नियां हों उन का हाल तो और भी बुरा है)

तीन तिरियों के बीच, फँस गए लाला जी।
बड़ी कहे मैं लड्डू खाऊँ, बिचली कहे मैं पेड़ा खाऊँ,
सुन लो छोटी के बोल, समोसा खाऊँगी,
तीन तिरियों के ——
बड़ी कहे मैं शरबत पीऊँ, बिचली कहे मैं लेमन पीऊँ,
सुन लो छोटी के बोल, मैं बीअर पीऊँगी,

तीन तिरियों के ——
बड़ी कहे मैं लहँगा पहरूँ, बिचली कहे मैं साड़ी पहरूँ,
सुन लो छोटी के बोल, मैं गाउन पहरूँगी,
तीन तिरियों के ——
बड़ी कहे मैं मेला जाऊँ, बिचली कहे मैं सर्कस जाऊँ,
सुन लो छोटी के बोल, मैं सिनमा जाऊँगी,
तीन तिरियों के ——
बड़ी कहे मैं गंगा न्हाऊँ, बिचली कहे मैं जमुना न्हाऊँ,
सुन लो छोटी के बोल, त्रिवेणी न्हाऊँगी,
तीन तिरियों के ——
बड़ी कहे मैं खटिया सोऊँ, बिचली कहे मैं पलका सोऊँ,
सुन लो छोटी के बोल, सजन संग सोऊँगी,
तीन तिरियों के ——

72. करेजा पे लाग रही, मेरो जिया जाने

(पति परदेस जाते हैं तो मन बड़ा कसकता है. चिट्ठी भेजते हैं, उपहार भेजते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है, लेकिन अगर वह सौतन ले आए तब तो कलेजे पर छुरी चल जाती है)

करेजा पे लाग रही, मेरो जिया जाने।

सो मोरी सखी, राजा गए बंबई को,
झरोखों से झाँक रही मेरो जिया जाने।

सो मोरी सखी, राजा ने भेजी एक पाती,
मैं खड़ी खड़ी बाँच रही मेरो जिया जाने।

सो मोरी सखी, राजा ने भेजी एक साड़ी,
मैं दुलहन सी लाग रही मेरो जिया जाने।

सो मोरी सखी, राजा ले आए सौतिनिया,
मैं जल भुन के राख़ भई, मेरो जिया जाने।

सो मोरी सखी, सौतन ने जायो एक लल्ला,
मैं कूँआ में फेंक आई, मेरो जिया जाने।

73. ए धना चली अइयो अटरिया

(धना - पत्नी के लिए संबोधन, अटारी, अटरिया - अट्टालिका का अपभ्रंश है, आम तौर पर छत पर बने कमरे के लिए प्रयोग किया जाता है, पलका - पलंग, धौरी - धवल, सफ़ेद) (पति अटरिया पर बुला रहा है लेकिन नई नवेली पत्नी को सामाजिक मर्यादाओं का भी तो ध्यान रखना है)

ए धना चली अइयो अटरिया,

काहे के डंडा, काहे की सीढ़ी, सोने के डंडा, चांदी की सीढ़ी,
काहे को पलका, काहे के तकिए, चन्दन को पलका, रेशम के तकिया,
काहे की पिया धौरी रजइया, मखमल की धना धौरी रजइया,
ए धना ——
दूध को बेला लै पान को बीड़ा, कैसे आऊँ पिया तोरी अटरिया।
हाय सटासट चढ़ियो अटरिया,
ए धना ——
सास भी जागे, ननद भी जागे, डर लागे कैसे आऊँ अटरिया।
घुँघटा कर चली अइयो अटरिया,
ए धना ——

74. फूल की थाली में जेवना लेकर आई

(फूल - एक मिश्रधातु जिसमें चार भाग सीसा अर्थात लैड और एक भाग टिन होता है, जेवना - खाद्य पदार्थ)(एक समय था जब पति पत्नी का प्रथम परिचय मधु यामिनी में ही होता था. उन्हीं भावनाओं को रेखांकित करता एक हास्यपूर्ण लोकगीत)

फूल की थाली में, जेवना लेकर आई।
दूध लाई बेले में, बूरे की बुरक लगाई।

पहले तो तुझे देखूँगा, गोरी है या काली।
मेरा तो क्या देखोगे, चन्दा सी उजियारी,
दूध लाई ——-
पहले तो तुझे नापूँगा, लम्बी है या छोटी।
मेरा तो क्या नापोगे, तुम्हरे जोड़ की आई,
दूध लाई ——-
अभी तो तुझे देखूँगा, पतली है या मोटी।
मेरा तो क्या देखोगे, साँचे की गढ़ी गढ़ाई,
दूध लाई ——-
अभी तो तुझे देखूँगा, कैसी सजी सजाई।
मेरा तो क्या देखोगे, तुम से माँग भराई,

दूध लाई ——-

75.सावन झिर लागी, ओ धीरे- धीरे

(पति पत्नी का प्रारम्भिक दिनों का प्रेम, लम्बे गृहथ जीवन की आधारशिला होता है. जहाँ सौत रूपी काँटा साथ में हो वहाँ तो पति के हृदय में स्थान बनाने के लिए और ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है)

सावन झिर लागी, ओ धीरे- धीरे।
ओ राजा मोरे, मैं खड़ी खिरकिन में,
नजर मोहे लागी ओ धीरे- धीरे,
सावन झिर लागी – – –

ओ राजा मोरे मैं गई बगियन में
चुनर मोरी भीगे ओ धीरे- धीरे,
सावन झिर लागी – – –

ओ राजा मोरे खोलो न किवरिया,
डर मोहे लागे ओ धीरे- धीरे,
सावन झिर लागी – – –

ओ राजा मोरे मैं गई सेजियन पै,
सौत मौरी तरसे ओ धीरे- धीरे,
सावन झिर लागी – – –

76. तुम खाय लेओ कुमर कलेऊ

(नए नवेले दामाद जी की ससुराल में खातिरदारी का वर्णन)

तुम खाय लेओ कुमर कलेऊ, लला मत सरमाओ।
पूड़ी लेओ कचौड़ी ले लेओ, ले लेओ लड्डू पेड़ा,
रबड़ी लेओ जलेबी ले लेओ, ले लेओ बालूसाई,
लला मत सरमाओ।
साग अचार रायता ले लेओ, ले लेओ सौंठ पड़ाके,
कचरी पापड़ मठरी ले लेओ, ले लेओ मोठ मँगौरी,
लला मत सरमाओ।
खाँड बताशे मिशरी ले लेओ, ले लेओ दूध मलाई,
आम अनार अंगूर ऊ ले लेओ, ले लेओ बेर नरंगी,

लला मत सरमाओ।
चाय कौफ़ी एस्प्रेसो ले लेओ, आइसक्रीम और कुल्फी,
सौंफ सुपारी ईलाइची ले लेओ, ले लेओ पान के बीड़ा,
लला मत सरमाओ।

77. किसने किया रे पानी में बिछौना

(लोक गीतों में हास्यरस की पराकाष्ठा देखने को मिलती है. लोकगीतों के बहाने ससुराल पक्ष के लोगों का कितना भी मजाक उड़ाया जा सकता है, लेकिन चालाक गृहिणी पति को मक्खन लगाना भी नहीं भूलती)

किसने किया रे पानी में बिछौना
हमने किया रे पानी में बिछौना
ससुर हमारे, चौधरी और सास बड़ी तेताल
ओ हो रे दिन रात लड़त हैं, दइया रे दिन रात लड़त हैं,
किसने ——-
जेठ हमारे, पातले और पतली कमर बल खाय,
ओ हो रे नागिन से लिपट गए, दइया रे नागिन से लिपट गए,
किसने ——-
देवर हमारे हीजड़ा और हिजड़न के घर जायँ,
ओ हो रे ता थइया करत हैं, दइया रे ता थइया करत हैं,
किसने ——-
ननद हमारी बीजली और दमकत लचकत जायँ,
ओ हो रे काऊ छैला पे मर गईं, दइया रे किसी छैला पे मर गईं,
किसने ——-
नन्दोई हमारे बादरा और बरसत चारों ओर,
ओ हो रे मेरे अँगना बरस गए, हाँ जी हाँ मेरे अँगना बरस गए,
किसने ——-
सजन हमारे चन्द्रमा और चमकत चारों ओर,
ओ हो रे सेजों पे चमक गए, रामा रे सेजों पे चमक गए,
किसने ——-

78. तोड़न गई थी कलियाँ

(लोकगीतों की नायिका जब बाग़ में कलियाँ तोड़ने जाती है तो सैंया जी भी चुपचाप वहाँ आ जाते हैं, शुद्ध सात्विक पस्पर प्रेम का रसपूर्ण सिलसिला इसी प्रकार आगे बढ़ता है)

तोड़न गई थी कलियाँ, ओ मोरी गुइयाँ।

पहली कली जब तोड़न लागी,
काँटा चुभा उँगरिया ओ मोरी गुइयाँ।

दूजी कली जब तोड़न लागी,
फट गई मोर चुनरिया, ओ मोरी गुइयाँ।

तीजी कली जब तोड़न लागी,
सइयाँ ने रोकी डगरिया, ओ मोरी गुइयाँ।

चौथी कली जब तोड़न लागी,
सइयाँ ने पकड़ी कलइया, ओ मोरी गुइयाँ।

जो जो माँगा सो सो दीन्हा,
तब ही छोड़ी कलइया, ओ मोरी गुइयाँ।

79. मेरी काली मुर्गी खो गई ना, मेरा दिल ठिकाने नाहीं ना

(सास, ससुर, देवर और ननद जब किसी काम के लिए कहते हैं तो बहू रानी को अपने सारे गम याद आते हैं, लेकिन जब साजन उसी काम को कहते हैं तो दिल फौरन ठिकाने आ जाता है)

मेरी काली मुर्गी खो गई ना, मेरा दिल ठिकाने नाहीं ना।

सासू बोले री बहुरिया क्या पकाया खाना,
तुम रूखी सूखी खा लो ना, मेरा दिल ठिकाने नाहीं ना।

ससुर जी बोले री बहुरिया क्या पकाया खाना,
तुम बुढ़िया से बनवा लो ना, मेरा दिल ठिकाने नाहीं ना।

देवर बोले भाभी मेरी क्या पकाया खाना,
तुम अपनी जोरू लाओ ना, मेरा दिल ठिकाने नाहीं ना।

ननदी बोले री भौजाई क्या पकाया खाना,
तुम अपने घर को जाओ ना, मेरा दिल ठिकाने नाहीं ना।

साजन बोले ओ मेरी रानी क्या पकाया खाना,
तुम मुर्ग मुसल्लम खाओ ना, मैं अभी पका के लाई ना।
मेरी काली मुर्गी मिल गई ना, मेरा दिल ठिकाने आ गया ना।

80. कंगन मेरा खोया

(कंगन खोने से सजनी बहुत दुखी है और सब लोगों से उसे ढूँढने के लिए कह रही है. साजन उसे समझा रहे हैं, मसलन दूसरा बनवा दूँगा, और तू तो कंगन बिना भी बहुत अच्छी लग रही है, वगैरह-वगैरह)

कंगन मेरा खोया जाने कौन डगरिया
सोने का कंगना मेरे मन भाया,
गिन गिन मोहरे मोल चुकाया,
अब ना मिलेगा ऐसा सारी नगरिया,
कंगन मेरा ——-
ननदी से पूछो देवर जी से पूछो,
चौक में खड़े सिपहिया से पूछो,
पूछ के आओ राजा सारी नगरिया,
कंगन मेरा ——-
दूजा कंगन मैं गढ़वा दूँगा,
हीरे मोती और लाल जड़वा दूँगा,
गोरी तुझपे वारूँ मैं मीना बजरिया,
कंगन मेरा ——-
गोरी काहे खोये कंगन की मतवारी,
तू तौ बिना कंगन लगे मुझे प्यारी,
तू तो गोरी दमके जैसे बिजरी बदरिया,
कंगन मेरा ——-

81. लाए महाराजा हमें तो छल बल से

(तरह तरह के वादे कर के शादी तो कर लाए, पर पत्नी की फरमाइशें पूरी करने का कोई ख्याल नहीं है. बेचारी नायिका इस लोकगीत के माध्यम से अपना दर्द सब को बता रही है)

लाए महाराजा हमें तो छल बल से।
सइयाँ तेरे राज में ओ राजा तेरे राज में,
कभी न पहनीं चूड़ियाँ, कलाई भर भर के,
लाए महाराजा ——-
सइयाँ तेरे राज में ओ राजा तेरे राज में,
कभी न ओढ़ी चुनरी, गोटा जड़ जड़ के,
गोटा जड़ जड़ के, किनारी जड़ जड़ के,

लाए महाराजा ——-
सइयाँ तेरे राज में ओ राजा तेरे राज में,
कभी न चाटी चटनी, चुटकी भर भर के,
चुटकी भर भर के, उँगलियाँ भर भर के,
लाए महाराजा ——-
सइयाँ तेरे राज में ओ राजा तेरे राज में,
कभी न खाए लड्डू, दोने भर भर के,
दोने भर भर के, जी मुखडा भर भर के,
लाए महाराजा ——-

82. सइयाँ गए हैं बज़रिया

(ऐसे सैंया मिलें तो सजनी का जिया क्यों नहीं जलेगा. बाजार गए तो सास और ननद के लिए तो बढ़िया बढ़िया चीजें लाए और अपनी सजनी के लिए मामूली चीजें. ऐसे लोकगीत गा कर सखियाँ खूब हंसती खिलखिलाती हैं)

सइयाँ गए हैं बज़रिया, हाय जिया जल क्यों न जाय
सास को लाए लड्डू, ननद को लाए पेड़ा,
हमको ले आए रे दलिया, हाय जिया जल क्यों न जाय।
सास ने खाए लड्डू, ननद ने खाए पेड़ा,
छींके पे धर दियो दलिया, हाय जिया जल क्यों न जाय।
सास को लाए लहँगा, ननद को लाए साड़ी,
हमको ले आए चुनरिया, हाय जिया जल क्यों न जाय।
सास ने पहना लहँगा, ननद ने पहनी साड़ी,
पिटरे में धर दी चुनरिया, हाय जिया जल क्यों न जाय।
सास को लाए तोता, ननद को लाए मैना,
हमको ले आए बंदरिया, हाय जिया जल क्यों न जाय।
पिंजरे बैठे तोता, छज्जे पे फुदके मैना,
आँगन में कूदे बंदरिया, हाय जिया जल क्यों न जाय।

83. सइयाँ मिले सिलबिल्ले

(वैसे तो सारी सजनियों को अपने सजन सिलबिल्ले और दूसरी स्त्रियों के सजन स्मार्ट लगते हैं, लेकिन ये वाले सजन तो कुछ ज्यादा ही स्पेशल हैं. सुनिए सजनी का दुखड़ा)

सइयाँ मिले सिलबिल्ले

सइयाँ मिले सिलबिल्ले, हाय मेरो कैसो नसीब।
ठेल ठाल मैं कुअटा पे लै गई,
फोरि आए गगरी, गिराय आए मोय, मेरो कैसो नसीब।
ठेल ठाल मैं चौका में लै गई,
फोरि आए बटला, हपोस आए खीर, मेरो कैसो नसीब।
ठेल ठाल मैं पीहर लै गई,
तोरि आए रिश्ता, लिवाय लाए मोय, मेरो कैसो नसीब।
ठेल ठाल मैं सेजन पे लै गई,
तोरि आए पलका, गिराय आए मोय, मेरो कैसो नसीब।

84. अब ना जाऊँ निंबुआ तोड़ने

(सजनी अच्छे से अच्छा खाना बनाए और लेकिन पति खाए नहीं, पानी लाए तो पानी न पिए, सेज बिछाए तो सोए नहीं, तो सजनी का जियरा वाकई में जलता है. ननदी के भैया माने पति)

अब ना जाऊँ निंबुआ तोड़ने,
काँटवा गड़ि गड़ि जाय, जियरा जरि जरि जाय।
कैसे मनाऊँ रे अपने पिया को,
रसिया रिस रिस जाय, जियरा जरि जरि जाय।
सोने की थाली में जिवना परोसे,
ना जैमे ननदी के भइया हो, जियरा जरि जरि जाय।
चाँदी की झारी, गंगा जी को पानी,
ना पीवैं ननदी के भइया हो, जियरा जरि जरि जाय।
फूलों की सेज, मोती झालर के तकिए,
ना पौढ़ें ननदी के भइया हो, जियरा जरि जरि जाय।

85. द्वारका दिखाय देओ महाराज

(पत्नी कह रही है कि तुम ने मुझे कभी बढ़िया चीजें नहीं खिलाईं, अच्छी अच्छी जगह नहीं ले गए, अच्छे कपड़े नहीं पहनाए तो कोई बात नहीं, मैं मामूली चीजों में ही खुश हो जाऊँगी, लेकिन मेरे साथ हंसी मजाक तो करो)

द्वारका दिखाय देओ महाराज, आज मोहे द्वारका दिखाय देओ।
कबहूँ न खाए मैंने लड्डू रे पेड़ा, कबहूँ न खायो कलाकंद,
आज मोहे रेवड़ियाँ चखाय देओ,
रेवड़ियाँ चखाय देओ महाराज, आज मोहे द्वारका दिखाय देओ।

कबहूँ न न्हाई मैं तो गंगा रे जमुना,
कबहूँ न न्हाई हरद्वार, आज मोहे पोखरिया न्हवाय देओ,
पोखरिया न्हवाय देओ महाराज, आज मोहे द्वारका दिखाय देओ।
कबहूँ न पहरे मैंने टसर रे रेसम,
कबहूँ न ओढ़ो किमख़ाब, आज मोहे टाटरिया उढ़ाय देओ,
टाटरिया उढ़ाय देओ महाराज, आज मोहे द्वारका दिखाय देओ।
कबहूँ न कीनी मैंने हँसी रे दिल्लगी,
कबहूँ न कीनो रे मज़ाक, आज मोहे खेल खिलवाय देओ,
खेल खिलवाय देओ महाराज, आज मोहे द्वारका दिखाय देओ।

86. ओ राजा जी मेरा दिल तो हजरिया

(लोक गीतों में कुछ कांसेप्ट बड़े कॉमन हैं. सजनी जी कोई बढ़िया चुनरी ओढ़ती हैं, फिर उन्हें नजर लग जाती है तो वैद्य बुलाए जाते हैं. फिर हमेशा की तरह जनम की बैरन ननदिया की एंट्री हो जाती है और वैद्य उसे भगा कर ले जाता है)

ओ राजा जी मेरा दिल तो हजरिया।
दिल्ली शहर में लागी बजरिया,
ओ राजा जी मैं तो लाई चुनरिया, ओ राजा जी ——-
चुनरी पहन मैं मेले गई थी,
ओ राजा जी मुझे लागी नजरिया, ओ राजा जी ——-
मेरठ शहर से वैधा बुलाया,
ओ राजा जी झड़वाई नजरिया, ओ राजा जी ——-
झाड़-फूँक वैधा पलका पे बैठा,
ओ राजा जी उसने माँगी ननदिया, ओ राजा जी ——-
सास भी दे दी, जिठानी भी दे दी,
ओ राजा जी मैंने ना दी ननदिया, ओ राजा जी ——-
वैधा का बेटा बड़ा छलबलिया,
ओ राजा जी ले भागा ननदिया, ओ राजा जी ——-

87. बिंदिया जाने कहाँ खोई रे ननदिया

(बिंदिया खोने से मन केवल इसलिए दुखी नहीं है कि बिंदिया बहुत प्रिय थी, वह सुहाग की निशानी भी तो है)

बिंदिया जाने कहाँ खोई रे ननदिया, बिंदिया जाने कहाँ खोई

अँगना बुहारूँ तो अँगना में देखूँ,

वहाँ न मिली तो बड़ी रोई रे ननदिया, बिंदिया जाने ——-

चौका में जाऊँ तो चौका में देखूँ ,
वहूँ न मिली तो बड़ी रोई रे ननदिया, बिंदिया जाने ——-
(इसी प्रकार अट्टा, बाग, कुँआ, ताल आदि के लिए।)

88. डाली लचकै, बाग़ में गुच्छा लटके

(प्रेमिका को प्रेमी का साथ अच्छा तो लगता है, लेकिन प्रेमी यदि अधिक पास आना चाहता है तो इस के खतरे भी वह समझती है. अत्यधिक रस से परिपूर्ण ब्रज भाषा का लोकगीत)

डाली लचकै, बाग़ में गुच्छा लटके,
नेक पीछे हट जा बालमा, मत मारै झटके।
डाली लचकै —
प्यारी तेरे रूप की शोभा कही न जाय,
तू कुमुदिनी खिल रही, मैं भौंरा रह्यो लुभाय,
नेक हँस मुसका दै गोरकी, चमेली महकै,
डाली लचकै —
प्रिय तेरो मुख चन्द है, मेरे नयन चकोर,
चन्द्र वदन दिखलाय के, तैने लियो मेरो मन चोर,
नेक पास को आ जा गोरकी, चाँदनी चमकै,
डाली लचकै —
चन्द्रवदनि मृगलोचनी, कली खिली बिच बाग,
भँवर अभी कच्ची कली, क्यों अति को अनुराग,
नेक पीछे हट जा बालमा, तू चलियो थम कै,
डाली लचकै —
कच्ची कली अनार की, अरे क्यों मन को भरमाय,
दीखत लागे रूपसी, पर खावत में खटियाय,
नेक पीछे हट जा बालमा, मत आँखन में खटकै,
डाली लचकै ——-
प्यारी प्रीत निभाय दे, अधबिच में मत छोर,
कदवारी को तार ज्यों, टूटे पूरे ज़ोर,
नेक पास आन दै गोरकी, मत मोहे बरजै,
डाली लचकै —

89. ननदी मोय दै तीर कमान, अटा पे बुलबुल बैठी है

(यहाँ बुलबुल से मतलब दूसरी स्त्री से है. नायिका बड़ी बिंदास सोच रखती है. तीर कमान से बुलबुल का शिकार करने को तैयार है. लेकिन अगर पति को उसके चंगुल से नहीं छुड़ा पाती है, तो वह रो रो कर जन्म गंवाने वाली नहीं है, दूसरा ब्याह कर लेगी)

ननदी मोय दै तीर कमान, अटा पे बुलबुल बैठी है,
बुलबुल बैठी है, अटा पे बुलबुल बैठी है,
ननदी मोय दै —-
सास मेरी सोय गई, ननद मेरी सोय गई, बुलबुल बैठी है,
मेरी ऊ लग गई आँख, बलम को बुलबुल लै गई रे,
ननदी मोय दै —-
सास मेरी ढूँढै, ननद मेरी ढूँढै, बुलबुल बैठी है,
मैं ऊ ढूँढूँ, गलियन बगियन बुलबुल लै गई रे,
ननदी मोय दै —-
सास मेरी रोवै, ननद मेरी रोवै, बुलबुल बैठी है,
मेरो रोवे ठेंगा, दूजा ब्याह करूँगी रे,
ननदी मोय दै —-

90. चकिया के दो पाट, तमाशा देखे लाँगुरिया

(जो मर्द थोड़े चिपकू किस्म के होते हैं उनका मजाक उड़ाया गया है. पत्नी चक्की पीस रही है तो बगल में खाट डाले सो रहे हैं, जैसे जैसे पत्नी का काम निबट रहा है वह अपनी खटिया सरकाते जा रहे हैं)

चकिया के दो पाट, तमाशा देखे लाँगुरिया।
सासुल पीसे पीसनों, और ससुरा सोवे खाट,
निबटत जावे पीसनों, और सरकत आवे खाट,
सरकत आवे खाट, तमाशा देखे लाँगुरिया।
ननदी पीसे पीसनों, ननदोई सोवे खाट,
निबटत जावे पीसनों, और सरकत आवे खाट,
सरकत आवे खाट, तमाशा देखे लाँगुरिया।
(इसी प्रकार सब रिश्तेदारों के नाम)

91. राजधानी से बाँदी मँगा दो

(पत्नी को ससुराल में सब से शिकायत है और ख़ास तौर पर सास से जो पलंग पर बैठ कर हुकुम चलाती है और उस से बहुत काम कराती है. वह पति से अपने लिए एक नौकरानी रखने के लिए फरमाइश कर रही है)

राजधानी से बाँदी मँगा दो, मुझे दिल्ली से बाँदी मँगा दो
मुझे ऐसी सास नहीं भावे, जो हरदम तुमको सिखावे,
जो आधी आधी रात पिसावे, पलका से हुकुम चलावै,
राजधानी से ——
मुझे ऐसी जिठानी न भावे, जो आधी दौलत माँगे,
जो नित उठ लड़का जाये, गुड़ खा के सौंठ बतावै,
राजधानी से ——
मुझे ऐसी देवरानी न भावे, जो आधे जेवर माँगे,
चौके से नखरा झाड़े, आँगन में रार मचावै,
राजधानी से ——
मुझे ऐसी ननद नहीं भावे, जो दो की चार लगावे,
जो नित उठ पीहर आवै, बिजली सी चमकत जावै,
राजधानी से ——
मुझे ऐसी पड़ोसन न भावे, कूओं पे रार मचावै,
खिड़की से ताक लगावै, जो तुमसे नैन लड़ावै,
राजधानी से ——

92. आगरे से घाघरो मोय लाय दे भरतार

(पत्नी की फरमाइशों की लिस्ट बहुत लम्बी है. नथनी, लटकन, बिंदिया, नौलख हार, सुरमा, कंगन, चूड़ियाँ, पायल, लाली और अंगूठी, सब चाहिए. लेकिन पति भी कम होशियार नहीं है. कहता है, तू इतनी सुंदर है, तुझे गहनों की क्या जरूरत. लेकिन तेरा रूप तब ही अच्छा लगता है जब तेरे नैनों से प्यार छलकता है)

आगरे से घाघरो मोय लाय दे भरतार।
नाक को लइयो राजा मोती वारी नथनी,
कानों को लटकन लइयो भरतार।
माथे को लइयो राजा झिलमिल बिंदिया,
गले को नौलख हार भरतार,
नैनन को लइयो बरेली को सुरमा,
लइयो कलाई को कंगन जड़ाऊ,
तारे सितारे लगवइयो भरतार।
हाथन को लइयो राजा हरी हरी चुरियाँ,
पैरन को बजनी सी पायल भरतार,
होठन को लाली लइयो भरतार।
उँगरिन को लइयो, अँगूठी नगदार।
तेरो रूप नेक ना माँगे, माँगे न हार सिंगार मोरी नार।

तेरो रूप अनूप लागे सजनी, नैनों में जब तेरे छलके प्यार।
नेक मुखड़ा मोय दिखाय, घूँघट सरकाय दे मोरी नार।

93. टप टप टपके पसीना गजब गर्मी का महीना

(गर्मी के मौसम में किसी का आदमी एसी, कूलर या पंखा ले आए तो दूसरी औरतें क्लेश मचाती हैं)

टप टप टपके पसीना गजब गर्मी का महीना
देवर हमारे फ्रिज ले आए
छोटी ने कलेश कर दीना, गजब गर्मी का महीना
बलम हमारे ऐ सी ले आए
ननदी ने छोड़ा खाना पीना, गजब गर्मी का महीना
जेठ हमारे कूलर ले आए
जिठनी ने अलग कर लीना, गजब गर्मी का महीना
ससुर हमारे पंखा ले आए
सासू ने मुश्किल किया जीना, गजब गर्मी का महीना

94. आपन देस के खलिहनवा

(अपने खेत और खलिहान से हर स्त्री का भावनात्मक जुड़ाव होता है)

आपन देस के खलिहनवा, आपन देस के खलिहनवा
मोरा जियरा जुड़ाए, मोरा जियरा जुड़ाए

पड़ीं कटनिया खेतन महियाँ, चमचम हँसिया चमके
मोती बन के चुए पसिनवा पी की सुरतिया दमके
हमहूँ पिया संग जइबे -2
आपन खेतवा कटाय - 2
आपन देस के खलिहनवा, मोरा जियरा जुड़ाए

देवी जी का भोग लगईवे, लड्डू और सुपारी
गाँव पुरखिन को जेवना जिमइवे, भर भर कंचन थारी
हमहूँ पिया संग जइबे -2
आपन गुइयाँ बनाए - 2
आपन देस के खलिहनवा, मोरा जियरा जुड़ाए

<u>बन्ने</u>

1. दैया रे दैया बन्ने को नज़र लागी

(बन्ना जब सज धज कर तैयार होता है तो सब से बड़ा रिस्क इस बात का होता है कि उसे नजर न लग जाए. बेचारी माँ और बहनें सबसे पहले उस को काला टीका लगाने के लिए दौड़ती हैं)

(तर्ज़ - दैया री दैया, लाज मोहे लागे)

दैया रे दैया बन्ने को नज़र लागी, मैं डिबिया काजल की लेकर भागी,

शीश बन्ने के सेहरा सोहे, दैया रे दैया लड़ियो पे नज़र लागी
मैं डिबिया काजल की लेकर भागी,

अंग बन्ने के जामा सोहे, दैया रे दैया पटके पे नज़र लगी,
मैं डिबिया काजल की लेकर भागी

संग बन्ने के बन्नी सोहे, दैया रे दैया जोड़ी पे नज़र लागी
मैं डिबिया काजल की लेकर भागी

2. बन्ने से बनड़ी, फेरों पे झगड़ी

(बन्नी ने शादी से पहले ही बन्ने से वादा करा लिया था कि वह सोने की तगड़ी ले कर आएगा. वह नहीं लाया तो झगड़ रही है. बन्ना बहाने बना रहा है, लेकिन वह मानने को तैयार नहीं है. सुनिए इस गीत में उन की मजेदार नोंक झोंक)

बन्ने से बनड़ी, फेरों पे झगड़ी,
अजी तुम क्यों न लाये जी, सोने की तगड़ी
ओ बन्नी धीरे-धीरे बोल कि तेरे बाबा सुन लेंगे,
ओ बन्नी धीरे-धीरे बोल कि तेरे नाना सुन लेंगे
कंगने पे ला दूंगा सोने की तगड़ी,

बन्ने से बनड़ी कंगने पे झगड़ी,
अजी तुम क्यों ना लाये जी, सोने की तगड़ी
ओ बन्नी धीरे-धीरे बोल कि तेरे ताऊ सुन लेंगे,
ओ बन्नी धीरे-धीरे बोल कि तेरे चाचा सुन लेंगे
विदा पर ला दूंगा सोने की तगड़ी,

बन्ने से बन्नी विदा पे झगड़ी,
अजी तुम क्यों ना लाए जी, सोने की तगड़ी
ओ बन्नी धीरे-धीरे बोल कि तेरे भैया सुन लेंगे,
ओ बन्नी धीरे-धीरे बोल कि तेरे जीजा सुन लेंगे
घर जाकर ला दूंगा सोने की तगड़ी,

बन्ने से बन्नी घर जाकर झगड़ी,
अजी तुम क्यों ना लाए जी सोने की तगड़ी
अरे भई ले तो आया हूं सोने की तगड़ी,
अरे भई ले तो आया हूं सोने की तगड़ी

इस लोक गीत को इस प्रकार भी गाया जाता है

जयमाल पे बन्नी बन्ने से झगड़ी,
अरे तू क्यों न लाया रे सोने की तगड़ी,
जरा धीरे-धीरे बोल, जरा हौले हौले बोल,
बाराती सुन लेंगे, मेरी साथी सुन लेंगे,
फेरों पे ले लेना सोने की तगड़ी।

फेरों पे बन्नी बन्ने से झगड़ी,
अरे तू क्यों न लाया रे सोने की तगड़ी,
जरा धीरे-धीरे बोल, जरा हौले हौले बोल,
वो पंडित सुन लेगा, वो नाई सुन लेगा,
अरे सेजों पे ले लेना सोने की तगड़ी।
सेजों पे बन्नी बन्ने से झगड़ी,

अरे तू क्यों न लाया रे सोने की तगड़ी,
जरा धीरे-धीरे बोल, जरा हौले हौले बोल,
मेरी अम्मा सुन लेगी, मेरी बहना सुन लेगी,
दो साल में ले लेना सोने की तगड़ी।

दो साल पे बन्नी बन्ने से झगड़ी,
अरे तू क्यों न लाया रे सोने की तगड़ी,
जरा धीरे-धीरे बोल, जरा हौले हौले बोल,
ये मुन्ना सुन लेगा, ये मुन्नी सुन लेगी,
अरे अब भूल भी जा मेरी जान सोने की तगड़ी।

3. बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी, कैसे सपरी हो रामा कैसे सपरी

(बन्ना या तो मंद बुद्धि है, या वह सब से मजा ले रहा है कि तुम सब सज धज कर तैयार तो हो गये हो, अगर मैं नहीं जाऊँगा तो दुल्हन कैसे लाओगे)

बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी, कैसे सपरी हो रामा कैसे सपरी
बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी
बाबा सज गए नाना सज गए सज गई सगरी बरात
कमरे में से बन्ना बोला मैं ना जाऊं साथ
कैसे लाओगे दुल्हनिया कैसे सपरी, बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी

ताऊ सज गए चाचा सज गई सगरी बरात
कमरे में से बन्ना बोला मैं ना जाऊं साथ,
कैसे लाओगे दुल्हनिया कैसे सपरी,बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी

मामा सज गए मौसा सज गए सज गई सगरी बरात
कमरे में से बन्ना बोला मैं ना जाऊं साथ,
कैसे लाओगे दुल्हनिया कैसे सपरी, बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी

भैया सज गए जीजा सज गए सज गई सगरी बारात,
कमरे में से बन्ना बोला मैं ना जाऊं साथ
कैसे लाओगे दुल्हनिया कैसे सपरी, बन्ना डोले रे अंगनवा कैसे सपरी
(कैसे सपरी का अर्थ होता है कि काम कैसे संभलेगा या पूरा होगा)

4. बन्ना एते बड़े कुँवारे क्यों रहे, जी बन्ना एते बड़े कुँवारे क्यों रहे

(बन्ने से पूछ रहे हैं कि तुम्हारी शादी अब तक क्यों नहीं हुई. वह भी बड़े बढ़िया बढ़िया जवाब दे रहा है. उस माहौल में इन गीतों से कितना रस बिखरता है इस का अनुभव वही कर सकता है जिसने इस प्रकार के गीतों को गाया हो)

बन्ना एते बड़े कुँवारे क्यों रहे, जी बन्ना एते बड़े कुँवारे क्यों रहे

माली के गए मालिन न मिली,
सेहरे बिन कुँवारे हम रहे जी, सेहरे बिन कुँवारे हम रहे,

भैया के गए भाभी न मिली,
कजरे बिन कुँवारे हम रहे जी, मेंहदी बिन कुँवारे हम रहे

ससुराल गए सासु न मिली,
बन्नी बिन कुँवारे हम रहे जी, बन्नी बिन कुँवारे हम रहे

इस गीत को एक और प्रकार से भी गाया जाता है –
बन्ना ऐते बड़े कुँवारे क्यूं रहे, बन्ना ऐते बड़े कुँवारे क्यूं रहे।
पंडित के गए, पंडित न मिला, मुहुरत बिन कुँवारे हम रहे -2
बन्ना ऐते बड़े कुंवारे क्यों रहे

माली के गए, माली न मिला, सेहरे बिन कुँवारे हम रहे -2
बन्ना ऐते बड़े कुंवारे क्यों रहे

दर्जी के गए, दर्जी न मिला, कपड़ों बिन कुँवारे हम रहे -2
बन्ना ऐते बड़े कुंवारे क्यों रहे

साइस के गया साइस न मिला, घोड़ी बिन कुँवारे हम रहे -2
बन्ना ऐते बड़े कुंवारे क्यों रहे

ज्वैलर के गए ज्वैलर न मिला, कण्ठे बिन कुँवारे हम रहे -2
बन्ना ऐते बड़े कुंवारे क्यों रहे

ससुराल गए, पर तू न मिली, बन्नी तेरे बिन कुँवारे हम रहे -2
बन्ना ऐते बड़े कुंवारे क्यों रहे

5. मेरे हरियाले बन्ने मेरे शहजादे बन्ने

(इस गीत को रमइया वस्ता वैया की धुन पर गाया जाता है. इस में बारातियों के जोश का वर्णन किया जा रहा है)

मेरे हरियाले बन्ने मेरे शहजादे बन्ने,
चांदनी रात आई खुशी की रात आई।

संग बाबा चले संग नाना चले

बेटी वाले के घर पर हमला किया – 2

माल को लूट लाए बन्नी को ब्याह लाए – 2
चांदनी रात आई खुशी की रात आई

इसी प्रकार मामा - मौसा, ताऊ - चाचा, भैया - जीजा आदि बोलना है और गीत को आगे बढ़ाना है.

(इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है)

मेरी हरियाली बन्नी मेरी शहजादी बन्नी
मेरी हरियाली बन्नी मेरी शहजादी बन्नी
मैंने दिल तुझको दिया-2

मेरे बाबा सजे मेरे ताऊ सजे
लड़की वालों के घर पर हमला किया
बागों को लूट लाये बन्नी को ब्याह लाये
तमाशा खूब किया
मेरी हरियाली बन्नी मेरी शहजादी बन्नी
मैंने दिल तुझको दिया-2

मेरे पापा सजे मेरे चाचा सजे
लड़की वालों के घर पर हमला किया
बागों को लूट लाये बन्नी को ब्याह लाये
तमाशा खूब किया
मेरी हरियाली बन्नी मेरी शहजादी बन्नी-2
मैंने दिल तुझको दिया-2
(इसी प्रकार फूफा – मामा, जीजा – भैया)

6. चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है

(शादी के मौके पर छोटे भाई बहन बन्ने की खूब चोक लेते हैं और लगे हाथ बुजुर्गों को भी लपेट लेते हैं)

चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है,
बन्नी जी का फोटो बन्ने जी के पास है।

मेरे पास फोटो है तो क्या गजब की बात है,
मेरे पास फोटो है तो क्या गजब की बात है,
दादी जी का फोटो भी तो दादाजी के पास है।

(इसी प्रकार ताऊ- ताई, चाचा – चाची, मामा – मामी, बुआ – फूफा आदि का नाम ले कर गीत आगे बढ़ा सकते हैं.)

7. बन्ना बुलाए, बन्नी न आये

(बन्ने का मन बन्नी से मिलने का कर रहा है. बन्नी अपनी मजबूरियाँ बता रही है तो बन्ना रास्ते बता रहा है)

बन्ना बुलाए, बन्नी न आये,
आजा प्यारी बन्नी रे, अटरिया सूनी रे।

बाबा खड़े हैं, ताऊ खड़े हैं,
पायल मेरी बजनी रे, मैं कैसे आऊँ रे।

पायल को उतार के, लंबा घूंघट डाल के,
आजा प्यारी बन्नी रे, अटरिया सूनी रे।
(इसी प्रकार चाचा, मामा, जीजा, भैया)

इस गीत को इस प्रकार भी गाया जाता है

बन्ना बुलाये, बन्नी नहीं आये, चली आओ जीने से, अटरिया सूनी पड़ी,

मैं कैसे आऊँ, बाबा खड़े हैं दादी मेरी जागे रे, अटरिया सूनी पड़ी.
पायल उतार के, लम्बा घूंघट काड के, नैना नीचे डाल के,
बिल्ली चाल आओ रे, अटरिया सूनी पड़ी.
बन्ना बुलाये, बन्नी नहीं आये, चली आओ जीने से अटरिया सूनी पड़ी।

मैं कैसे आऊं पापा जी खड़े हैं, मम्मी मेरी जागे रे, अटरिया सूनी पड़ी।
लम्बा घूंघट काड के, पायल उतार के, नैना नीचे डाल के,
धीरे धीरे आओ रे अटरिया सूनी पड़ी।

8. चिक डाल दो कमरे में बन्ना कैरम खेलेगा

(शादी से पहले बन्ने बन्नी की प्यार भरी तकरार और हँसी मजाक की एक और बानगी)

चिक डाल दो कमरे में बन्ना कैरम खेलेगा
अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी दादी को ले जाऊँगा
अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी नानी को ले जाऊँगा
शादी कर मैं तुम से पीछा छोड़ूंगा
चिक डाल दो कमरे में बन्ना कैरम खेलेगा

अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी मम्मी को ले जाऊँगा
अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी ताई को ले जाऊँगा
शादी कर मैं तुम से पीछा छोड़ूंगा
चिक डाल दो कमरे में बन्ना कैरम खेलेगा

अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी बुआ को ले जाऊँगा
अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी मौसी को ले जाऊँगा
शादी कर मैं तुम से पीछा छोड़ूंगा
चिक डाल दो कमरे में बन्ना कैरम खेलेगा

अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी भाभी को ले जाऊँगा
अगर मैं बाजी जीता तो तुम्हारी जीजी को ले जाऊँगा
शादी कर मैं तुम से पीछा छोड़ूंगा

17. लैला मिली मजनूँ न मिला

(शादी के माहौल में इन बेतुके बेसिरपैर के मजाकों में भी बड़ा मजा आता है, और अगर साथ में इन पर डांस भी हो तो मजा दोगुना हो जाता है)

लैला मिली मजनूँ न मिला-२
बड़े जोर की आँधी आई, बन्नी चढ़ गई कोठे पर
नीचे से वो बन्ने बोले, ओय ओय ओय बन्नी उड़ मत जाना आँधी में
लैला मिली मजनूँ न मिला-२

बड़े जोर की बदरी छाई, बन्नी चढ़ गई कोठे पर
नीचे से वो बन्ने बोले, ओय ओय ओय बन्नी खो मत जाना बदरी में
लैला मिली मजनूँ न मिला-२

बड़े जोर से पानी बरसा, बन्नी चढ़ गई कोठे पर
नीचे से वो बन्ने बोले, ओय ओय ओय बन्नी बह मत जाना पानी में
लैला मिली मजनूँ न मिला-२

9. लेके पहला पहला प्यार, संग में मोटर साकिल कार

(गीत की धुन - लेके पहला पहला प्यार, भर के आँखों में खुमार, जादू नगरी से आया है कोई जादूगर)

लेके पहला पहला प्यार, संग में मोटर साकिल कार

बन्ना बन्नी को लेने चला है ससुराल

बन्ना के बाबा द्वार खड़े है बन्ना के ताऊ द्वार खड़े हैं,
दादी करती मंगलवान, ताई करती मंगल गान,
बन्ना बन्नी को लेने.....

बन्ना के मामा द्वार खड़े है बन्ना के चाचा द्वार खड़े हैं,
मामी करती मंगलवान, चाची करती मंगल गान,
बन्ना बन्नी को लेने.....

बन्ना के मौसा द्वार खड़े है बन्ना के फूफा द्वार खड़े हैं,
मौसी करती मंगलवान, बुआ करती मंगल गान,
बन्ना बन्नी को लेने.....

10. ताला दे कर ताली क्यों न लाया रे बन्ने

(बन्ना बन्नी की मजेदार नोंक झोंक. वधू पक्ष की महिलाएँ इस प्रकार के गीत गा कर वर पक्ष की मजाक उड़ाती हैं. यह गीत वर पक्ष और वधू पक्ष दोनों के लोग गा सकते हैं)

ताला दे कर ताली क्यों न लाया रे बन्ने,
तूने किस के भरोसे घर छोड़ा रे बन्ने।

मैं ने दादी के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी, मैंने नानी के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी,
तेरी दादी का भरोसा मुझे नाहीं रे बन्ने, तेरी नानी का भरोसा मुझे नाही रे बन्ने,
वो तो खावे और लुटावे घर को मेरे बन्ने।

मैं ने ताई के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी, मैंने चाची के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी,
तेरी ताई का भरोसा मुझे नाहीं रे बन्ने, तेरी चाची का भरोसा मुझे नाही रे बन्ने,
वो तो खावे और लुटावे घर को मेरे बन्ने।
(इसी प्रकार मौसी – बुआ, भाभी – बहना)

11. फुलवा बीन लइयो मोरे लाल बन्ना

(ससुराल जाने से पहले माँ बन्ने को सावधान कर रही है)

फुलवा बीन लइयो मोरे लाल बन्ना।
सासू तुम्हारी बड़ी रानिया, वहाँ रुक मत जइयो मेरे लाल बन्ना,
फुलवा बीन लइयो मोरे लाल बन्ना।

ससुरा के आँगन खड़ी नीमड़ी, वहाँ फूँकि फूँकि जइयो मेरे लाल बन्ना,
फुलवा बीन लइयो मोरे लाल बन्ना।

सलहज तुम्हारी देगी गालियाँ, वहाँ लड़ मति जइयो मेरे लाल बन्ना,
फुलवा बीन लइयो मोरे लाल बन्ना।

साली तुम्हारी बड़ी मोहिनी, वहाँ मोह मति जइयो मेरे लाल बन्ना,
बन्नी तुम्हारी बड़ी सोहिनी, उसे ब्याह घर लइयो मेरे लाल बन्ना।

12. आओ बन्नो आओ अरे हम तुम पे मरेला है

(आजकल के बच्चों के लिए बनाया गया, खांटी बंबईया लहजे में एक मजेदार गीत)

आओ बन्नो आओ अरे हम तुम पे मरेला है,
पीछे पलट के देख जरा, बन्ना खड़ेला है.

सोचा था हमने हम तुमको चाय पिलाएगा,
चीनी भी है चाय पत्ती भी है पर दूध फटेला है.

सोचा था हम तुमको घर पे पिक्चर दिखाएगा,
टीवी भी है पेनड्राइव भी है पर लाइट कटेला है.

सोचा था हमने हम तुमसे शादी रचाएगा,
मम्मी भी राजी, पापा भी राजी, पर पंडित सड़ेला है.

सोचा था हमने हम तुमसे इश्क लड़ाएगा,
मौका भी है और मूड भी है पर बुढऊ जगेला है.

13. एक फूल खिला आधी रात बन्ने ने पकड़ा हाथ

(बन्ने को बन्नी से मिलने की जल्दी है, लेकिन बन्नी उसे सामजिक मर्यादाओं का भान करा रही है)

एक फूल खिला आधी रात बन्ने ने पकड़ा हाथ, बन्नी तो हमारी है।
छोड़ो-छोड़ो बन्ने जी मेरा हाथ अभी तो कुंवारी हूँ

मेरे बाबा जी देंगे कन्यादान वो देंगे महादान, तभी तो तुम्हारी हूँ
मेरे ताऊ जी देंगे कन्या दान वो देंगे महादान, तभी तो तुम्हारी हूँ

एक फूल खिला आधी रात बन्ने ने पकड़ा हाथ, बन्नी तो हमारी है।

छोड़ो-छोड़ो बन्ने जी मेरा हाथ अभी तो कुंवारी हूँ

मेरे पापा जी देंगे कन्यादान वो देंगे महादान, तभी तो तुम्हारी हूं
मेरे चाचा जी देंगे कन्या दान वो देंगे महादान, तभी तो तुम्हारी हूं

एक फूल खिल्या आधी रात बन्ने ने पकड़्या हाथ, बन्नी तो हमारी है।
छोड़ो-छोड़ो बन्ने जी मेरा हाथ अभी तो कुंवारी हूँ
मेरे फूफा जी देंगे कन्यादान वो देंगे महादान, तभी तो तुम्हारी हूँ
मेरे मामा जी देंगे कन्या दान वो देंगे महादान, तभी तो तुम्हारी हूँ

14. कच्ची पक्की कलियाँ हिलाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो

(शादी से पहले अगर बन्ना रोज मिलने आता है तो बन्नी को अच्छा तो लगता है लेकिन मन डरता भी है)

कच्ची पक्की कलियाँ हिलाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो

माथे बन्नी के बेंदी सोहे -२,
अँखियन में झलक दिखाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो
कच्ची पक्की कलियाँ हिलाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो

कानों बन्नी के कुण्डल सोहे -२
होंठों पे झलक दिखाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो
कच्ची पक्की कलियाँ हिलाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो

हाथ बन्नी के कंगन सोहे -२
मेंहदी में झलक दिखाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो
कच्ची पक्की कलियाँ हिलाया न करो, रोज़ रोज़ बन्ना तुम आया न करो

15. गोरे गोरे गाल, गाल पर घुंघर वाले बाल, बन्ने तेरा क्या कहना

(बन्ना सज कर तैयार होता है तो ख़ुशी के मारे उसके दादा, पापा, भाई नोट लुटा रहे हैं. दादी मम्मी और भाभी ज्यादा समझदार हैं, इसलिए उन्हें रोक रही हैं)
(तर्ज़ - गोरे गोरे गाल गाल पर उलझे उलझे बाल, ओ तेरा क्या कहना)

गोरे गोरे गाल, गाल पर घुंघर वाले बाल, बन्ने तेरा क्या कहना,
महकी महकी चाल, चाल पर वारूं चवन्नी चार, बन्ने तेरा क्या कहना
पतले पतले होंठ, होठ पर वांरू सो का नोट, बन्ने तेरा क्या कहना,

बन्ने के दादा खरचे नोट, बन्ने की दादी के उड़ गये होश
बन्ने तेरा क्या कहना
गोरे-2 गाल, गाल पर घुंघर वाले बाल, बन्ने तेरा क्या कहना,
महकी-2 चाल-चाल पर वारूं चवनी चार, बन्ने तेरा क्या कहना
पतले-2 होंठ, होठ पर वांरू सो का नोट, बन्ने तेरा क्या कहना,

बन्ने के पापा खरचे नोट, बन्ने की मम्मी के उड़ गये होश
बन्ने तेरा क्या कहना
गोरे-2 गाल, गाल पर घुंघर वाले बाल, बन्ना तेरा क्या कहना,
महकी महकी चाल-चाल पर वारूं चवनी चार, बन्ने तेरा क्या कहना
पतले-2 होंठ, होठ पर वांरू सो का नोट, बन्ने तेरा क्या कहना,

बन्ने के भईया खरचे नोट, बन्ने की भाभी के उड़ गये होश
बन्ने तेरा क्या कहना

16. बन्ने जोबनिया जलेबी भरी रस की

(राजस्थानी गीतों में भी वही सारी बातें कही सुनी जाती हैं, देखिए एक मजेदार बानगी, इस गीत को दोनों पक्ष के लोग गा सकते हैं)

बन्ने जोबनिया जलेबी भरी रस की, थारे साथ चलुगी म्हारे जंच गई
बन्ने बाबा जी से कहियों म्हारा मन की, बन्ने ताऊ जी से कहियों म्हारा मन की,
थारे साथ चलुंगी म्हारे जंचगी

हाथी लाइयो घोड़ा लाइयो लाइयो मोटर कार
संग में बाराती लाइयो लाइयो रिस्तेदार
बन्ने थारी और म्हारी जोड़ी जंचगी, थारे साथ चलुंगी म्हारे जंचगी..
बन्ने जोबनिया जलेबी भरी रस की, थारे साथ चलुगी म्हारे जंच गई

बन्ने पापा जी से कहियों म्हारा मन की, बन्ने चाचा जी से कहियों म्हारा मन की
थारे साथ चलुंगी म्हारे जंचगी

बन्ने मामा जी से कहियों म्हारा मन की, बन्ने फूफा जी से कहियों म्हारा मन की
थारे साथ चलुंगी म्हारे जंचगी

हाथी लाइयो घोड़ा लाइयो मोटर कार

संग में बाराती लाइयो लाइयो रिस्तेदार
बन्ने थारी और म्हारी जोड़ी जंचगी, थारे साथ चलुंगी म्हारे जंचगी..
बन्ने जोबनिया जलेबी......

18. सनन सनन सांय सांय हो रही थी रेल में

(दुल्हन को विदा करा के लौट रही बरात रेल से सफर कर रही है. अलग अलग डिब्बों में बैठे लोगों का मजेदार वर्णन सुनिए इस मजेदार गीत में)

सनन सनन सांय सांय हो रही थी रेल में-२

पहले डिब्बे में बैठे थे सास और ससुर जी, सीता-राम सीता-राम हो रही थी रेल में
सनन सनन सांय सांय हो रही थी रेल में-२

दूजे डिब्बे में बैठे थे जेठ और जेठानी, घूसा-लात घूसा-लात हो रही थी रेल में
सनन सनन सांय सांय हो रही थी रेल में-२

तीजे डिब्बे में बैठे थे ननद और ननदोई जी, सोजा मुन्ने, सोजा मुन्ने रही थी रेल में
सनन सनन सांय सांय हो रही थी रेल में-२

चौथे डिब्बे में बैठे थे बन्ना और बन्नी, आई लव यू, आई लव यू हो रही थी रेल में
सनन सनन सांय सांय हो रही थी रेल में-२

पाँचवे डिब्बे में बैठे थे देवर और बराती
तांका-झाँकी, तांका-झाँकी हो रही थी रेल में

19. चौराहे पे बन्ना उड़ावे पतंग

(बन्ना कितना भी अल्हड़ क्यों न हो, खाली दादा ताऊ के कहने से शादी नहीं करने वाला. कम से कम बन्नी की फोटो तो दिखानी ही पड़ेगी, तभी बात आगे बढ़ेगी)

चौराहे पे बन्ना उड़ावे पतंग

उसके बाबाजी बोले अरे लाडले, तुम्हें बन्नी दिखाऊ करोगे पसंद
चौराहे पर बन्ना उड़ावे पतंग

तुमने बन्नी का फोटो मंगाया नहीं, मेरे कमरे में उसको लगाया नहीं
ऐसे कैसे मैं उसको करूंगा पसंद

चौराहे पे बन्ना उड़ावे पतंग

(ऐसे ही सभी रिश्तेदारों के नामों के साथ गा सकते हैं)

20. बन्ना मेरा फ़ोटो पे मचल गया रे

बन्ना मेरा फ़ोटो पे मचल गया रे

बाबा जी मेरी एक अरज सुन लेना, बन्नी की फ़ोटो मँगवा देना
मैं काली, गोरी देख के अपना ब्याह रचाऊंगा
बन्ना मेरा फ़ोटो पर मचल गया रे

ताऊ जी मेरी एक अरज सुन लेना, बन्नी की फ़ोटो मँगवा देना
मैं लम्बी, नाटी देख के अपना ब्याह रचाऊंगा
बन्ना मेरा फ़ोटो पर मचल गया रे

पापा जी मेरी एक अरज सुन लेना, बन्नी की फ़ोटो मँगवा देना
मैं पढ़ी-लिखी देख के अपना ब्याह रचाऊंगा
बन्ना मेरा फ़ोटो पर मचल गया रे

21. नगर में शोर भारी है न जाने किसकी शादी है

(बन्ने की शादी का पूरे नगर में शोर है, जितने भी बुजुर्ग हैं सब अपनी अपनी मूंछें ऐंठ रहे हैं)

नगर में शोर भारी है न जाने किसकी शादी है

बन्ने के बाबा से पूछों नगर में किसकी शादी है
उन्होंने हँस के फरमाया मेरे पोते की शादी है
नगर में शोर भारी है न जाने किसकी शादी है

बन्ने के ताऊ से पूछों नगर में किसकी शादी है
उन्होंने हँस के फरमाया मेरे भतीजे की शादी है
नगर में शोर भारी है न जाने किसकी शादी है

बन्ने के पापा से पूछों नगर में किसकी शादी है
उन्होंने हँस के फरमाया मेरे बेटे की शादी है
नगर में शोर भारी है न जाने किसकी शादी है

22. प्यारे बन्ने तू शादी रचाना, नहीं शरमाना

(तर्ज़ – फिरकी वाली तू कल फिर आना, बन्ने को समझाया जा रहा है कि अगर पुरानी कन्वेंशनल चीजें न मिलें तो मॉडर्न चीजें अपना लो, उस में कोई शरम की बात नहीं है)

प्यारे बन्ने तू शादी रचाना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
मैंने सोचा था बन्ना सेहरा लेकर आयगा
लेकिन सेहरा न मिला
प्यारे बन्ने तू हैट लगाना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
प्यारे बन्ने तू शादी रचाना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
मैंने सोचा था बन्ना कँगना लेकर आयगा
लेकिन कँगना न मिला
प्यारे बन्ने तू घड़ी लगाना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
प्यारे बन्ने तू शादी रचाना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
मैंने सोचा था बन्ना जामा लेकर आयगा
लेकिन जामा न मिला
प्यारे बन्ने तू सूट पहनना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
प्यारे बन्ने तू शादी रचाना, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होएगी तेरी बड़ी शान से
मैंने सोचा था बन्ना घोड़ी चढ़ कर आयगा
लेकिन घोड़ी न मिली
प्यारे बन्ने तू कार लेके, नहीं शरमाना
तू सारे जहान से, शादी होगी तेरी बड़ी शान से

23. नखराला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया

(बन्ने और बन्नी दोनों पर एक दूसरे के रूप का जादू सर चढ़ कर बोलता है)

नखराला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया
मतवाला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया

रंगरंगीला छैल छबीला ये बन्ना है प्यारा
मीठी-मीठी मुस्की मारे ये तो जादूगारा
रसीला बन्ना बन्नी के मन बस गया
नखराला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया

शीश बने के कलगी सोहे, सेहरे की शोभा न्यारी
घोड़ी ऊपर बैठा बन्ना पहने सूट हजारी
हरियाला बन्ना बन्नी के चित्त चढ़ गया
नखराला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया

सज धज कर है आया बन्ना संग में आए बराती
आगे-आगे नाच रहे हैं बन्ने के सब साथी
अनोखा बन्ना बन्नी पे जादू कर गया
नखराला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया
मतवाला बन्ना बन्नी पे जादू कर गया

24. सावन का महीना बन्ने ने किया शोर

(बन्नी के आने के बाद बन्ने पर किसी का जोर नहीं चलता)
(तर्ज़ - सावन का महीना पवन करे शोर)

सावन का महीना बन्ने ने किया शोर
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर

दादा बराती आये दादी को संग में लाये, जब से बन्नी आयी दादी का चले ना जोर।
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर
सावन का महीना बन्ने ने किया शोर
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर

पापा बराती आये मम्मी को संग में लाये, जब से बन्नी आयी मम्मी का चले ना जोर।
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर
सावन का महीना बन्ने ने किया शोर
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर

भईया बराती आये भाभी को संग में लाये, जब से बन्नी आयी भाभी का चले ना जोर।
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर
सावन का महीना बन्ने ने किया शोर

जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर

जीजा बराती आये जीजी को संग में लाये, जब से बन्नी आयी जीजी का चले ना जोर।
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर
सावन का महीना बन्ने ने किया शोर
जल्दी शादी कर दो मंहगाई का है जोर

(इस गीत का एक बिलकुल अलग वर्ज़न यह भी है)

शादी का महीना बन्ना मचाए शोर
जल्दी से मेरी शादी कर दो मैं तो हो गया बोर
बाबा कहें अभी क्या है जल्दी दादी कहे यह तो पोते की मर्जी
दादी ओ मेरी दादी, दादा पर डालो जोर
जल्दी से मेरी शादी कर दो मैं तो हो गया बोर

पापा कहें अभी क्या है जल्दी मम्मी कहीं यह तो बेटे की मर्जी
मम्मी ओ मेरी मम्मी, पापा पर डालो जोर
जल्दी से मेरी शादी कर दो मैं तो हो गया बोर

जीजा कहीं अभी क्या है जल्दी बहन कहे यह तो भैया की मर्जी
बहना ओ मेरी बहना, जीजा पर डालो जोर
जल्दी से मेरी शादी कर दो मैं तो हो गया बोर

25. बाग लगाये मधुबन में, खिलेंगे फूल मन में

(बन्नी सुन्दर मिले इसके लिए बेचारे बन्ने को क्या क्या तपस्या करनी पड़ी, जरा सुनिए तो)

बाग लगाये मधुबन में, खिलेंगे फूल मन में,
खुशी का दिन आया है।
बन्नी पूछो बन्ने से अपने, कौन तपस्या कीन्ही,
बन्नी तो बड़ी सुन्दर है।
बाबा का अपने हुक्म बजाया, दादी के आज्ञाकारी,
तो बन्नी मिली सुन्दर है।
बाग लगाये मधुबन में, खिलेंगे फूल मन में।
खुशी का दिन आया है।
बन्नी पूछो बन्ने से अपने, कौन तपस्या कीन्ही,

बन्नी तो बड़ी सुन्दर है।
पापा का अपने हुक्म बजाया, मम्मी के आज्ञाकारी,
तो बन्नी मिली सुन्दर है।
बाग लगाये मधुबन में, खिलेंगे फूल मन में।
खुशी का दिन आया है।
बन्नी पूछो बन्ने से अपने, कौन तपस्या कीन्ही,
बन्नी तो बड़ी सुन्दर है।
भैया का अपने हुक्म बजाया, भाभी के आज्ञाकारी,
तो बन्नी मिली सुन्दर है।
बाग लगाये मधुबन में, खिलेंगे फूल मन में।
खुशी का दिन आया है।

26. बन्ना नादान गलियों गलियों में कहता डोले

(बेचारे नादान बन्ने को ढंग से शर्माना भी नहीं आता)

बन्ना नादान गलियों गलियों में कहता डोले

बाबा बराती होगें, ताऊ बराती होगें, पापा बराती होंगे, चाचा बराती होगें
उसी बरात में हैं यार, दूल्हा हमीं बनेगें
बन्ना नादान गलियों गलियों में कहता डोले

फूफा बराती होगें, मौसा बराती होगें, मामा बराती होंगे, भईया बराती होगें
उसी बरात में हैं यार, दूल्हा हमीं बनेगें
बन्ना नादान गलियों गलियों में कहता डोले

27. बन्ना वह गलियां दिखला जहां तेरी बन्नो रहे

(आजकल के बन्ने बन्नी मॉडर्न हैं. बन्नी के सारे गहनों की नाप बन्ने को मालूम है)

बन्ना वह गलियां दिखला जहां तेरी बन्नो रहे
बन्ना झुमका झुमका क्या करें
उसकी बाली का नाप बता जहां तेरे नैना लड़े
बन्ना वह गलियां दिखला जहां तेरी बन्नो रहे

बन्ना कंगना कंगना क्या करें

उसकी चूड़ी का नाप बता जहां तेरे नैना लड़े
बन्ना वह गलियां दिखला जहां तेरी बन्नो रहे

बन्ना झांझर झांझर क्या करें
उसकी पायल का नाप बता जहां तेरे नैना लड़े
वरना वह गलियां दिखला जहां तेरी बन्नो रहे

<u>**बन्नी**</u>

1. दिल लूटने वाले ऐ बन्ने अब मैंने तुझे पहचाना है

(तर्ज़ - दिल लूटने वाले जादूगर अब मैंने तुझे पहचाना है, शादी के बाद चाहे कुछ भी हो, शादी के पहले इस तरह के गीत बहुत अच्छे लगते हैं)

दिल लूटने वाले ऐ बन्ने अब मैंने तुझे पहचाना है,
नजरे तो मिलाकर देख जरा अब हम से क्या शरमाना है।

मैं एक मछरिया बन जाऊँ, और ताल में जाकर छिप जाऊँ,
मैं इक मछुआरा बन जाऊँ, और जाल डालकर ले आऊं
दिल लूटने..
मैं एक चिरैया बन जाऊँ, और डाल में जाकर छिप जाऊँ,
मैं एक बहेलिया बन जाऊँ, और दाना डालकर ले आऊँ।
दिल लूटने..
मैं एक हिरनिया बन जाऊँ, और वन में जाकर छुप जाऊँ,
मैं एक शिकारी बन जाऊँ और नाद सुनाकर ले आऊं।
दिल लूटने ..
मैं एक लाडली बन जाऊँ और मां की गोद में सो जाऊँ,
मैं तेरा बन्ना बन जाऊँ और सेहरा बांधकर ले आऊँ।
दिल लूटने..

2. बन्ना है फूल गुलाबी बन्नी को रंग केसरिया

(शादी के माहौल की इस प्रेम भरी मिठास का क्या कहना?)

बन्ना है फूल गुलाबी बन्नी को रंग केसरिया

सोने की थाली में भोजन परोसा,
सोने की थाली में भोजन परोसा,
खावे फूल गुलाबी खिलावे रंग केसरिया

चांदी का लोटा गंगाजल पानी -2
पीवे फूल गुलाबी, पिलावे रंग केसरिया

बेला चमेली की सेज सजाई -2
सोवे फूल गुलाबी, सुलावे रंग केसरिया

3. शादी का दिन है आया, बटुआ जो खाली पाया

(तर्ज - कजरा मोहब्बत वाला. समझदार बन्नी को इस बात की बड़ी चिंता है कि शादी में फिजूलखर्ची न हो, बन्ना भी समझदार है, उस की बात मान जाता है)

शादी का दिन है आया, बटुआ जो खाली पाया
खर्चा बढ़ेगा मेरी जान, कम से कम बुलाना मेहमान

अरे हरियाले बन्ने, दादा को साथ लाना, दादी रानी को अपनी बातों में टाल आना,
शादी में हलचल होगी, बच्चों की पलटन होगी
शोर बढ़ेगा मेरी जान, कम से कम बुलाना मेहमान

अरे शहजादे बन्ने, पापा को साथ लाना, मम्मी के नखरे बड़े हैं, घर में ही छोड़ आना
शादी में हलचल होगी, बच्चों की पलटन होगी,
खर्चा बढ़ेगा मेरी जान, कम से कम बुलाना मेहमान।
नोट : इस प्रकार नाना-नानी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई मामा-मामी के नाम लेते रहो

और अन्त में– बन्ना कहता है-
दुनिया है मेरे पीछे, लेकिन मैं तेरे पीछे
ऐसा ही करूंगा मेरी जान, कम से कम लाऊंगा मेहमान।

4. सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ

(वधू के आगमन पर बड़ी बूढ़ियाँ यह गीत गाती हैं जो सीता जी स्वागत में गाया गया था)

सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ
ससुराल गलियाँ सुकुमार गलियाँ....-
सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ, सिया धीरे चलो.....

तेरी सास भी आवे तोपे वारी-वारी जावे,
तेरे ससुर तो वारे सोने की गिन्नियाँ...-
सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ, सिया धीरे चलो......

देवर लखन जी आए अपनी गोद बैठाए,
सगुन दे दे भवजिया अपनी गोद बिठाई...-
सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ, सिया धीरे चलो......

अयोध्या वासी भी आए और मंगल गाए,
मैया दे दे बधाई हम तेरे अंगना आए...-
सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ, सिया धीरे चलो......

सीता राम जी की जोड़ी कैसी अजब बनाई,
चरत भरत सारे भाई मिल आए...-
सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ, सिया धीरे चलो.....

देवी और देवता फूल बरसाए,
देख अयोध्या का नजारा देव सब हरषाए...-
सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ, सिया धीरे चलो ससुराल गलियाँ

5 मेरे पूरे हुए अरमान, बन्नी मेरी दुल्हन बनी

(माँ का सब से बड़ा सपना होता है बेटी को दुल्हन के रूप में देखना)

मेरे पूरे हुए अरमान, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।

शीश बन्नी के टीका सोहे, बिन्दिया पे छाई बहार, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।
मेरे पूरे हुए अरमान –
हाथ बन्नी के कंगना सोहे, मेहंदी पे छाई बहार, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।
मेरे पूरे हुए अरमान –
गले बन्नी के हार है सोहे, लॉकेट पे छाई बहार, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।
मेरे पूरे हुए अरमान –
पांव बन्नी के पायल सोहे, बिछुए पे छाई बहार, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।

मेरे पूरे हुए अरमान –
संग बन्नी के बन्ने सोहे, जोड़ी पे छाई बहार, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।
मेरे पूरे हुए अरमान, बन्नी मेरी दुल्हन बनी।

6. दिल के अरमां आज पूरे हो गये

(तर्ज़ - दिल के अरमां आंसुओं में बह गये. अपने कलेजे के टुकड़े को दुल्हन के रूप में देख कर घर के सभी बुजुर्गों के लम्बे समय से सजाए अरमान पूरे हो जाते हैं)

दिल के अरमां आज पूरे हो गये, आज बन्नी को देख कर खुश हो गये।

दादाजी खुशियां मनाने आ गये, दादी के अरमान पूरे हो गये।
आज बन्नी को देख कर खुश हो गये।

नाना जी खुशियां मनाने आ गये, नानी के अरमान पूरे हो गये।
आज बन्नी को देख कर खुश हो गये।

मामा जी मायरा पहनाने आ गये, मामी जी चुन्दर ओढ़ाने आ गई, मामा के अरमान पूरे हो गये।
आज बन्नी को देख कर खुश हो गये।

7. बन्नी को बुलाओ, मोतियों हीरों से सजाओ

(तर्ज : गोरे-गोरे गाल, गाल पर उलझे उलझे बाल, हो तेरा क्या कहना. बन्ना हो या बन्नी जब वे सज कर तैयार होते हैं तो बड़े बूढों को सब से बड़ी चिंता इसी बात की होती है कि उन्हें नजर न लग जाए)

बन्नी को बुलाओ, मोतियों हीरों से सजाओ, नजरिया लागे ना, हो ओ नजरिया लागे ना।
तेरी इस मुस्कान पर वारूं रूप नगर का चांद नजरिया लागे ना।

दादा की प्यारी बन्नी, दादी की दुलारी हैं।
तेरी इस मुस्कान पर वारू रूप नगर का चांद, नजरिया लागे ना, हो नजरिया लागे ना।
बन्नी को बुलाओं, सोने चांदी से सजाओ। नजरिया लागे ना हो नजरिया लागे ना।
नोट: सबके नाम लेते जाओ और गीत बढ़ाते जाओ।

8. ईचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना

(क्या जमाना आ गया है. बन्ना समोसे, जलेबी या कचौड़ी ले कर आता है तो सीधे छज्जे पर बैठी बन्नी को ही खिलाता है, वह भी और सब को ललचा ललचा के)

ईचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना ईचक दाना......
छज्जे ऊपर बन्नी बैठी बन्ना है दिवाना इचक...

रोज सवेरे उठकर बन्ना गर्म समोसे लाता है
दादी को दिखला-दिखला कर बन्नी को खिलाता है
दादी के मुंह पानी आये कैसा है जमाना है ईचक दाना.....
ईचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना ईचक दाना......
छज्जे ऊपर बन्नी बैठी बन्ना है दिवाना ईचक ...

रोज सवेरे उठकर बन्ना गर्म जलेबी लाता है
मम्मी को दिखला-दिखला कर बन्नी को खिलाता है
मम्मी के मुंह पानी आये कैसा है जमाना है इचक दाना.....
ईचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना इचक दाना......
छज्जे ऊपर बन्नी बैठी बन्ना है दिवाना इचक दाना...

रोज सवेरे उठकर बन्ना गर्म कचौड़ी लाता है
भाभी को दिखला-दिखला कर बन्नी को खिलाता है
भाभी के मुंह पानी आये कैसा है जमाना है ईचक दाना.....
ईचक दाना बीचक दाना दाने ऊपर दाना

9. बागों मे बन्ना क्यों जाता है, मालन से इश्क लड़ाता है

(जहां आपस में प्यार होता है वहाँ पज़ेसिवनेस भी आ जाती है और जरा जरा सी बातों पर शक होने लगता है. फिर दूसरे को विश्वास दिलाने के लिए कसमें खानी पड़ती हैं)

बागों मे बन्ना क्यों जाता है, मालन से इश्क लड़ाता है,
बन्नी तेरी कसम, तेरे दिल की कसम मालिन को माता समझता हूँ।

पनघट पर बन्ना क्यों जाता है, पनिहारी से आँख मिलाता है,
बन्नी तेरी कसम, तेरे दिल की कसम पनिहारी को चाची समझता हूँ।

पिक्चर में बन्ना क्यों जाता है, एक्टरनी से आँख मिलाता है,
बन्नी तेरी कसम तेरे दिल की कसम एक्टरनी को साली समझता हूँ।

बन्ना रोज देर से आता है, बन्नी का जिया जलाता है,
बन्नी तेरी कसम, तेरे दिल की कसम, मेरे दिल में तू ही रहती है।

10. ताला दे कर ताली क्यों न लाया रे बन्ने, तूने किस के भरोसे घर छोड़ा रे बन्ने

(बन्नी बड़ी भारी अर्थशास्त्री है, और विश्वास तो उसे किसी पर भी नहीं है. जल्दी से जल्दी घर की अर्थ व्यवस्था को अपने कब्जे में लेना चाहती है)

ताला दे कर ताली क्यों न लाया रे बन्ने, तूने किस के भरोसे घर छोड़ा रे बन्ने।
मैं ने दादी के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी
मैंने नानी के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी,
तेरी दादी का भरोसा मुझे नाहीं रे बन्ने
तेरी नानी का भरोसा मुझे नाही रे बन्ने,
वो तो खावे और लुटावे घर को मेरे बन्ने।
मेरी जल्दी से विदा कर ले चल रे, मैं तो थोड़ा थोड़ा खाऊँ और जोडूं रे बन्ने

मैं ने ताई के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी
मैंने चाची के भरोसे घर छोड़ा री बन्नी,
तेरी ताई का भरोसा मुझे नाहीं रे बन्ने
तेरी चाची का भरोसा मुझे नाही रे बन्ने,
वो तो खावे और लुटावे घर को मेरे बन्ने।
मेरी जल्दी से विदा कर ले चल रे, मैं तो थोड़ा थोड़ा खाऊँ और जोडूं रे बन्ने
(इसी रकार मौसी – बुआ, भाभी – बहना)

11. बन्ना बुलाये, बन्नी नहीं आये, चली आओ जीने से, अटरिया सूनी पड़ी

(बन्ने को हमेशा बन्नी से मिलने की जल्दी रहती है, लेकिन बन्नी की मजबूरियाँ भी वाजिब हैं. बन्ना अपने उतावलेपन में तरह तरह के उपाय सुझा रहा है)

बन्ना बुलाये, बन्नी नहीं आये, चली आओ जीने से, अटरिया सूनी पड़ी,
मैं कैसे आऊँ, बाबा खड़े हैं दादी मेरी जागे रे, अटरिया सूनी पड़ी.

पायल उतार के, लम्बा घूंघट काढ़ के, नैना नीचे डाल के,
बिल्ली चाल आओ रे, अटरिया सूनी पड़ी.
बन्ना बुलाये बन्नी नहीं आये, चली आओ जीने से अटरिया सूनी पड़ी

मैं कैसे आऊं पापा जी खड़े हैं, मम्मी मेरी जागे रे, अटरिया सूनी पड़ीं.
लम्बा घूंघट काढ़ के, पायल उतार के, नैना नीचे डाल के, धीरे धीरे आओ रे अटरिया सूनी पड़ी

12. जय रघुनन्दन, जय सियाराम, रघुपति राघव राजाराम

(आज की लड़कियों के सामने अगर भगवान प्रकट हो जाएँ, तो वे ऐसा कुछ मांगेंगी)
जय रघुनन्दन, जय सियाराम, रघुपति राघव राजाराम।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, ऐसा पति मुझे दे भगवान।

रोज सवेरे चाय बनावे, चाय बनाकर मुझे जगाये,
और कहे चाय पीओ मेरी जान, ऐसा पति मुझे दे भगवान।

दस बजे जब ऑफिस जाये, खाना बनाकर मुझे खिलाए,
और कहे खाना खाओ मेरी जान, ऐसा पति मुझे दे भगवान।

पाँच बजे ऑफिस से आये, और मुझे पिक्चर ले जाय,
खाना बनाना छोड़ो मेरी जान, ऐसा पति मुझे दे भगवान।

पहली तारीख को तनखा लाये, तनखा लाकर मुझे थमाये,
और कहे शॉपिंग करो मेरी जान, ऐसा पति मुझे दे भगवान।

दस बजे वो बिस्तर लगाये, बिस्तर लगाकर मुझे बुलाये,
और कहे अब सोवो मेरी जान, ऐसा पति मुझे दे भगवान।

13. ऊँची–2 पीहर की दीवारें बन्ने तोड़ के रे छोड़ के

(तर्ज - ऊँची-2 दुनिया की दीवारें पिया तोड़ के. कल तक जो नन्ही बच्ची थी वह आज अपने पिता का सुरक्षित घर छोड़ कर अनजान लोगों के बीच रहने आ गई है. उस की भावनाएं सभी लोगों को समझनी चाहिए)

ऊँची-2 पीहर की दीवारें, बन्ने तोड़ के रे छोड़ के,
मैं आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के
मै आई रे तेरे लिये मम्मी पापा छोड़ के।

सास मिली मुझे ससुर मिले, एक नया परिवार मिला,
मात पिता के लाड़ प्यार को छोड़ के जी छोड़ के
मैं आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के।

सासुल का मुझे प्यार मिला, ससुर जी का दुलार मिला,
माता की ममता को भी मैं छोड़ के मुँह मोड़ के,
मैं आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के।

जेठ का मुझे प्यार मिला, जेठानी का दुलार मिला,

भाई भाभी के लाड प्यार को छोड़ के जी छोड़ के,
मै आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के
मैं आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के।

देवर का मुझे प्यार मिला, नन्दी का दुलार मिला,
मम्मी के दुलार को मैं छोड़ के, मुख मोड़ के
मैं आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के।
मैं आई रे तेरे लिये बाबुल का घर छोड़ के।

14. अब सखियों के बीच बन्नी, सुघड़ वर मांगे

(आजकल की लड़कियों का सपना होता है सिंगल फैमिली. पुराने जमाने के लोग भरा पूरा परिवार मांगते थे)

अब सखियों के बीच बन्नी, सुघड़ वर मांगे

सास भी होवे, ससुर भी होवें, होवे पूरा परिवार,
बन्नी सुघड़ वर मांगे
जेठ भी होवे, देवर भी होवे, होवे एक छोटी ननद,
बन्नी सुघड़ वर मांगे
कोठी भी होवे बंगला भी होवे, होवे छोटा सा बाग,
बन्नी सुघड़ वर मांगे
बाइक भी होवे, मारूति भी होवे, होवे बड़ी इक कार, बन्नी सुघड़ वर मांगे।
डॉक्टर होवे इंजीनियर होवे, होवे अति गुणवान,
बन्नी सुघड़ वर मांगे

15. पुत्तर पुत्तर मत कर सासो अब बन्ना यह मेरा है

(नये जमाने की दुल्हन सास को सावधान कर रही है कि बन्ना अब तुम्हारा बेटा नहीं, मेरा साजन है. इस कटु सत्य को स्वीकार करने में ही साँसों की भी भलाई है)

पुत्तर पुत्तर मत कर सासो अब बन्ना यह मेरा है।

जब पीता था दूध की बोतल तब बेटा वह तेरा था,
अब पीवे ये लैमन सोडा, अब ये बन्ना मेरा है।

जब सीखे था क ख ग घ, तब ये बेटा तेरा था,

अब बोले ये फरफर इंगलिस, अब ये बन्ना मेरा है।
पुत्तर पुत्तर मत कर सासो अब बन्ना यह मेरा है।

जब सासो मंदिर ले जाये, तब बेटा वह तेरा है,
जब हमको वो सैर कराये, तब बन्ना वह मेरा है।

जब चलता था हाथ पकड़ के, तब ये बेटा तेरा था,
अब ये डोले फटफटिया पे, अब ये बन्ना मेरा है।
पुत्तर पुत्तर मत कर सासो अब यह साजन मेरा है।

जब राशन में लाइन लगाये, तब बेटा वह तेरा है,
जब हमको पिक्चर दिखलाए तब बन्ना वह मेरा है।

जब कहता था मम्मी मम्मी, तब बेटा वह तेरा था,
अब कहता है डार्लिंग- डार्लिंग, अब साजन यह मेरा है।
पुत्तर पुत्तर मत कर सासो अब यह साजन मेरा है।

16. मेरी बन्नी है नन्हीं नादान, जरा बड़ी हो जाने दो

(दादी, नानी और माँ को हमेशा यही लगता है कि बेटी अभी छोटी है, नादान है, लेकिन दादा, नाना और पिता जमाने को देखते हैं इसलिए व्यवहारिक सोच रखते हैं)

मेरी बन्नी है नन्हीं नादान, जरा बड़ी हो जाने दो।

बाबा जी उनका डोला सजाते,
दादी रानी न जाने दें जरा बड़ी हो जाने दो।

नाना जी उनका डोला सजाते,
नानी रानी न जाने दें, जरा बड़ी हो जाने दो।

मामा जी उनका डोला सजाते,
मामी रानी न जाने दें। जरा बड़ी हो जाने दो।

भैया जी उनका डोला सजाते,
भाभी रानी न जाने दें, जरा बड़ी हो जाने दो।

17. बन्नी मैं तो देखूंगा तू कितनी पढ़ी लिखी आई

(बन्ने बन्नी की प्यार भरी नोंक झोंक, राजस्थानी भाषा में)

बन्नी मैं तो देखूंगा तू कितनी पढ़ी लिखी आई

बन्ने जी मुझको क्या देखो
थारी दादी से ज्यादा सुन्दर आयी
बन्ने जी मुझको क्या देखो
थारी ताई से ज्यादा पढ़ी लिखी आयी।

किरण की छन्नी में बन्ने ने रास रचाई
बन्नी मैं तो देखूंगा तू कितनी सुन्दर आई
बन्नी मैं तो देखूंगा तू कितनी पढ़ी लिखी आई
बन्ने जी मुझको क्या देखो
थारी मम्मी से ज्यादा सुन्दर आयी
बन्ने जी मुझको क्या देखो
थारी चाची से ज्यादा पढ़ी लिखी आयी।

किरण की छन्नी में बन्ने ने रास रचाई
बन्नी मैं तो देखूंगा तू कितनी सुन्दर आई
बन्नी मैं तो देखूंगा तू कितनी पढ़ी लिखी आई
बन्ने जी मुझको क्या देखो
थारी बुआ से ज्यादा सुन्दर आयी
बन्ने जी मुझको क्या देखो
थारी मौसी से ज्यादा पढ़ी लिखी आयी।

18. कोका कोला मिलेगा दो-दो तोला मिलेगा

(ऐसे ऐसे बेतुके और बेताले गीत भी शादी ब्याह में खूब रंग जमाते हैं)

कोका कोला मिलेगा दो-दो तोला मिलेगा, बन्ने की बारात में

मैंने कहा था बन्ने तुम बाबा मत लाना, तुम ताऊ मत लाना, हमारी मुलाकात में
तुमने एक ना मानी, तुम बाबा संग आऐ
तुम ताऊ संग आऐ, हमारी मुलाकात में, फेरे तो ना लूंगी तेरे साथ में

मैनें कहा था बन्ने तुम अकेले ही आना, हमारी मुलाकात में
कोका कोला मिलेगा दो-दो तोला मिलेगा, बन्ने की बारात में

मैंने कहा था बन्ने तुम पापा मत लाना, तुम चाचा मत लाना, हमारी मुलाकात में
तुमने एक ना मानी, तुम पापा संग आऐ,
तुम चाचा संग आऐ, हमारी मुलाकात में, फेरे तो ना लूंगी तेरे साथ में

मैनें कहा था बन्ने तुम अकेले ही आना, हमारी मुलाकात में
कोका कोला मिलेगा दो-दो तोला मिलेगा, बन्ने की बारात में
मैंने कहा था बन्ने तुम मामा मत लाना, तुम फूफा मत लाना, हमारी मुलाकात में
तुमने एक ना मानी, तुम मामा संग आऐ
तुम फूफा संग आऐ, हमारी मुलाकात में, फेरे तो ना लूंगी तेरे साथ में

मैनें कहा था बन्ने तुम अकेले ही आना, हमारी मुलाकात में
कोका कोला मिलेगा दो-दो तोला मिलेगा, बन्ने की बारात में
मैंने कहा था बन्ने तुम यार मत लाना, तुम दोस्त मत लाना, हमारी मुलाकात में
तुम मेरी ही मानी, तुम अकेले ही आये, हमारी मुलाकात में
अब फेरे मैं लूंगी तेरे साथ में।
कोका कोला मिलेगा दो-दो तोला मिलेगा, बन्ने की बारात में

19. छज्जे ऊपर बन्ना बैठा दिल खोल के

(बन्ना बन्नी को टेलीफोन कर के बुलाना चाह रहा है, तो बुजुर्ग लोग समझा रहे हैं कि उसे ब्याह कर लाओ)

छज्जे ऊपर बन्ना बैठा दिल खोल के, बन्नी को बुलाये टेलीफोन कर के
कमरे में से दादी बोली हंस-हंस के
बन्नी नहीं आये टेलीफोन सुन के
जाओ जी बन्ने तो घोड़ी चढ़ के, लाओ जी बन्ने गठजोड़ा कर के
छज्जे ऊपर बन्ना बैठा दिल खोल के, बन्नी को बुलाये टेलीफोन कर के

कमरे में से मम्मी बोली हंस-हंस के
बन्नी नहीं आये टेलीफोन सुन के
जाओ जी बन्ना तो घोड़ी चढ़ के, लाओ जी बन्ने गठ जोड़ा कर के
छज्जे ऊपर बन्ना बैठा दिल खोल के, बन्नी को बुलाये टेलीफोन कर के

कमरे में से भाभी बोली हंस-हंस के
बन्नी नहीं आये टेलीफोन सुन के
जाओ जी बन्ने तो घोड़ी चढ़ के, लाओ जी बन्ने गठ जोड़ा कर के

20. बन्नी धीरे चलो ससुराल गलियाँ

(बन्नी को ससुराल में किस तरह चलना चाहिए इस बात का शऊर सिखाया जा रहा है)

बन्नी धीरे चलो ससुराल गलियाँ

बन्नी बेंदी सम्हारेगीं वही सखियाँ,
जिनके गोरे गोरे गाल, रसीली अंखियाँ, जिनकी नरम कलाई, हरेरी चूड़ियाँ
बन्नी धीरे चलो ससुराल गलियाँ

बन्नी हरवा सम्हारेगीं वही सखियाँ
जिनके गोरे गोरे गाल, रसीली अंखियाँ, जिनकी नरम कलाई, हरेरी चूड़ियाँ
बन्नी धीरे चलो ससुराल गलियाँ

बन्नी कुंडल सम्हारेगीं वही सखियाँ
जिनके गोरे गोरे गाल, रसीली अंखियाँ, जिनकी नरम कलाई, हरेरी चूड़ियाँ
बन्नी धीरे चलो ससुराल गलियाँ

बन्नी चूनर सम्हारेगीं वही सखियाँ
जिनके गोरे गोरे गाल, रसीली अंखियाँ, जिनकी नरम कलाई, हरेरी चूड़ियाँ

21. बन्नी हमें कॉलेज के पास मिलना

(पुराने बन्नी गीतों में मॉडर्न तड़का लग गया है. कुएँ और बागों में मिलने वाली बन्नी अब कॉलेज के पास मिलती है)

बन्नी हमें कॉलेज के पास मिलना -२

मैं तो लाऊंगा बन्नी तुम्हारी बेंदी
बन्नी हमें लड़ियाँ सम्हार मिलना, बन्नी हमें–

मैं तो लाऊंगा बन्नी तुम्हारे झाले
बन्नी हमें लटकन सम्हार मिलना, बन्नी हमें—

मैं तो लाऊंगा बन्नी तुम्हारे कंगना
बन्नी हमें चुड़ियाँ सम्हार मिलना, बन्नी हमें––

मैं तो लाऊंगा बन्नी तुम्हारी चुनरी

बन्नी हमें साड़ी सम्हार मिलना, बन्नी हमें——

मैं तो लाऊंगा बन्नी तुम्हारे बिछुआ
बन्नी हमें पायल सम्हार मिलना, बन्नी हमें——

मैं तो लाऊंगा बन्नी तुम्हारा डोला
बन्नी हमें एक दम तैयार मिलना
बन्नी हमें कॉलेज के पास मिलना -२

22. बन्ने मेरे घर आना जमाई बन के

(बन्नी का सबसे बड़ा अरमान यही कि बन्ना अपनी कमाई से उसके लिए गहने बनवाए और अपने हाथों से उसे पहनाए)

बन्ने मेरे घर आना जमाई बन के
बन्ने बेंदी गढ़वाना कमाई करके
दोनों हाथों से पहनाना अरमान भर के
बन्ने मेरे घर आना जमाई बन के

बन्ने कँगना गढ़वाना कमाई करके
दोनों हाथों से पहनाना अरमान भर के
बन्ने मेरे घर आना जमाई बन के

बन्ने झुमका गढ़वाना कमाई करके
दोनों हाथों से पहनाना अरमान भर के
बन्ने मेरे घर आना जमाई बन के

बन्ने बिछुआ गढ़वाना कमाई करके
दोनों हाथों से पहनाना अरमान भर के
बन्ने मेरे घर आना जमाई बन के

23. मानो बन्ने मानो बराबर लडूंगी

(ज्यादा पढ़ी लिखी बहू लाने में अब यह भी खतरा है)

मानो बन्ने मानो बराबर लडूंगी
कोर्ट लडूंगी हाई कोर्ट लडूगी, दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट में दावा करूंगी
ससुर जी को भेजो ज़रा बात करूंगी

सासु जी का मन्दिर जाना बन्द करूंगी
मानो बन्ने मानो बराबर लड़ूंगी
कोर्ट लड़ूंगी हाई कोर्ट लड़ूंगी,दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट में दावा करूंगी
जेठ जी को भेजो जरा बात करूंगी,
जेठानी का झगड़ा करना बन्द करूंगी,
कोर्ट लड़ूंगी हाई कोर्ट लड़ूंगी, दिल्ली के के सुप्रीम कोर्ट में दावा करूंगी
मानो बन्ने मानो बराबर लड़ूंगी
देवर जी को भेजो जरा बात करूंगी,
देवरानी का पीहर जाना बन्द करूंगी
कोर्ट लड़ूंगी हाई कोर्ट लड़ूंगी, दिल्ली के के सुप्रीम कोर्ट में दावा करूंगी
मानो बन्ने मानो बराबर लड़ूंगी
नन्दोई जी को भेजो जरा बात करूंगी,
ननद जी का चुगली खाना बन्द करूंगी
कोर्ट लड़ूंगी हाई कोर्ट लड़ूंगी, दिल्ली के के सुप्रीम कोर्ट में दावा करूंगी
मानो बन्ने मानो बराबर लड़ूंगी

24. दइया ओ दइया बन्नी के नजर लागी

(तर्ज़ - दैया री दैया लाज मोहे लागे, पायल मोरी बाजे सास मोरी जागे. सजने के बाद बन्नी को नजर न लग जाए इसलिए घर की बुजुर्ग महिलाएँ काजल की डिब्बी तैयार रखती हैं)

दइया ओ दइया बन्नी के नजर लागी-2
मैं डिबिया काजल की लेकर भागी

शीश बन्नी के टीका सोहे, कान बन्नी के कुण्डल सोहे
दइया ओ दइया झूमर पे नजर लागी,
दइया ओ दइया झुमके पे नजर लागी, मैं डिबिया ....

गले बन्नी के हरवा सोहे, हाथ बन्नी के कंगना सोहे
दइया ओ दइया लटकन पे नजर लागी
दइया ओ दइया चूड़े पे नजर लागी, मैं डिबिया ....

कमर बन्नी के तगड़ी सोहे, पांव बन्नी के पायल सोहे
दइया ओ दइया गुच्छे पे नजर लागी
दइया ओ दइया बिछुवे पे नजर लागी, मैं डिबिया.....

अंग बन्नी के साड़ी सोहे, संग बन्नी के बन्ना सोहे

दइया ओ दइया, चूनर पे नजर लागी
दइया ओ दइया जोड़ी पे नजर लागी, मैं डिबिया.....

दइया ओ दइया बन्नी के नजर लागी-2
मैं डिबिया काजल की लेकर भागी

25. चन्द्रमुखी छज्जे पै खड़ी, कहीं मेरा बन्ना देखा है

(बन्नी मधुर कल्पनाओं में खोई हुई अपनी सखियों से पूछ रही है कि उसका बन्ना कैसा है. आजकल के प्री वेडिंग शूट कराने वाले बच्चे उस कन्या की मनस्थिति को नहीं समझ सकते जिस ने अभी तक अपने बन्ने को देखा ही नहीं है)

चन्द्रमुखी छज्जे पै खड़ी, कहीं मेरा बन्ना देखा है?
देखा है बन्नी देखा है, हमने माली की गलियों में देखा है।
वो तो गजरा गुंथा रहा सुन्दर-सा,
बांका गोरा बदन मुख चन्दा-सा ।।
चन्द्रमुखी छज्जे पै खड़ी, कहीं मेरा बन्ना देखा है?

देखा है बन्नी देखा है, हमने सुनारे की गलियों में देखा है।
वो तो कंगन गढ़ा रहा सुन्दर-सा,
वाके बांके नयन मुख बटुआ-सा ।।
चन्द्रमुखी छज्जे पै खड़ी, कहीं मेरा बन्ना देखा है?

देखा है बन्नी देखा है, हमने बजाजी की गलियों में देखा है।
वो तो लहंगा खरीद रहा सुंदर सा,
वाकी तिरछी नजर, मुख भोला-सा।।

26. आलू-मटर वाले ने, गलियों में जा के शोर किया रे

(कन्या पक्ष वालों को जब मौका मिलता है, वर पक्ष के लोगों की खिंचाई करने से नहीं चूकते)

आलू-मटर वाले ने, गलियों में जा के शोर किया रे

बन्नी के बाबा बड़े कमाऊ, भर भर दोने लाते है
बन्नी की दादी बड़ी चटोरी, भर भर दोने खाती है
चाटा पत्ता फेंक दिया, गलियों में जा के शोर किया रे
आलू-मटर वाले ने, गलियों में जा के शोर किया रे

बन्नी के ताऊ बड़े कमाऊ, भर भर दोने लाते है
बन्नी की ताई बड़ी चटोरी, भर भर दोने खाती है
चाटा पत्ता फेंक दिया, गलियों में जा के शोर किया रे
आलू-मटर वाले ने, गलियों में जा के शोर किया रे

बन्नी के पापा बड़े कमाऊ, भर भर दोने लाते है
बन्नी की मम्मी बड़ी चटोरी, भर भर दोने खाती है
चाटा पत्ता फेंक दिया, गलियों में जा के शोर किया रे
(इसी प्रकार फूफा - बुआ, चाचा - चाची, जीजा - जीजी, भईया - भाभी)

27. नीचे पान की दुकान, ऊपर बन्नी का मकान

(मजाक चाहे कितने भी बेसिरपैर के क्यों न हों, साथ मिल कर गाने में बहुत अच्छे लगते हैं, और किसी फ़िल्मी गाने की धुन पर हों तो क्या कहना)

नीचे पान की दुकान, ऊपर बन्नी का मकान, बोलो बोलो मेरी जान, किराया कितना

मैंने खाना बनाया तुम्हारे लिए, सब खा गए मेहमान, जिनकी जान न पहचान,
बोलो बोलो मेरी जान, किराया कितना
नीचे पान की दुकान, ऊपर बन्नी का मकान, बोलो बोलो मेरी जान, किराया कितना

मैंने पानी मँगाया तुम्हारे लिए, सब पी गए मेहमान, जिनकी जान न पहचान,
बोलो बोलो मेरी जान किराया कितना
नीचे पान की दुकान, ऊपर बन्नी का मकान, बोलो बोलो मेरी जान, किराया कितना

मैंने बीड़े लगाए तुम्हारे लिए, सब खा गए मेहमान, जिनकी जान न पहचान
बोलो बोलो मेरी जान किराया कितना
नीचे पान की दुकान, ऊपर बन्नी का मकान, बोलो बोलो मेरी जान, किराया कितना

मैंने सेज बिछाया तुम्हारे लिए, सब सो गए मेहमान, जिनकी जान न पहचान
बोलो बोलो मेरी जान किराया कितना
नीचे पान की दुकान, ऊपर बन्नी का मकान, बोलो बोलो मेरी जान, किराया कितना

28. तेरी पायल की मीठी आवाज

(ससुराल जाने से पहले हर माँ अपनी बेटी को सीख देती है कि ससुराल में सब से मिल कर रहना)

तेरी पायल की मीठी आवाज, बन्नी जरा धीरे चलो

सास ससुर से मिल कर रहना, मिलकर रहना, मिलकर रहना
पाओगी मां जैसा प्यार, बन्नी जरा धीरे चलो

जिठानी जी से मिलकर रहना, मिलकर रहना, मिलकर रहना
पाओगी भाभी जैसा प्यार, बन्नी जरा धीरे चलो

ननद रानी से मिलकर रहना, मिलकर रहना, मिलकर रहना
पाओगी बहना जैसा प्यार, बन्नी जरा धीरे चलो

पास पड़ोसी से मिलकर रहना, मिलकर रहना, मिलकर रहना
पाओगी सखियों जैसा प्यार, बन्नी जरा धीरे चलो

29. कहो राजा जनक कहो सिया प्यारी

(घर की बड़ी बूढ़ियाँ वैवाहिक गीतों में भी राम सीता और राजा जनक का उल्लेख करना नहीं भूलतीं. ऐसा करना बेटी के सुहाग के लिए शुभ माना जाता है)

कहें राजा जनक कहो सिया प्यारी

किन तेरी गोद भरी मेवा से, किन तेरी रूच-रूच मांग सवांरी
बाबा मेरी गोद भरी मेवा से, दादी रानी रूच-रूच मांग सवांरी
कहें राजा जनक कहो सिया प्यारी

किन तेरी गोद भरी मेवा से, किन तेरी रूच-रूच मांग सवांरी
पापा मेरी गोद भरी मेवा से, मम्मी रानी रूच-रूच मांग सवांरी
कहें राजा जनक कहो सिया प्यारी

किन तेरी गोद भरी मेवा से, किन तेरी रूच-रूच मांग सवांरी
भईया मेरी गोद भरी मेवा से, भाभी रानी रूच-रूच मांग सवांरी
कहें राजा जनक कहो सिया प्यारी

30. बन्नी उड़ी उड़ी डोले, बन्नी फूली फूली डोले

(बन्नी के मन में ब्याह का उत्साह भी है लेकिन भविष्य की आशंकाएं भी बहुत हैं)

बन्नी उड़ी उड़ी डोले, बन्नी फूली फूली डोले
मेरी दूरों से आएगी बारात, मुझे तो ससुराल जाना
वहाँ बाबा नहीं होगें वहाँ दादी नहीं होगीं

मेरे कैसे कटेगें दिन-रात, मुझे तो ससुराल जाना

बन्नी उड़ी उड़ी डोले, बन्नी फूली फूली डोले
मेरी दूरों से आएगी बारात, मुझे तो ससुराल जाना
वहाँ पापा नहीं होगें वहाँ मम्मी नहीं होगीं
मेरे कैसे कटेगें दिन-रात, मुझे तो ससुराल जाना

बन्नी उड़ी उड़ी डोले, बन्नी फूली फूली डोले
मेरी दूरों से आएगी बारात, मुझे तो ससुराल जाना
वहाँ भईया नहीं होगें वहाँ भाभी नहीं होगीं
मेरे कैसे कटेगें दिन-रात, मुझे तो ससुराल जाना

बन्नी उड़ी उड़ी डोले, बन्नी फूली फूली डोले
मेरी दूरों से आएगी बारात, मुझे तो ससुराल जाना
वहाँ जीजा नहीं होगें वहाँ दीदी नहीं होगीं
मेरे कैसे कटेगें दिन-रात, मुझे तो ससुराल जाना

31. बन्नी दूर खेलन मत जइयो, विदेशी तुझे ले जाएगें

(विवाह गीतों की एक ख़ास बात यह होती है कि उन में रिपीटेशन बहुत होता है. लेकिन इस का लाभ यह होता है कि इन्हें याद करना बड़ा आसान हो जाता है, दो चार लाइन याद हों तो पूरा गीत बन जाता है)

बन्नी दूर खेलन मत जइयो, विदेशी तुझे ले जाएगें
मैं तो बैठूँगी बाबा की गोदी, विदेशी मुझे न पाएगें
बन्नी बाबा वचन हार आए, विदेशी तुझे ले जाएगें

बन्नी दूर खेलन मत जइयो, विदेशी तुझे ले जाएगें
मैं तो बैठूँगी ताऊ की गोदी, विदेशी मुझे न पाएगें
बन्नी ताऊ वचन हार आए, विदेशी तुझे ले जाएगें

बन्नी दूर खेलन मत जइयो, विदेशी तुझे ले जाएगें
मैं तो बैठूँगी पापा की गोदी, विदेशी मुझे न पाएगें
बन्नी पापा वचन हार आए, विदेशी तुझे ले जाएगें

बन्नी दूर खेलन मत जइयो, विदेशी तुझे ले जाएगें
मैं तो बैठूँगी चाचा की गोदी, विदेशी मुझे न पाएगें

बन्नी चाचा वचन हार आए, विदेशी तुझे ले जाएगें

32. बड़ी दूर से आया बन्ना, लेकिन बन्नी न बोले

(पुराने जमाने की बन्नी बड़ी शर्मीली होती थीं, बन्ना मिलने आए तो कुछ बोलती नहीं थीं. अब जमाना उल्टा है. बन्नी अपनी सहेलियों के साथ मिलने आती है तो बेचारा बन्ना कुछ बोल नहीं पाता)

बड़ी दूर से आया बन्ना, लेकिन बन्नी न बोले
बन्नी का कजरा बोले, बन्नी का गजरा बोले,
बन्नी की मेंहदी बोले लेकिन बन्नी न बोले. बड़ी दूर–

बन्नी के बाबा बोले, बन्नी के ताऊ बोले,
बन्नी के पापा बोले लेकिन बन्नी न बोले. बड़ी दूर–

बन्नी की चुनरी बोले, बन्नी की मुदरी बोले,
बन्नी का झूमर बोले लेकिन बन्नी न बोले. बड़ी दूर–

बन्नी के भईया बोले, बन्नी के जीजा बोले,
बन्नी के चाचा बोले लेकिन बन्नी न बोले. बड़ी दूर–

बन्नी की अदाएँ बोले, बन्नी की निगाहें बोले
बन्नी की हँसी बोले लेकिन बन्नी न बोले. बड़ी दूर—

बन्नी के मामा बोले,बन्नी के फूफा बोले,
बन्नी के मौसा बोले लेकिन बन्नी न बोले.
बड़ी दूर से आया बन्ना लेकिन बन्नी न बोले

33. अब महलों के बीच बन्नी ने केश सुखाये

(कल की छोटी बच्ची एकदम से बड़ी हो जाती है. जब वह अपने लम्बे लम्बे केश धो कर सुखाती है तो घर के लोगों को अचानक से यह चिंता सताने लगती है कि अब इस के लिए वर ढूँढना शुरू कर देना चाहिए)

अब महलों के बीच बन्नी ने केश सुखाये

अब बाबा सुघर वर ढूँढों, अब ताऊ नवल वर ढूंढो
दादी लेगीं कन्यादान, ताई लेगीं कन्यादान बन्नी ने केश सुखाये
अब महलों के बीच बन्नी ने केश सुखाये

अब पापा सुघर वर ढूँढों, अब चाचा नवल वर ढूंढो
मम्मी लेगीं कन्यादान, चाची लेगीं कन्यादान बन्नी ने केश सुखाये
अब महलों के बीच बन्नी ने केश सुखाये

अब भैया सुघर वर ढूँढों, अब जीजा नवल वर ढूंढो
भाभी लेगीं कन्यादान, दीदी लेगीं कन्यादान बन्नी ने केश सुखाये
अब महलों के बीच बन्नी ने केश सुखाये

34. चिक डाल दो कमरे में बन्नी कैरम खेलेगी

(बन्ना बन्नी कैरम खेलने बैठते हैं तो जीत हार पर बड़ी खतरनाक शर्तें तय होती हैं)

चिक डाल दो कमरे में बन्नी कैरम खेलेगी

अगर मैं बाजी जीती तो सुबह का नाश्ता बना देना
चिक डाल दो कमरे में बन्नी कैरम खेलेगी

अगर मैं बाजी जीती तो तुम सारे कपड़े धो देना
चिक डाल दो कमरे में बन्नी कैरम खेलेगी

अगर मैं बाजी जीती तो सुबह के बर्तन धो देना
चिक डाल दो कमरे में बन्नी कैरम खेलेगी

अगर मैं बाजी जीती तो रात का बिस्तर लगा देना
चिक डाल दो कमरे में बन्नी कैरम खेलेगी

35. छोटी सी बन्नी पारवती शिव पूजा करने जाती है

(विवाह के गीतों में राम सीता और शिव पार्वती के गीत गा कर भगवान को प्रसन्न करने का प्रयास भी किया जाता है)

छोटी सी बन्नी पारवती शिव पूजा करने जाती है

बाबा के बागों जाती, वो फूल तोड़कर लाती है
फूलों का हार बना करके शिव शंकर को पहनाती है
छोटी सी बन्नी पारवती शिव पूजा करने जाती है

पापा के बागों जाती, वो फूल तोड़कर लाती है

फूलों का हार बना करके शिव शंकर को पहनाती है
छोटी सी बन्नी पारवती शिव पूजा करने जाती है

चाचा के बागों जाती, वो फूल तोड़कर लाती है
फूलों का हार बना करके शिव शंकर को पहनाती है
छोटी सी बन्नी पारवती शिव पूजा करने जाती है

36. लीपो आँगना, बाँधो बाँधना आज बन्नी की शादी है

(आजकल की पीढ़ी के लोग नहीं जानते होंगे कि पहले जब कच्चे घर और मिटटी के आंगन होते थे तो पर्व त्यौहारों पर उन्हें मिटटी से लीपा जाता था. शुभ अवसरों पर वन्दनवार बाँधी जाती थीं)

लीपो आँगना, बाँधो बाँधना आज बन्नी की शादी है

बन्ने के बाबा ने खत लिख भेजा, कैसी बन्नी ढूँढी है
पढ़ी-लिखी होशियार बहुत है, बोली मधुर रसीली है
लीपो आँगना, बाँधो बाँधना आज बन्नी की शादी है

बन्ने के ताऊ ने खत लिख भेजा, कैसी बन्नी ढूँढी है
पढ़ी-लिखी होशियार बहुत है, बोली मधुर रसीली है
लीपो आँगना, बाँधो बाँधना आज बन्नी की शादी है

बन्ने के पापा ने खत लिख भेजा, कैसी बन्नी ढूँढी है
पढ़ी-लिखी होशियार बहुत है, बोली मधुर रसीली है
लीपो आँगना, बाँधो बाँधना आज बन्नी की शादी है

बन्ने के चाचा ने खत लिख भेजा, कैसी बन्नी ढूँढी है
पढ़ी-लिखी होशियार बहुत है, बोली मधुर रसीली है
लीपो आँगना, बाँधो बाँधना आज बन्नी की शादी है

37. हम तो हो गए हैरान लाड़ो तेरे लिए

(एक छोटा सा मजेदार गीत, बेचारे सीधे लड़के को लल्लू कहा जा रहा है)

हम तो हो गए हैरान लाड़ो तेरे लिए...

आगरा भी ढूँढा लाड़ो लखनऊ भी ढूँढा
ढूँढा – ढूँढा रे गुडगाँव लाड़ो तेरे लिए...

सारे कॉलिज के लड़के भी ढूँढे
ढूँढा – ढूँढा ये लल्लू लाड़ो तेरे लिए...

बिन्दी भी देंगे लाड़ो टीका भी देंगे
देंगे- देंगे ये झूमर लाड़ो तेरे लिए...

38. मेरी बन्नी का रचा है ब्याह सखी री मंगल गाओ

(शादी ब्याह के सारे गीत मंगल कामनाओं से भरे ही होते हैं, किसी में अनिष्ट की आशंकाएँ नहीं होतीं. विशेषकर बन्नी को सजाते समय तो मंगल गीत ही गाए जाते हैं)

मेरी बन्नी का रचा है ब्याह सखी री मंगल गाओ
शीश बन्नी के टीका सोहे
नाक बन्नी के बेसर सोहे
झूमर पै इतर लगाओ सखी री मंगल गाओ
मेरी बन्नी का रचा है ब्याह सखी री मंगल गाओ

कान बन्नी के कुण्डल सोहे
हाथ बन्नी के मेंहदी सोहे
कंगन पै इतर लगाओ सखी री मंगल गाओ
मेरी बन्नी का रचा है ब्याह सखी री मंगल गाओ

गले बन्नी के हरवा सोहे
पैर बन्नी के पायल सोहे
बिछुवों पै इतर लगाओ सखी री मंगल गाओ
मेरी बन्नी का रचा है ब्याह सखी री मंगल गाओ

अंग बन्नी के साड़ी सोहे
संग बन्नी के बन्ना सोहे
जोड़े पै इतर लगाओ सखी री मंगल गाओ
मेरी बन्नी का रचा है ब्याह सखी री मंगल गाओ

39.खिड़की से झांकना छोड़ दे

(एक समय था जब शादी तय होने के बाद लड़कियों के घूमने फिरने और यहाँ तक कि खिड़की से झाँकने पर भी रोक लग जाती थी)

मेरा जिया लहर लहर लहराए रे लाड़ली।
खिड़की से झांकना छोड़ दे, अरी बन्नो गलियों का घूमना छोड़ दे।

तूने झूमर तो पहना बड़े शौक से, मुझे नथ पहराने दे लाड़ली ।
खिड़की से झांकना छोड़ दे, अरी बन्नो गलियों का घूमना छोड़ दे।

तूने मेंहदी लगाई बड़े शौक से, मुझे कंगन पहराने दे लाड़ली ।
खिड़की से झांकना छोड़ दे, अरी बन्नो गलियों का घूमना छोड़ दे।

तूने चुनरी तो ओढ़ी बड़े शौक से, मुझे घूंघट संवारने दे लाड़ली ।
खिड़की से झांकना छोड़ दे, अरी बन्नो गलियों का घूमना छोड़ दे।

सोहर, जच्चा गीत

1. रुपइया मांगे ननदी लाल की बधाई

(भाभी के बेटा हुआ है तो ननदी बधाई का नेग मांगने पहुँच गई. वह रुपया मांग रही है तो भाभी उसको अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी और फिर अँगूठा दिखा रही है)

रुपइया मांगे ननदी लाल की बधाई
ये तो रुपइया मेरे ससुर की कमाई, अठ्ठनी ले जा ननदी लाल की बधाई

अठ्ठनी मांगे ननदी लाल की बधाई
यह तो अठन्नी मेरे जेठ की कमाई, चवन्नी ले जा ननदी लाल की बधाई

चवन्नी मांगे ननदी लाल की बधाई
ये तो चवन्नी मेरे देवर की कमाई, दुअन्नी ले जा ननदी लाल की बधाई

ये तो दुअन्नी मेरे बच्चे का खिलौना
सिंगट्टा ले जा ननदी लाल की बधाई

यह तो सिंगट्टा मेरे हाथ की है शोभा
दो डंडे ले जा ननदी लाल की बधाई

2. कैसी हठी ये ननदिया कंगने पे मचल गई

(लाल के होने की खुशी में ननदी नेग में कंगना मांग रही है. कंगना जच्चा रानी के मायके से आया है, सो कैसे दे दे. लेकिन वह कंगना लेने पर ही मचल गई है. अंत में गुस्से से जच्चा रानी कंगना उतार के आंगन में फेंक देती हैं)

कैसी हठी ये ननदिया कंगने पे मचल गई
यह कंगना मेरे पीहर से आयो
बाबुल ने हीरा मोती जड़ायो
कैसे दे दूं मैं ये कंगना, कंगने पे मचल गई

सैंया हमारे लाख समझाए, ला दूंगा तोहे नया गड़ाए
दे दो मेरी रानी कंगना, कंगने पे मचल गई
कंगना उतार अंगनैया में फेंका
ले जा भैया की प्यारी कंगना, कंगने पर मचल गई

अब मत अइयो मोरे अंगना, कंगने पे मचल गई
कंगना पहन कर ननदी बोली,
जुग जुग जिए तेरो ललना, कंगने पे मचल गई
रोज-रोज आउ तेरे अंगना, कंगने पे मचल गई

3. सैंया की ऊंची अटरिया दैया मर गई मर गई

(अटरिया - अटारी , अट्टालिका) (ससुराल में आ कर बेचारी आफत में ही पड़ गई. बड़े घर की साफ़ सफाई में भी तो पूरी आफत है, रोटी पकाने में उंगलियाँ जली जा रही हैं, और कहीं बच्चा पैदा करना पड़ गया तब तो जान मुश्किल में पड़ जाएगी)

सैया की ऊंची अटरिया दैया मर गई मर गई
सास कहे बहू झाड़ू कर लो पोछा कर लो
पिया कहे मेरी रामकली की कमर लचक गई
सैया की ऊंची अटरिया दैया मर गई मर गई

सास कहे बहू रोटी कर लो पूरी कर लोगों
पिया कहे मेरी रामकली की उंगली जल गई

सास कहे बहू पिक्चर देखो सिनेमा देखो
पिया कहीं मेरी रामकली आवारा हो गई

सास कहे बहू क्रीम लगा लो पाउडर लगा लो
पिया कहे मेरी रामकली फैशन में पड़ गई
सैया की ऊंची अटरिया दैया मर गई मर गई

सास कहे बहू बेटा कर लो बेटी कर लो
पिया कहे मेरी रामकली आफत में पड़ गई
(पिया कहे मेरी रामकली की फिगर बिगड़ गई)
सैया की ऊंची अटरिया दैया मर गई मर गई

4. छम छम छनन अटरिया चढ़ गई, ले गोदी में राजकुमार

(लाल के होने की खुशी में सब खुश हैं. सास थाल बजाने की रस्म पूरी कर रही हैं और ननद सूरज की पूजा करने की. जेठानी पलंग बिछा रही हैं और उनका बेटा नवजात शिशु को खिला रहा है. सब को नेग दिया जाएगा)

छम छम छनन अटरिया चढ़ गई, ले गोदी में राजकुमार,
ले गोदी में राजकुमार, हां गोदी में राजकुमार,
छम छम छनन अटरिया चढ़ गई ले गोदी में राजकुमार।
सासू आवे थाल बजावे, नेग देवो जच्चा,
रंग महल में बजे बधाई, जिये तेरा बच्चा,
छमछम छनन –
नन्दी आवे सूरज पूजावे, नेग देवो जच्चा,
रंग महल में बजे बधाई, जिये तेरा बच्चा
छमछम छनन –
जिठनी आवे पलंग बिछावे, नेग देवो जच्चा,
रंग महल में बजे बधाई, जिये तेरा बच्चा,
छमछम छनन –
जेठूता आवे लल्ला खिलावे, नेग देवो जच्चा,
रंग महल में बजे बधाई, जिये तेरा बच्चा,
छम छम छनन अटरिया चढ़ गई, ले गोदी में राजकुमार
ले गोदी में राजकुमार ले गोदी में राजकुमार।

5. शुभ दिन हुए नन्दलाल ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी

(बेटा होने पर ननदी के घर बुलावा भेज रही हैं और साथ में बता रही हैं कि मेरे यहाँ मामूली सामान ले कर मत आना, सब कुछ बढ़िया से बढ़िया होना चाहिए. और आना भी दो दिन को ही)

शुभ दिन हुए नन्दलाल ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।
झबले और टोपी ननदी, एक मत लइयो
मेरे यहाँ सूटो का रिवाज ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।
शुभ घड़ी हुए नन्दलाल ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।
रबर के खिलोने ननदी एक मत लइयो
मेरे यहाँ चांदी का रिवाज ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।
फल और मिठाई ननदी एक मत लइयो,
मेरे यहाँ मेवे का रिवाज ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।
मास मत अइयो, दो मास मत अइयो,
मेरे यहाँ दो दिन का रिवाज ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।
बेटा मत लइयो अपनी बेटी मत लइयो
मेरे यहाँ अकेले का रिवाज ननदी, मेरे घर आना जरूर ननदी।

6. पहना जड़ाऊदार बेंदा, लालन के भये में

(लाल के होने की ख़ुशी में जड़ाऊदार मांग टीका पहना तो लालची ननदी आ पहुँची और वही मांगने लगी. पति और ससुर भी उसी का पक्ष ले रहे हैं. ऐसे में गुस्सा आना तो स्वाभाविक है)

पहना जड़ाऊदार बेंदा, लालन के भये में,
मांगे ननद रानी बेंदा लालन के भये में।

खबर सुनत ननदी दौड़ के आई,
हमका दिखा दो भतीजवा, लालन के भये में।

अचरा डार के ललनवा छिपायो,
हमरे भई ननदी बिटिया, लालन के भये में।

जाके ननदरानी भैया से उरझी,
भैया दिलाय देव बेंदा, लालन के भए में।

अंगना में ठाढ़े ससुर समझावे
दूसरो गढ़ाय देवे बेंदा लालन के भए में।

बेंदा उतार भाभी अंगना में फेंको,
ले जा भैया की प्यारी बेंदा, लालन के भए में।

बेंदा पहन ननदी भाभी से बोली,

जुग जुग जिये तेरो ललना, लालन के भए में।

7. ओंठ सोंठ के लड्डू मेरे मायके से आए

(बच्चे के जन्म के बाद जच्चा को तरह तरह के मेवे और घी से बने पकवान खिलाए जाते हैं. सास, ननद, जेठानी भी उन को देख कर ललचाती हैं, लेकिन जच्चा इसे कैसे बर्दाश्त कर सकती है)

ओंठ सोंठ के लड्डू मेरे मायके से आए, दो लड्डू उस में मेरी सासुल ने चुराए,
सासुल से पूछी तो एक दम से न कर दी,चुपके चुपके सासुल ने ससुर जी को खिलाए।
ओंठ सोंठ के लड्डू मेरे मायके से आए, दो लड्डू उस में मेरी जिठनी ने चुराए,
जिठनी से पूछी तो एक दम से न कर दी,चुपके चुपके जिठनी ने जेठ जी को खिलाए।
ओंठ सोंठ के लड्डू मेरे मायके से आए, दो लड्डू उस में मेरी ननदी ने चुराए,
ननदी से पूछी तो एक दम से न कर दी, चुपके चुपके उस ने फिर ननदोई को खिलाए।
ओंठ सोंठ के लड्डू मेरे मायके से आए, दो लड्डू उस में से देवरानी ने चुराए,
उस से जो पूछी तो एक दम से न कर दी, चुपके चुपके उस ने फिर देवर जी को खिलाए।

इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है

सोंठ गरी के लड्डू मेरे मायके से आए रे।
उसमें से आधे मेरी सासू ने चुराए रे।
उन्हें कमरे अन्दर कर दो जी, लाहौरी ताला जड़ दो जी,
पुलिस दरोगा कर जी,थाने अन्दर कर दो जी।
सोंठ-गरी के लड्डू मेरे मायके से आए रे।
उसमें से आधे मेरी जिठनी ने चुराए रे।
उन्हें कमरे अन्दर कर दो जी,लाहौरी ताला जड़ दो जी,
पुलिस दरोगा करदो जी,थाने अन्दर कर दो जी।
सोंठ-गरी के लड्डू मेरे मायके से आए रे,
उसमें से आधे मेरी ननदी ने चुराए रे।
उन्हें कमरे अन्दर कर दो जी,लाहौरी ताला जड़ दो जी,
पुलिस दरोगा कर दो जी,थाने अन्दर कर दो जी।
सोंठ गरी के लड्डू मेरे मायके से आए रे।

अब एक और रंग में देखिए

गोंद सौंठ के लड्डू मेरे बाबुल के से आए जी, उनमें से दो लड्डू मेरी, सासुल ने चुराए जी
सासुल जी का हाथ पकड़ कर मेरे आगे लाओ जी, ससुरा जी तोरे पइयाँ लागूँ, मेरा न्याय चुकाओ जी
गोंद सौंठ के मेरे लड्डू सासुल ने क्यों खाए जी ॥
गोंद सौंठ के लड्डू ——
उनमें से दो लड्डू मेरी, ननदी ने चुराए जी, ननदी जी का हाथ पकड़ कर मेरे आगे लाओ जी।

नंदोई जी बिनती सुन लो, मेरा न्याय चुकाओ जी, गोंद सौंठ के मेरे लड्डू ननदी ने क्यों खाए जी ॥
गोंद सौंठ के लड्डू ——
उनमें से दो लड्डू मेरी, सौतन ने चुराए जी, सौतिनिया का हाथ पकड़ कर मेरे आगे लाओ जी।
राजा जी तुम अभी के अभी, मेरा न्याय चुकाओ जी, गोंद सौंठ के मेरे लड्डू सौतन ने क्यों खाए जी ॥
गोंद सौंठ के लड्डू –

8. आई मांगन की बेला, मांगो ननदी मेरी मांगो

(ननदी से मांगने के लिए कह रही हैं और साथ में अपनी गाइडलाइन्स भी बता रही हैं)

आई मांगन की बेला, मांगो ननदी मेरी मांगो।
हाथी मत मांगो नन्दी द्वारे की शोभा, मांगो छोटी सी बकरिया,
ननदी मेरी मांगो।
साड़ी मत मांगो नन्दी बक्से की शोभा, मांगो छोटी सी रूमलिया,
ननदी मेरी मांगो।
थाली मंत मांगो मेरे चौके की शोभा, मांगो छोटी सी गिलसिया,
नन्द मेरी मांगो।
हरवा मत मांगो मेरे गले की शोभा, मांगो छोटी सी अंगुठिया, नन्दी मेरी मांगो।
आई मांगन की बेला, मांगो ननदी मेरी मांगो।

9. वीरन घर बहन बधावा लाई

(ननद भाभी की नोंक झोंक सोहर गीतों का प्रमुख विषय रहता है. सुनिए एक और मजेदार गीत)

वीरन घर बहन बधावा लाई।
मोरी भाभी खोलो चंदन किवड़िया भतीजे के लिए मैं बधावा लाई।

मेरी बीबी ये तो बताओ, भतीजे के लिए तुम क्या 2 लाई।
मेरी भाभी रूपया मोहरे अशर्फी, जरी का कुर्ता टोपी लाई।

मेरी बीबी खिड़की से ही दे दो, अगर आओगी तो मांगोगी बिदाई|

मेरी भाभी ऐसे बोल मत बोलो, कहाँ गई मेरे बीरन की कमाई।

मेरी बीबी बाप की कमाई तुम ले गई बीरन ने एक कौड़ी न कमाई।
बीरन घर बहन बधावा लाई।

10. जच्चा जायो रे ललनवा कैसे सपरी

(सास जेठानी ननद छोटे से छोटा काम भी करें तो उन को नेग चाहिए. लेकिन जच्चा भी कम चतुर नहीं है)

जच्चा जायो रे ललनवा कैसे सपरी, कैसे सपरी हो रामा कैसे सपरी।
जच्चा जायो रे ललनवा कैसे सपरी।

सासो आवे चरूआ चढ़ावे मांगे अपना नेग,
नेग की बेरा चाबी खो गई, पिया गये परदेश,
चाबी ले गये रे सजनवा,कैसे सपरी, जच्चा जायो रे ललनवा कैसे सपरी।

जिठनी आवे लड्डू बंधावे, मांगे अपना नेग,
नेग की बेरा चाबी खो गई, पिया गये परदेश,
चाबी ले गये रे सजनवा, कैसे सपरी, जच्चा जायो रे ललनवा कैसे सपरी।

11. और सुनो री जच्चा रानी के हाल चाल

(रुपया पैसा, सोना चांदी और मेवों को लुटने से बचाने के लिए जच्चा रानी का खतरनाक प्लान तो सुनिए)

और सुनो री जच्चा रानी के हाल चाल
पलका पे पड़ी पड़ी करती विचार,
नाऊन और दाई बो अइहें जरूर, मोरे पैसा रूपया पै लूट मची रे,
जच्चा रानी के हाल ..
सासो ननदिया वे अईहैं जरूर, मोरे सोने और चांदी पै लूट मची रे,
जच्चा रानी के हाल ..
देवरानी जिठानी वे अइहै जरूर, मोरे मेवा और लड्डू पै लूट मची रे,
जच्चा रानी के हाल
रेशम के बटुआ सिवाये हैं चार, पकड़े हैं बिच्छू, ततैया, पटार,
उन्हें रेशम के बटुआ में देय हैं सिवाय,
खोल खोल बटुआ जब देखन लागी, कोऊ हंसे कोऊ रोये चिल्लाय
जच्चा रानी के हाल ..

12. खटिया बैठी हैं सासू, तो जच्चा से अरज करें रे

(सास और जेठानी पूछती हैं कि बेटा इतना सुंदर कैसे हुआ, तो जच्चा रानी उनको तो ठीक से जवाब देती हैं, लेकिन ननदी पूछती है तो उसी की चोक ले लेती हैं)

खटिया बैठी हैं सासू,तो जच्चा से अरज करें रे।
ओ मेरी बहू, कौन कौन फल खाए,लाल बड़ा सुन्दर रे।
ओ मेरी सासू,खायो मैं दाख बदाम,और फल नरियल, छील छील खाईं नारंगी लाल भयो सुन्दर रे।
अँगना में बैठी हैं जिठनी, तो जच्चा से पूँछे रे।
छोटी कौन कियो व्रत नेम, लाल बड़ा सुन्दर रे।
भोरहिं गंगा नहाई, औ सूरज मनाए, ओ मेरी जिठनी, बामन को किया अन्नदान, ललन भयो सुन्दर रे।
बाहर से आई ननदिया, तो जच्चा से पूँछे रे।
भौजी, कौन छैलवा लुभाया, लाल बड़ा सुन्दर रे।
साँझहि पहर नहाई, उजाले में सोई, ओ मेरी ननदी, सपने में आये ननदोइ, लाल भए सुन्दर रे।

13. छपा दिया अखबार, लाल तेरे होने का

(ये सी वाली जच्चा बड़ी उदार हैं, दिल खोल कर सब को नेग दे रही हैं)

छपा दिया अखबार, लाल तेरे होने का।
सासू जो आयीं चरुआ चढ़ाने,
दिला दिया एक हार, लाल तेरे होने का।
जिठनी जो आयीं, पिपरी पिसाने,
दिया उन्हें घर-बार, लाल तेरे होने का।
ननदी जो आयीं काजल लगाने,
दिला दिया उन्हें प्यार, लाल तेरे होने का।
देवर जो आये बंसी बजाने,
दिला दिया एक कार, लाल तेरे होने का।

14. गोकुल में आये कन्हैया, बधैया बाज रही

(कन्हैया जी नाम लिए बिना सोहर पूरी नहीं होती. उन के नाम का रस भी अनोखा ही है)

गोकुल में आये कन्हैया, बधैया बाज रही।
नन्द बाबा जी मगन भये हैं, यशोदा लुटावैं रुपैया,
बधैया बाज रही।
ग्वाल-बाल सब देखन आये, गोपिन लेत बलैया,
बधैया बाज रही।
देव सभी फुलवा बरसायें, भोले करें ताता थैया,
बधैया बाज रही।

गोकुला में आये कन्हैया, बधैया बाज रही।

15. माली के घर बाग लगे हैं, बेला कली महकाय

(सास जेठानी जो भी भेंट लाएँ उन पर तो जच्चा रानी का पूरा हक है, लेकिन उन्हें कुछ देने में बड़ा जी कसकता है)

माली के घर बाग लगे हैं, बेला कली महकाय।
सासो आवे चरुआ चढ़ावे, चरुआ चढ़ाय चली जाय,
चरुआ के गेहूं भीतर रखालो, नहीं तो सास ले जाएं,
थोड़ी से गेहूँ उनकी गोदी में डार दो खाली घर न जाएं

जिठनी आवे लड्डू चढ़ावे, लड्डू चढ़ाए चली जाए,
लड्डू की थाली भीतर रखा लो नहीं तो जिठनी ले जाएं,
छोटा सा लड्डू उनकी गोदी में डालो खाली घरे न जाएं

16. गोदी पै नजर जायेगी बार बार

(जच्चा रानी बड़ी संतोषन हैं. सास, जेठानी, ननदी, देवर कोई न आएँ तो बेचारी मजबूरी में अपनी माँ, भाभी, बहन और भैया से वे सारे काम करा लेंगीं)

गोदी पै नजर जायेगी बार बार।
मेरी सासो न आये मेरा क्या बिगड़ेगा-2
मेरी अम्मा से चरूआ रख जायेगा।
गोदी पै नजर जायेगी बार बार।

मेरी जिठनी न आये मेरा क्या बिगड़ेगा-2,
मेरा होटल से कारवार निकल जायेगा।
गोदी पै नजर जायेगी बार बार।

मेरी नन्दी न आये मेरा क्या बिगड़ेगा-2
मेरी बहिना से कार वार निकल जायेगा।
गोदी पै नजर जायेगी बार बार।

मेरे देवर न आये मेरा क्या बिगड़ेगा-2
मेरे भैया से कारवार निकल जायेगा।
गोदी पै नजर जायेगी बार बार।

17. अरे मैंने धिया न जन्मी जन्मों हैं नंदलाल

(जच्चा रानी बहुत खुश हैं और इस ख़ुशी में हर व्यक्ति को उस के अनुरूप नेग ऑफर कर रही हैं)

अरे मैंने धिया न जन्मी जन्मों हैं नंदलाल।
अरे मेरी दाई हठेली नार छूते ही झगड़ो ड़ालै।
अरे मेरो मैके को टकवा, सोई घर लै जईयो।
अरे मैंने धिया –
अरे मेरी सासु हठेली, चरुआ चढ़ाते ही नेग मांगे।
अरे मेरे मैके की हंसली सोई लैके जईयो।
अरे मैंने धिया –
अरे मेरी जिठनी हठेली, खटिया बिछाते ही झगड़ा डाले।
अरे मेरे मैके की साड़ी, घर लेके जईयो।
अरे मैंने धिया –
अरे मेरी छोटी देवरानी हठेली, विजना डुलाने ही झगड़ा डाले।
अरे मेरे मैके की चुंदरी, सबरे होते ही घर ले जईयो
अरे मैंने धिया –
अरे मेरी ननद हठेली काजल लगाते ही नेग मांगे।
अरे मेरो मैके को कंगना, वाय लैके घर को जईयो ।।
अरे मैंने धिया –
देवर आवै धनुष चलाते ही अपनो नेग मांगे।
अरे मेरे मैंके की घड़ियाँ, उन्हें तुम लैके जइयो।
अरे मैंने धिया –
अरे मेरो जेठ आवे नचनिया नचावै, नचाते ही झगड़ा डाले।
अरे मेरे मैको को सूट वाकौ अपने लिए सिलवईयो।
अरे मैंने धिया –
पण्डित आवै राशि गिनावे, गिनाते ही झगड़ा डालै।
अरे मेरे मैके की गईयें, सुबह होती ही घर लै जईयो ।
अरे मैंने धिया –
सखियाँ आवें सोहर गावें, गाते ही झगड़ा डालें,
अरे मेरे मैके के लड्डू, सब सखियाँ लेके जइयो।
अरे मैंने धिया –

18. तुम तो अटारी चढ जैहो, खरच पिया हम कर लैवे

(जच्चा रानी पति को सिखा रही हैं कि तुम चुपचाप छत पर चले जाओ. सास, जेठानी, ननद नेग मांगेंगी तो हम बहाना कर देंगे कि तुम घर पर नहीं हो और तिजोरी में ताला डला है)

तुम तो अटारी चढ जैहो, खरच पिया हम कर लैवे।
सासू जी आवे चरुआ चढ़ावे, चरुआ धराई नेग मांगे,
बहाना पिया हम कर लेंवे।
पोता तुम्हारा सासू हम भी तुम्हारे, लड़का तुम्हारो घर नइयाँ,
तिजोरी में ताला डलो।
जिठनी आवे लड्डू चढ़ावे, लड्डू चढ़ाई नेग मांगे,
बहाना पिया हम कर लेंवे।
लड़का तुम्हारा जिठनी हम भी तुम्हारे, देवरा तुम्हारे घर नइयाँ,
तिजोरी में ताला डलो।
नन्दी आवे काजल लगावे, काजल लगाईं नेग मांगे,
बहाना पिया हम कर लेंवे।
भतीजा तुम्हारा ननदी हम भी तुम्हारे, भैया तुम्हारे घर नाहीं,
तिजोरी में ताला डलो।

19. बिना कंकड़िया के मारे इशारा कैसे हुआ मेरी जान

(कुछ लोग सोहर गीतों में भी अश्लीलता ढूँढ़ लेते हैं)
बिना कंकड़िया के मारे इशारा कैसे हुआ मेरी जान।
डिप्टी भी बैठे दरोगा भी बैठे,
बिना जज साहब के आये मुकदमा कैसे हुआ मेरी जान।
बिना कंकड़िया के मारे –
सासू भी आई जिठनी भी आई,
बिना नन्दी के आये ये झगड़ा कैसे हुआ मेरी जान।
बिना कंकड़िया के मारे –
तबला भी आया सारंगी भी आया,
बिना सखियों के आये ये मुजरा कैसे हुआ मेरी जान।
बिना कंकड़िया के मारे –
देवरा भी आये नन्दोई भी आये बिना बलमा के आये
ये लालन कैसे हुए मेरी जान।

20. पड़े बूंदिया भरे क्यारी, हमें जच्चा लगे प्यारी

(लौट फेर के किस्सा वही है. सास, जेठानी और ननद को लाल नहीं दिखाना चाहती, क्योंकि नेग देना पड़ेगा)
पड़े बूंदिया भरे क्यारी, हमें जच्चा लगे प्यारी

जच्चा तेरी गोदी का लालन वो सासो देखने आई,
मैं सासों को न दिखाऊँगी, मुझे अम्मा लगे प्यारी,
पड़ें बुंदिया भरे क्यारी –
जच्चा तेरी गोदी का लालन वो जिठनी देखने आई,
मैं जिठनी को न दिखाऊँगी, मुझे भाभी लगे प्यारी,
पड़ें बुंदिया भरे क्यारी –
जच्चा तेरी गोदी का लालन वो ननदी देखने आई,
मैं ननदी को न दिखाऊँगी, मुझे बहना लगे प्यारी,
पड़ें बुंदिया भरे क्यारी –

21. आज हुइहैं मनमानी सुनो राजा

(कोई न आए तो कोई नुकसान नहीं है, हम तुम मिल कर सारी रस्में पूरी कर लेंगे तो सारे नेग बच जाएंगे)

आज हुइहैं मनमानी सुनो राजा,
सासू न अइहै हमार का बिगड़ी, चरुए का नेग बच जइहै, हमार पिया,
तुम राजा उठ चूल्हा जलैवो, हम चरुआ धर लैवे, हमार पिया।

जिठनी न आवें हमार का बिगड़ी, पिपरी का नेग बच जइहै, हमार पिया,
तुम राजा उठ लोढ़ा ले आइयो, हम पिपरी पीस लेवे हमार पिया।

सखियाँ न आवें हमार का बिगड़ी, गीतों का नेग बच जइहै, हमार पिया,
तुम राजा ढोलक उठ ले अइयो हम मंगल गा लेवे हमार पिया।
आज हुइहै मनमानी सुनो राजा,

22. जच्चा मेरी चतुर सुजान, लाल जाए हरे हरे

(ज्यादातर जच्चा गीतों में वही बातें दोहराई जाती हैं. जो भी कोई आता है वह काम बाद में करता है पहले नेग मांगता है. बेचारी जच्चा बच्चा पैदा करने की तकलीफ भी उठाए और फिर इतना खर्चा भी करे)

जच्चा मेरी चतुर सुजान, लाल जाए हरे हरे, लाल जाए हीरे की कनी.
सासुल आए चरुआ चढ़ाए मांगे अपना नेग,
देना हो तो दो मेरी जच्चा, नाहीं लौट घर जाएँ,
लाल जाए हरे हरे –
जिठनी आवें पलंग बिछावें मांगे अपना नेग,

देना हो तो दो मेरी जच्चा, नाहीं लौट घर जाएँ,
लाल जाए हरे हरे –
नन्दी आएँ काजल लगाएँ मांगे अपना नेग,
देना हो तो दो मेरी जच्चा, नाहीं लौट घर जाएँ,
लाल जाए हरे हरे –
सखियाँ आएँ सोहर गाएँ मांगें अपना नेग,
देना हो तो दो मेरी जच्चा, नाहीं लौट घर जाएँ,
लाल जाए हरे हरे –

23. हम घर न थे ननद रानी आय गई

(ननद रानी ने कभी सपने में भी न सोचा होगा, भाभी ने कितने खतरनाक प्लान बनाएँ हैं)
हम घर न थे ननद रानी आय गई।
हम घर होते तो मिर्चा मंगाते, मिर्चा के बीजों के लड्डू बनाते,
वही लड्डू नन्दी को खिलाते, हम घर नहीं थे ननद रानी आय गई।

हम घर होते तो केले मंगाते, केले के छिलकों का लहंगा सिलाते,
वही लंहगा नन्दी को पहनाते, हम घर नहीं थे ननद रानी आय गई।

हम घर होते तो बिच्छू मंगाते, बिच्छू के लहंगा मैं बूटा बनाते,
वही लंहगा नन्दी को पहनाते, हम घर नहीं थे ननद रानी आय गई।

हम घर होते तो सांप मंगाते, सांप का लंहगा में नारा डरवाते,
वही लहंगा ननदी को पहनाते, हम घर नहीं थे ननद रानी आय गई।

24. घर गुलजार है, लल्ले की बुआ आई हैं

(आखिरकार एक गीत ऐसा मिला जिस में ननद और भाभी दोनों खुश हैं)

घर गुलजार है, लल्ले की बुआ आई हैं,
लाल की बधाई, बधाई बुआ लाई हैं।
चाँद और तारों का खडुआ गढ़ाई हैं,
भैया से भतीजे, के पाँव पहनाई हैं।
घर गुलज़ार....
फूल और कलियों से कपड़ा कढ़ाई हैं,
लाल को झिंगोलिया औ टोपी पहनाई हैं।
घर गुलज़ार....

हरे हरे तोता चिरैया ले आई हैं,
लाल के पलनवा में खूब सजाई हैं।
घर गुलज़ार....
चाँदी कजरौटा कजरवा पराई हैं,
लालन की छठिया में अँखियाँ सजाई हैं।
घर गुलज़ार है, लल्ले की बुआ आई हैं॥

25. कन्हैया जी के कजरा लगाऊँ नहीं भौजी

(ननदी की बहुत सारी फरमाइशों का भौजी ने बड़ा प्रैक्टिकल तोड़ निकाला है. कंगना अभी दे दिया और बाकी चीजें बच्चे के पहले जन्मदिन पर देने का वादा कर लिया. अब ननदी कुछ नहीं कह सकती)

कन्हैया जी के कजरा लगाऊँ नहीं भौजी
ये कजरा बड़े मान मनौती
नेग पहले लूँगी सुनो मेरी भौजी।
हाथ के कंगना और नाक की झुलनी
कमर करधनी लूँगी मेरी भौजी।
कन्हैया जी के कजरा –

नाहीं नुकुर जो करियो तो सुन लो
काजल ना लगाऊँगी सुनो मेरी भौजी।
कन्हैया जी के कजरा –

इतने वचन सुन भौजी हंसन लगीं,
पहनाय दिया कंगना औ कहें सुनो ननदी।
अगले बरस जब होवे जनमदिन,
करधनी औ झुलनी पहनाय देंय ननदी।
कन्हैया जी के कजरा लगाए दो ननदी॥

26. जच्चा हमारी कमाल, लगें फुलगेंदवा

(सोहर गीतों में हास्य का तड़का, जच्चा के मोटापे और नखरों को लेकर)
जच्चा हमारी कमाल, लगें फुलगेंदवा
खाय मोटानी हैं चलि नहिं पावें,
फूले हैं दोनों गाल, लगें फुलगेंदवा।

पांव है सिरकी पेट है गठरी

लुढ़कें जैसे फुटबाल, लगें फुलगेंदवा।

भाव दिखावें कि अम्मा बनी हैं
ठोकें रह रह ताल, लगें फुलगेंदवा।

भोर भए नित नखरा दिखावें
रात भर रोया है लाल, लगें फुलगेंदवा।
जच्चा हमारी कमाल, लगें फुलगेंदवा॥

27. एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना

(जच्चा बड़ी समझदार है. उसे मालूम है कि सास, जेठानी, ननदी और देवर केवल मतलब के वास्ते आयेंगे. काम तो उस के मायके वाले ही करेंगे. लेकिन फिर भी सबको नेग देने को तैयार है)

एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
सासू हमारी आयेगीं मतलब के वास्ते
मम्मी भी दौड़ी आएगी चरुवे के वास्ते
दोनों को नेग देना न मन को घटाना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
जिठनी हमारी आयेगीं मतलब के वास्ते
भाभी भी दौड़ी आएगी पिपरी के वास्ते
दोनों को नेग देना न तुम दिल को दुखाना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
ननदी हमारी आयेगीं मतलब के वास्ते
बहना भी दौड़ी आएगी छठी के वास्ते
दोनों को नेग देना न तुम दिल को दुखाना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
देवर हमारे आयेगें मतलब के वास्ते
भईया भी दौड़े आएगें वंशी के वास्ते
दोनों को नेग देना न दिल को दुखाना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना
एहसान मेरे दिल पर तुम्हारा है साजना, जो तुमने दिया गोद खिलाने को लालना

28. क्या किए गोरी गगरिया के मोती

(पतिदेव हिसाब मांग रहे हैं तो जच्चा सारा हिसाब बता रही हैं कि किस किस को क्या क्या दिया)

क्या किए गोरी गगरिया के मोती,

क्या किए गोरी गगरिया के मोती

एक सेर मोती मैंने सासू को दीन्हें,
लालन के चरुआ चढाई, गगरिया के मोती
क्या किए गोरी गगरिया के मोती-२

एक सेर मोती मैंने जिठनी को दीन्हें,
लालन की पिपरी पिसाई, गगरिया के मोती
क्या किए गोरी गगरिया के मोती-२

एक सेर मोती मैंने ननदी को दीन्हें,
लालन की छठी लिखाई, गगरिया के मोती
क्या किए गोरी गगरिया के मोती-२

एक सेर मोती मैंने देवर को दीन्हें,
लालन की वंशी बजाई, गगरिया के मोती

29. जच्चा तो मेरी भोली-भाली है रे

(भोली भाली जच्चा की तारीफ़ में क्या क्या कहा जा रहा है, जरा सुनिए)
जच्चा तो मेरी भोली-भाली है रे, जच्चा मेरी कुछ भी न जाने रे

मन भर तो लड्डू खा जावे, दो मन पक्के पेड़े,
जच्चा तो मेरी, खाना न जाने रे ॥ जच्चा तो मेरी –

सास-ननद की चुटिया उखाड़े, आई गई का लहँगा फाड़े
जच्चा तो मेरी, लड़ना न जाने रे ॥ जच्चा तो मेरी –

ससुर –जेठ की मूछैं उखाड़ै, आए- गए का खेस उतारै
के जच्चा मेरी लड़ना ना जाने री, जच्चा मेरी भोली –भाली री

साँप मार सिरहाने रक्खे, बिच्छू मार बगल में
जच्चा तो मेरी, मच्छर से डर जावे रे॥ जच्चा तो मेरी –
जच्चा मेरी भोली –भाली री, के जच्चा मेरी लड़ना ना जाने री

30. मैं याणी-स्याणी मेरा घर न लुटा दियो

(सयानी जच्चा सास और ननद की जगह अपनी माँ और बहन को नेग दिलाने के जुगाड़ में लगी हैं)

मैं याणी-स्याणी मेरा घर न लुटा दियो,
मैं याणी-स्याणी मेरा घर न लुटा दियो

सासू की जगह मेरी अम्मा को बुला दियो,
सासू का नेग मेरी अम्मा को दिला दियो
बक्से की चाबी मेरी चोटी मैं लटका दियो,
मैं याणी-स्याणी मेरा घर न लुटा दियो

ननद की जगह मेरी बहना को बुला दियो,
ननद का नेग मेरी बहना को दिला दियो
बक्से की चाबी मेरी चोटी मैं लटका दियो,
मैं याणी-स्याणी मेरा घर न लुटा दियो

31. हमको तो पीर आवे, ननदी हँसती डोले

(जच्चा दर्द से तड़प रही हैं और दुष्ट ननदी हँस रही है. इसको अभी इसके घर के लिए रवाना करो)

हमको तो पीर आवे, ननदी हँसती डोले।
बाहर से राजा आए अरज सुनो मेरी,
ननदी बिदा करो, अब ही बिदा करो ॥
हमको तो —

झूमर घड़न गया, टीका घड़न गया, गंगा उफान पे है, कैसे बिदा करौं।
झूमर मैं अपना दूँगी, टीका जिठानी देंगी,
गंगा में नाव उतारो, ऐसे बिदा करो ॥
हमको तो ——-

हरवा घड़न गया, झाले घड़न गए, गंगा उफान पे है, कैसे बिदा करौं।
हरवा मैं अपना दूँगी, झाले द्योरानी देगी,
मल्लाह को हाल बुलाओ, ऐसे बिदा करो ॥
हमको तो –

32. पलँग पर अब ना चढ़ूँगी मेरे राजा

(जच्चा रानी को पीर आ रही है और घर की सारी औरतें करवट ले कर सोई पड़ी हैं. पति से कह रही हैं कि अब कभी तुमको पास नहीं बुलाऊंगी)

पलँग पर अब ना चढ़ूँगी मेरे राजा।
सो राजा मेरे पहली पीर जब आई, सास मैंने जाय जगाई मेरे राजा ।
सो राजा मेरे सुन के भी करवट बदल गई,
सास बेदर्दिन हुई जी मेरे राजा॥
पलँग पर ———
सो राजा मेरे दूजी पीर जब आई, जिठानी मैंने जाय जगाई मेरे राजा ।
सो राजा मेरे सुन के भी करवट बदल गई,
जिठानी बेदर्दिन हुई जी महाराजा ॥
पलँग पर ———
सो राजा मेरे तीजी पीर जब आई, द्योरानी मैंने जाय जगाई मेरे राजा।
सो राजा मेरे सुन के भी करवट बदल गई,
द्योरानी बेदर्दिन हुई जी मेरे राजा॥
पलँग पर —
सो राजा मेरे चौथी पीर जब आई, ननद मैंने जाय जगाई महाराजा।
सो राजा मेरे सुन के भी करवट बदल गई,
ननद बेदर्दिन हुई जी महाराजा ॥
पलँग पर —
सो राजा मेरे पँचई पीर जब आई, आप मैंने जाय जगाए मेरे राजा ।
सो राजा मेरे सुनते ही ठाड़े हो गए, दाई को झट लेने गए जी मेरे राजा॥
पलँग पर —
सो राजा मेरे भोर भई पौ फाटी, होरिल हम उर धरे जी मेरे राजा।
सो राजा मेरे भूल गई सारी बतियाँ, पलँग पर फिर से चढ़ूँगी महाराजा। “होरिल – नवजात शिशु”

33. जच्चा की चटोरी जीभ जलेबी मंगवा दो ना

(जच्चा के लिए जलेबी मंगाना बहुत जरूरी है चाहे कहीं से भी पैसे का इंतजाम हो)

जच्चा की चटोरी जीभ जलेबी मंगवा दो ना
उसकी सासू को गिरवी रख दो ससुरे को चढ़ा दो ब्याज
जलेबी मंगवा दो ना
उसकी जिठानी को गिरवी रख दो जेठै को चढ़ा दो ब्याज
जलेबी मंगवा दो ना
उसकी देवरानी को गिरवी रख दो देवर को चढ़ा दो ब्याज
जलेबी मंगवा दो ना
उसकी ननद को गिरवी रख दो ननदोइ को चढ़ा दो ब्याज

जलेबी मंगवा दो ना
जच्चा की चटोरी जीभ जलेबी मंगवा दो ना

34. कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना

(जच्चा जी अपनी माँ, भाभी, बहन और भाई को बुलाना चाह रही हैं और पतिदेव हैं कि बहाने पर बहाने बनाए जा रहे हैं)

कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
सासू बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा, चरुआ हमीं से चढवा लो, गोरी मानो कहना
कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
भाभी बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा, पिपरी हमीं से पिसवा लो, गोरी मानो कहना
कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
साली बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा, छठी हमीं से लिखवा लो, गोरी मानो कहना
कफ़्र्यू ऑडर लागा है, गोरी मानो कहना-२
साला बुलाने मैं न जाऊं पकड़ा जाऊँगा, वंशी हमीं से बजवा लो, गोरी मानो कहना

35. श्याम झुलें पलना ओ सजनी

(ये वाली जच्चा रानी तो सबसे निराली हैं. नेग मांगने वालों से कह रही हैं कि इस लल्ला के बाद दूसरा लल्ला होगा, फिर जब उसकी सगाई होगी, उसकी बहू आएगी तब नेग दूंगी)

श्याम झुलें पलना ओ सजनी।
सासुल आवे चरुआ चढ़ावे, जिठनी आवे कमर दबावे, देवरानी आवे पंखा डुलावे, देवर आवे बाहर निकाले,
माँगें नेग अपना ओ सजनी ॥ श्याम झुलें पलना ....

लल्ला ऊपर लल्ला जाऊँ तब लल्ला की छठी कराऊँ
जब लल्ला की आए सगाई तब लल्ला का ब्याह रचाऊँ
बहुवर आवे रुनझुन करती डोले मेरे अँगना
पलका बैठी पान चबाऊं, मूढ़ा बैठी हुकुम चलाऊं
तब ही देऊँगी सबका नेग ओ सजनी ॥

ननदी आवे सतिए धरावे, सखियाँ आवें मंगल गावें, पंडित आवे नाम धरावे, दाई आवे ललन जनावे,
माँगें नेग अपना ओ सजनी ॥
लल्ला ऊपर लल्ला जाऊँ तब लल्ला की छठी कराऊँ
जब लल्ला की आए सगाई तब लल्ला का ब्याह रचाऊँ
बहुवर आवे रुनझुन करती डोले मेरे अँगना

पलका बैठी पान चबाऊं, मूढ़ा बैठी हुकुम चलाऊं
तब ही देऊँगी सबका नेग ओ सजनी ॥
श्याम झुलें पलना ओ सजनी ।

36. सौंठ के लड्डू चरपरे हैं, सौंठ के लड्डू —-

सौंठ के लड्डू चरपरे हैं, सौंठ के लड्डू —-
अँगना में ठाड़ी सास यों बोलीं, बहू एक हमें भी देना,
सौंठ के लड्डू, सौंठ के लड्डू
ये लड्डू मेरे पीहर से आए, ये लड्डू मेरी माँ ने बनाए
पसेरी भर इनमें घी जो पड़ा है, सेर भर इसमें गौंद पड़ा है
गरी के गोले नौ पड़े हैं, बादाम और पिस्ते नौ सौ पड़े हैं
छुहारे किशमिश भी तो पड़े हैं, सौंठ के लड्डू चरपरे हैं, सौंठ के लड्डू
आधा तोड़त मेरी उँगली दूखे, , पूरा दिया न जाय,
सौंठ के लड्डू, सौंठ के लड्डू ॥ (इसी तरह सबके नाम -)

37. कमर पीर होए राजा अब ना बचूँगी

(प्रसव की पीड़ा बड़ी खतरनाक होती है. लगता है अब जान नहीं बचेगी. लेकिन शिशु का जन्म होते ही मनस्थिति एकदम बदल जाती है)

कमर पीर होए राजा अब ना बचूँगी, होरिल पीर होए राजा अब ना बचूँगी । (होरिल – नवजात शिशु)
बुलाओ सासुल को बुलाओ सासुल को,
मैं बेटा उनको सौंप दूँगी अब ना बचूँगी ॥
कमर पीर —-
बुलाओ जिठ्नी को बुलाओ जिठ्नी को,
मैं बच्चे उनको सौंप दूँगी अब ना बचूँगी ॥
कमर पीर —
बुलाओ द्योरानी बुलाओ द्योरानी,
मैं चूल्हा-चक्की सौंप दूँगी अब ना बचूँगी ॥
कमर पीर —-
बुलाओ ननदी को बुलाओ ननदी को,
मैं ताला-चाबी सौंप दूँगी अब ना बचूँगी ॥
कमर पीर –
ब्रहम महूरत में जन्मे नन्द्लाला, कमर पीर ठीक हुई अब ना मरूँगी ।

बुलाओ सासुल को बुलाओ सासुल को,
मैं बेटा उनसे वापस लूँगी अब ना मरूँगी ॥
कसम खाओ सासू कसम खाओ सासू,
तुमने चुगली कजिए ना करे थे अब न मरूंगी.
कमर पीर ठीक –
बुलाओ जिठ्नी को बुलाओ जिठ्नी को,
मैं बच्चे उनसे वापस लूँगी अब ना मरूँगी ।
कसम खा जा जिठ्नी, कसम खा जा जिठ्नी,
तूने मारा-पीटी ना करी थी अब ना मरूँगी ॥
कमर पीर ठीक ––
बुलाओ द्योरानी बुलाओ द्योरानी,
मैं चूल्हा-चक्की वापस लूँगी अब ना मरूँगी ।
कसम खा द्योरानी, कसम खा द्योरानी,
तूने तोड़ा-फ़ोड़ी ना करी थी अब ना मरूँगी ॥
कमर पीर ठीक —
बुलाओ ननदी को बुलाओ ननदी को,
मैं ताला-चाबी वापस लूँगी अब ना मरूँगी ।
कसम खा जा ननदी, कसम खा जा ननदी,
तूने चोरी-चाटी ना करी थी अब ना मरूँगी ॥
कमर पीर ठीक —

38. कोई माँगे कढ़ाई न दे, हमारा मन हलुए पे

(जच्चा का मन हलुआ खाने का कर रहा है लेकिन लोग कैसी कैसी बाधाएँ डाल रहे हैं)
कोई माँगे कढ़ाई न दे, हमारा मन हलुए, हमारा मन हलुए पे ।

जैसे रे तैसे कढ़ाई लाई, द्योरानी आटा न दे
हमारा मन हलुए, हमारा मन हलुए पे ।

चुनरी दे द्योरानी मनाई, जिठनी बूरा न दे
हमारा मन हलुए, हमारा मन हलुए पे ।

लहँगा दे जेठानी मनाई, सासू जी मेवा न दें
हमारा मन हलुए, हमारा मन हलुए पे ।

हाथ पैर दाब सासू जी मनाईं, राजा खाने न दें

हमारा मन हलुए, हमारा मन हलुए पे ।

लल्लो-चप्पो कर मैंने राजा मनाए, होरिलवा पचने न दे
हमारा मन हलुए, हमारा मन हलुए पे ।

39. मेरी जच्चा ने जाये श्री कृष्ण जी

(ये सी वाली जच्चा रानी सबसे चतुर हैं. नेग में सबको तुलसी की माला पकड़ा कर काम चला ले रही हैं)

मेरी जच्चा ने जाये श्री कृष्ण जी ।
जच्चा दाई तुम्हारी यहाँ आयेंगी, उनको ललना जनाई-नेग क्या दे दूँ जी
दे दो तुलसी की माला उन्हें हाथ में,
कहना भज कृष्ण भज कृष्ण भज कृष्ण जी ॥
मेरी जच्चा —-
जच्चा सासुल तुम्हारी यहाँ आयेंगी, उनको चरुआ-चढाई नेग क्या दे दूँ जी
दे दो तुलसी की माला उन्हें हाथ में,
कहना भज कृष्ण भज कृष्ण भज कृष्ण जी ॥
मेरी जच्चा —
इसी तरह
जिठनी –पलका-बिछाई
द्योरानी — पंखा-डुलाई
नंदुल — सतिया-धराई
देवर -तीर-सजाई
पंडित – नाम-धराई
सखियाँ –मंगल-गवाई

40. बोले न चाले मिज़ाज करे, ऐसी जच्चा से कैसे कोई प्यार करे

(जच्चा रानी किसी बात पे ऐंठी हुई हैं, न बात कर रही हैं, न गहने कपड़े पहन रही हैं, न कुछ खा रही हैं. ऐसी बिगडैल जच्चा को कोई कैसे प्यार करे)

बोले न चाले मिज़ाज करे, ऐसी जच्चा से कैसे कोई प्यार करे
टीका लै के आऊँ तो सिर न धरे, झुमका लै के आऊँ तो कान न धरे
नथनी को पूँछू तो इनकार करे, ऐसी जच्चा से कैसे कोई प्यार करे।
बोले न चाले –
लहँगा लै के आऊँ तो अंग न धरे, चोली लै के आऊँ तो अंग न धरे

चुनरी को पूँछू तो इनकार करे, ऐसी जच्चा से कैसे कोई प्यार करे।
बोले न चाले –
रबड़ी लै के आऊँ तो परे कर दे, लैमन लै के आऊँ तो परे कर दे
हरीरा को जो को पूँछू तो इनकार करे, ऐसी जच्चा से कैसे कोई प्यार करे।
बोले न चाले –

41. उठी मेरे राजा कमर में पीर उठी

(जच्चा की कमर में पीर उठी है तो सास, जिठानी और ननदी की जगह माँ, भाभी और बहन को बुलाने में ज्यादा खुश हैं)

उठी मेरे राजा कमर में पीर उठी।
कहो तो रानी तेरी सासू को बुला दूँ, नहीं मेरे राजा, सासू का काम नहीं।
कहो तो रानी तेरी अम्मा को बुला दूँ,
कही मेरे राजा, मन की सी बात कही ॥
उठी मेरे राजा –
(इसी प्रकार जिठानी-भाभी, ननद-बहन, देवर-भाई के लिए)

42. द्वारे पे डाल लीनी खटिया, हाय रामा

(एक समय था जब कन्या का जन्म होने पर घर में मातम छा जाता था)

द्वारे पे डाल लीनी खटिया, हाय रामा।
लड़की हुई की सुनी जब ससुर ने, हाथ में से छूट गई लठिया, हाय रामा ॥
द्वारे पे —-
लड़की हुई की सुनी जब जेठ ने, हाथ में से छूट गई गठरिया, हाय रामा ॥
द्वारे पे —-
लड़की हुई की सुनी जब देवर ने, हाथ में से छूट गई बंसिया, हाय रामा ॥
द्वारे पे —-
लड़की हुई की सुनी जब ननद ने, हाथ में से छूट गई गुड़िया, हाय रामा ॥
द्वारे पे —-
लड़की हुई की सुनी जब बलम ने, हेठ से टूट गई खटिया, हाय रामा ॥
द्वारे पे –

43. माँगे ननद रानी कँगना, ललन के हुए का

(ननदी भी एक ही ढीठ है जो बार बार कंगना मांगती है, और भाभी भी एक ही चतुर है जो बात को आगे के लिए टालती जाती है)

माँगे ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन की छठी कराऊँ, दूँगी ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन की छठी कराई, फिर माँगे ननदी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का होगा जनेऊ, दूँगी ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का हुआ जनेऊ, फिर माँगे ननदी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन की आवे सगाई, दूँगी ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का आई सगाई, फिर माँगे ननदी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का ब्याह रचाऊँ, दूँगी ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का ब्याह हो गया, फिर माँगे ननदी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का गौना आवे, दूँगी ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का गौना आया, फिर माँगे ननदी कँगना, ललन के हुए का।
जब लालन का लल्ला होवे, दूँगी ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।
माँगे ननद रानी कँगना, ललन के हुए का।

44. ललना जनी हैं रे जच्चा रे जच्चा, तो खुशियाँ मनावो रे

(पंडित जी ललना का नाम रखने आए तो ललना की माँ और नानी को नटनी और डोमनी बताने लगे. इस पर नाराज हो कर जच्चा कमरे में बंद हो गईं. बाहर से आए पति उन्हें मना रहे हैं)

ललना जनी हैं रे जच्चा रे जच्चा, तो खुशियाँ मनावो रे
बोलो नगर के पंडित बेगि चले आवें, तुरत चले आवें रे,
के बालक को नाम धरावें, पतरी बनावें और बाँच सुनावें रे।

बाबा याके राजों के राजा, तो दादी महारानी कहावे रे,
के बालक अति शुभ लागै, नाम कमावै, सभी के मन भावै रे।

नानी याकी नटनी की जाई तो नटनी कहावे रे
के माँ याकी डोम के जनमी, तो डोमनी कहावे रे।

या सुन रिसाय गईं जच्चा, बहुतहि खफा भईं रे,
के जड़ लईं किवड़ियाँ, ललन लै के पौडीं खफा होके पौडीं रे।

बाहिर से आए राजा, धना को पुकारें, धना को मनावें रे,
खोल देओ चँदन किवार, ललन मुख देखौं, नयन सुख पावें रे।

मैं डोम की जाई, डोमिनिया कहाई, नटनिया कहाई रे,
मोर डोमिनिया के लाल, नटिनिया के लाल, केहु न दिखावे रे।

जो तुम डोम की जाईं, नटनिया की जाई, नटनिया कहाईं रे,
मोर रजबंसी के लाल तौ कुँवर कहावै, तौ सबहिं दिखा दे रे।

45. होलर का बाबा यूँ कहे

(बच्चे के जन्म पर बाबा, ताऊ, पिता आदि खूब पैसा लुटाने को कह रहे हैं तो दादी, ताई मना कर रही हैं)

होलर का बाबा यूँ कहे, तुम खरचो दाम बहुतेरे
होलर की दादी यूँ कहे,
होलर क्या हुण्डी लाया,
सिर से सरफुल्ला आया, पैरों से नंगा आया,
हाथों की मुट्ठी भींच के, सिर पे झण्डूले लाया

होलर का ताऊ यूँ कहे, तुम खरचो दाम बहुतेरे
होलर की ताई यूँ कहे,
होलर क्या हुण्डी लाया,
सिर से सरफुल्ला आया, पैरों से नंगा आया,
हाथों की मुट्ठी भींच के, सिर पे झण्डूले लाया
(इसी प्रकार चाचा, फूफा, मौसा, मामा)
(होलर – नवजात शिशु, सरफुल्ला – नंगे सिर, झंडूले – जन्म के समय बच्चे के सिर के बाल)

46. आई है फूलों की बहार, बधाई होवे

(लाल के जन्म की बधाई घर के सभी लोगों को दी जा रही है)

आई है फूलों की बहार, बधाई होवे
पहली बधाई लाल के, बाबा को होवे
दादी न गाए मंगलाचार, बधाई होवे
आई है फूलों...
दुजी बधाई लाल के, ताऊ को होवे
ताई ने गाए मंगलाचार, बधाई होवे
आई है फूलों...
तीजी बधाई लाल के, चाचा को होवे

चाची ने गाए मंगलाचार, बधाई होवे
आई है फूलों...
चौथी बधाई लाल के, फूफा को होवे
बुआ ने सतिए लगाए बधाई होवे
आई है फूलों...
पाँचवीं बधाई लाल के, नाना को होवे
नानी ने भेजो छुछक आज, बधाई होवे
आई है फूलों...
छटी बधाई लाल के, मामा को होवे
मामी ने गाए मंगलाचार, बधाई होवे
आई है फूलों...
सातवीं बधाई लाल के, बाबुल को होवे
आँगन में छाई खुशियाँ आज, बधाई होवे
आई है फूलों की बहार, बधाई होवे

47. लाल के बधाए जड़ाऊ बेंदा लेऊँगी

(ननद भाभी की वही चिर परिचित नोंक झोंक)

लाल के बधाए जड़ाऊ बेंदा लेऊँगी,
जो भए लाल, मैं बेंदा बेसर लेऊँगी।

साँझ बेहाल गई, आधी रात लाल हुए,
शोर न मचाओ राजा ननदी सुन लेंगी,
बेंदा ले लेवेगी, वो बेसर ले लेंगी ॥
लाल के बधाए —-
ननदी ने खबर पाई, नाचत कूदत आय गईं,
दे दो बधाई भौजी पूरी मेरी आस भई,
अब तो बेंदा लेऊँगी मैं अब तो बेसर लेऊँगी ॥
लाल के बधाए —-
अँचरा की ओट भाभी लालन छिपाय लियो,
मेरे तो बेटी भई बेंदा कैसे लेओगी,
मेरे तो बेटी भई बेसर कैसे लेओगी ॥
लाल के बधाए —-
भैया ने आँख मारी बहना ने समझ लई,
बेंदा नहीं लेऊँ भाभी बिटिया देख लेऊँगी,

बेसर नहीं लेऊँ भाभी बिटिया गोद लेऊँगी ॥
लाल के बधाए —-
अँगना में ठाड़ी सास समझावें,
दे दे बहू बेंदा मैं और बनवा दूँगी,
दे दे बहू बेसर मैं और बनवा दूँगी ॥
लाल के बधाए —-
बेंदा उतार जच्चा अँगना में फेंक दियो,
बेसर उतार जच्चा अँगना में फेंक दियो,
ले जा मेरी सौत तुझे फिर न बुलाऊँगी ॥
लाल के बधाए —-
बेंदा उठाय ननदी भाभी को पहराय दियो,
भाभी को सुहाग और लाल अमर रहियो,
अपने से आऊँगी मैं बिना बुलाई आऊँगी ॥
लाल के बधाए –

48. खड़ी-खड़ी ठेंगा दिखाऊँ, ननद कँगना माँगे जी

(ननद के घर कोई कमी नहीं है, लेकिन अगर भाभी उसे कुछ देती है तो ननद का उस के घर में मान बढ़ता है, इसलिए वह मांगती है. गहनों का मोह सब स्त्रियों को होता है, विशेषकर अपना पहना हुआ निकाल के देना तो बहुत ही कठिन होता है. दोनों के बीच दांव पेंच चलते रहते हैं)

खड़ी-खड़ी ठेंगा दिखाऊँ, ननद कँगना माँगे जी
हमने तो जाए नंदलाला, ननद कँगना माँगे जी
बाहर से आए ससुर तो बहू भीतर को चलीं
दे दो बहूरानी कँगना मैं और गढ़वाय दूँ जी ॥

बाहर से आए बलम तो धना पलका पे पड़ीं
दे दो धना रानी कँगना मैं चार गढ़वाय दूँ जी ॥
नौ महीने हमने कोख पाली और प्रसव की पीड़ा सही,
कँगना माँगे ननदिया, कहो जी कोई बात हुई ॥

कँगना दोगी ननद को तो वह खुश हो के कहे
भाभी चिर जीवे तेरा नंदलाला और अमर सुहाग रहे ॥
पेच खोल कँगना जो फेंका आँगन झनकार उठा
अरे ले जा बिजुलिया कँगना के अब मत आना रे ॥

अब की गई मैं छठिन में आऊँगी फिर आऊँ लल्ला के मुंडन में
फिर आऊँ लल्ला के ब्याह में फिर नहीं आऊँ रे ॥
(धना - पत्नी, पलका - पलंग)

49. देखो ननद भवज कोठे चढ़ गईं और आपस में रहीं बतलाय

(ननदी को तिलड़ी और गले का हार दे तो दिया पर मन बड़ा कसक रहा है. पाँव छूते और गले मिलते में तिलड़ी और हार तोड़ लिए)

देखो ननद भवज कोठे चढ़ गईं और आपस में रहीं बतलाय
भाभी जो तेरे होंय नंदलाला, तो हमे भला क्या दोगी,
बीबी जो मेरे होय नंदलाला,
तुम्हें दूँगी गले का हार और दूँगी तिलड़ गढ़वाय

देखो ननद गई घर अपने और यहाँ भये नंदलाल,
राजा हौले-हौले बंसरी बजाना, राजा धीरे-धीरे बंसरी बजाना
कहीं सुनकर ननदिया न आ जाए,

लो इतने में आ गई ननदिया, और माँगे अपना नेग
बीबी कैसी होती है तिलड़ी और कैसा गले का हार
देखो ललन झूल रहे पलना, वो तो ले गई ननदिया उठाय,
राजा हल्की गढ़ा लाओ तिलडी और हल्का गले का हार
मुझे घर अँगना न सुहाय,

बीबी दे जा भतीजा दे जा और ले जा अपना नेग,
वह तो पहन नेग हुई ठाड़ी, और मुड़-मुड़ देत आशीष,
चिर जीवे तेरा नंदलाला, मेरी भाभी का अचल सुहाग,

पाँव छूते में तोड़ ली तिलड़ी, गले मिलते में तोड़ लिया हार,
घर सास-ननद पूछे बतियाँ, तेरी भाभी ने जाए नंदलाला,
बहू क्या कुछ लाई नेग,

पाँव छूते में तोड़ ली तिलड़ी, गले मिलते में तोड़ लिया हार,
वो तो ओछे घरों की है नार, मैं तो धोती छुड़ाय घर आई,

50. मचल रही आज महलों में दाई

(राजा दशरथ के यहाँ चार राजकुमार जन्मे हैं, दाई नाल काटने के नेग में मोती, जेवर और रत्नों को ठुकरा कर अयोध्या का आधा राज मांग रही है)

मचल रही आज महलों में दाई, अकड़ रही आज महलों में दाई
थाल भर मोती कौशल्या ने मँगाए, दाई ने दिए ठुकराय,
मचल रही आज —-
पिटरा भर जेवर कैकेयी ने मँगाए, दाई ने दिए ठुकराय,
मचल रही आज —-
थैली भर रतन सुमित्रा ने मँगाए, दाई ने दिए ठुकराय,
मचल रही आज —-
हाथ जोड़ राजा दशरथ ठाड़े, छेओ कुँवरों की नार,
मचल रही आज —-
कुँवरों की नार तभी छेऊँगी, लूँ आधा अयोध्या का राज,
मचल रही आज महलों में दाई, अकड़ रही आज महलों में दाई

51. मैं तो तेरा हाजिर बंदा रे

मैं तो तेरा हाजिर बंदा से जच्चा काहे को रूठी मटकी जाए
मैं तो तेरा खसम खिलौना रे जच्चा काहे को रूठी मटकी जाए

कहो तो जच्चा हम दाई को बुलाय दें-2
कहो तो ललना हमहिं जनाय दें रे जच्चा काहे को रूठी मटकी जाए

कहो तो जच्चा हम सासुल को बुलाय दें-2
कहो तो चरुआ हमहिं चढ़ाय दें रे जच्चा काहे को रूठी मटकी जाए

कहो तो जच्चा हम जिठनी को बुलाय दें-2
कहो तो पिपरी हमहिं पिसाय दें रे जच्चा काहे को रूठी मटकी जाए

कहो तो जच्चा हम ननदी को बुलाय दें-2
कहो तो कजरा हमहिं लगाय दें रे जच्चा काहे को रूठी मटकी जाए

गार, गारी, गालियाँ

(विवाह समारोह का सबसे रोचक पक्ष होता है गालियाँ. कन्या पक्ष की महिलाएँ वर पक्ष के लोगों को हँसी मजाक में खूब गालियाँ देती हैं. वर पक्ष के लोग भी उससे आनंदित होते हैं)

1. बन्ना राजा के बंगले में चोरी हुई

(बन्ने के घर में चोरी होने की कहानी बना कर उस में क्या क्या चोरी हुआ और उस से कौन कौन सी समस्याओं से छुटकारा मिल गया , यह बात खूब मजे ले कर बताई जा रही है)

बन्ना राजा के बंगले में चोरी हुई, उस चोरी में बन्ने का क्या क्या गया -2
उस चोरी में बन्ने की दादी गई-2
चलो अच्छा हुआ, चलो अच्छा हुआ,
चलो अच्छा हुआ, घर की बुढ़िया गई।
बन्ने राजा के बंगले में चोरी हुई, उस चोरी में बन्ने का क्या क्या गया -2,
उस चोरी में बन्ने की मम्मी गई -2
चलो अच्छा हुआ, चलो अच्छा हुआ,
चलो अच्छा हुआ, घर की बक बक गई।
बन्ने राजा के बंगले में चोरी हुई, उस चोरी में बन्ने का क्या क्या गया -2,
उस चोरी में बन्ने की बहना गई -2
चलो अच्छा हुआ, चलो अच्छा हुआ,
चलो अच्छा हुआ, घर की चुगली गई।
बन्ने राजा के बंगले में चोरी हुई, उस चोरी में बन्ने का क्या क्या गया -2,
उस चोरी में बने की भाभी गई -2
चलो अच्छा हुआ, चलो अच्छा हुआ,
चलो अच्छा हुआ, घर का झगड़ा गया।
बन्ने राजा के बंगले में चोरी हुई, उस चोरी में बन्ने का क्या क्या गया -2,
उस चोरी में बन्ने के ताऊ गये -2
चलो अच्छा हुआ, चलो अच्छा हुआ,
चलो अच्छा हुआ, घर की हुकमत गई।
बन्ने राजा के बंगले में चोरी हुई, उस चोरी में बन्ने का क्या क्या गया -2,
उस चोरी में बन्ने का भतीजा गया -2

चलो अच्छा हुआ, चलो अच्छा हुआ,
चलो अच्छा हुआ, घर का रोना गया।

2. इस घर मेरा गुजारा नहीं नन्दी

(बहू अपनी ननद को बता रही है कि इस घर के सब लोग बहुत बुरे हैं, इसलिए यहाँ उसका गुजारा नहीं हो सकता)

इस घर मेरा गुजारा नहीं नन्दी
इस घर के मेरे ससुर बुरे हैं,
जितनी बार घूंघट काडू फिर भी कहे देखा मुँह देखा मेरी नन्दी।
इस घर मेरा गुजारा नहीं नन्दी।
इस घर की मेरी सास बुरी है,
जितनी बार कचरा काडू फिर भी कहे गंदा हाय गंदा मेरी नन्दी।
इस घर मेरा गुजारा नहीं नन्दी।
इस घर की मेरी जिठनी बुरी हैं,
जितनी बार बर्तन मांजू फिर भी कहे गन्दे हाय गन्दे मेरी नन्दी।
इस घर मेरा गुजारा नहीं नन्दी।
इस घर के मेरे देवर बुरे हैं,
जितनी बार हँस कर बोलूं, फिर भी कहे सूजा मुँह सूजा मेरी नन्दी।
इस घर मेरा गुजारा नहीं नन्दी।

3. हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है

(बन्ने को घर वालों को बहुत सस्ते में बाजार में बेचा जा रहा है)
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.
संतरा मुसम्मी, बन्ने की मम्मी,
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.
डोसा समौसा बन्नी के मौसा,
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.
कपड़ा गहना, बन्ने की बहना,
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.
गुलाब जामुन, मालपुआ, बन्ने की बुआ,
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.
चीकू शरीफा, बन्ने के फूफा,
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.

बर्गर पीजा, बन्ने के जीजा,
हर माल मिलेगा ढाई आना, बड़ा सस्ता बाजार है.

4. स्वागत में गाली सुनाओ सखियाँ, सुनाओ सखियाँ

(मीठी मीठी गालियों द्बारा बारात में आने वाले पुरुषों का श्रृंगार महिलाओं की तरह करने की तैयारी हो रही है. सभी पुरुष इस मिठास में सराबोर हो रहे हैं)

स्वागत में गाली सुनाओ सखियाँ, सुनाओ सखिया, हाँ हाँ स्वागत में गालियाँ सुनाओ

बारातियों के सर पर टोपी नहीं है,
उनके चोटी और जूड़ा बनाओ सखियाँ,
स्वागत में गालियाँ सुनाओ सखियाँ

बारातियों के अंग में कुर्ता नहीं है, शर्ट भी नहीं है,
उन्हें चोली और चुनरी ओढ़ाओ सखियाँ, ओढाओ सखियाँ,
स्वागत में गालियाँ सुनाओ सखियाँ

बारातियों के माथे पर चंदन नहीं है -2
उन्हें टिकुली और बिन्दी लगाओ सखियाँ, लगाओ सखियाँ,
स्वागत में गालियाँ सुनाओ सखियाँ

बारातियों के पैरों में सैंडिल नहीं है, मोजा नहीं हैं,
उन्हें पायल और बिछियाँ पहनाओं सखियाँ, पहनाओं सखियाँ,
स्वागत में गालियाँ सुनाओ सखियाँ

5. समधी देखो कैसा सुहाना बना

(कन्या पक्ष की स्त्रियाँ सबसे अधिक मजाक अपने समधियों यानि वर के पिता, ताऊ, चाचा, फूफा आदि से करती हैं)

समधी देखो कैसा सुहाना बना – 2

ऐसा समधी का पेट, जैसे इंडिया का गेट
ससुरा देखो कैसा सुहाना बना

जैसे ताऊ की मूँछ वैसे कुत्ते की पूँछ
जेठा देखो कैसा सुहाना बना

जैसे देवर के गाल वैसे दो टमाटर लाल
देवरा देखो कैसा सुहान बना

फूफा की चाँद है ऐसी सफाचट, जिसपे रोटी बने फटाफट
फूफा देखो कैसा सुहाना बना

6. मैं का करूँ भाई, मुझे मिली न लुगाई

(लुगाई - स्त्री)(बेचारे समधी को पत्नी ही नहीं मिल रही है. वह कुम्हार, सुनार, हलवाई, बढ़ई , बुकसेलर सब के यहाँ हो आए . सब ने अपने अपने हिसाब से लुगाई बना कर दी लेकिन काम नहीं चला)

मैं का करूँ भाई, मुझे मिली न लुगाई-2
दौड़े -2 समधी कुम्हरा के गये थे, माटी की कुम्हार ने बना दी लुगाई.
माटी की लुगाई मैंने अंगना में रखी,
बरस गया पानी वो घुल गई लुगाई।
दौड़े-2 समधी सुनरा कर गए थे, सोने की सुनार ने बना दी लुगाई,
सोने की लुगाई मैंने बक्सा में रखी,
आ गये चोर वो ले गये लुगाई।
दौड़े-2 समधी हलवाई के गये थे, चीनी की हलवाई ने बना दी लुगाई,
चीनी की लुगाई मैने बैठक में सजाई,
आ गये मेहमान मेरी खा गये लुगाई।
दौड़े-2 समधी बढ़ई के गये थे, लकड़ी की बढ़ई ने बना दी लुगाई,
लकड़ी की लुगाई रसोई मे बिठाई,
अग्नी के झोंके से वो जल गई लुगाई।
दौड़े-2 समधी बुक सेलर के गये थे, कागज की बुक सेलर ने दे दी लुगाई
कागज की लुगाई जो छत पे बिठाई,
आंधी के झोंके मे उड़ गई लुगाई।
मैं का करूँ भाई, मुझे मिली न लुगाई।

7. समधी पे आया बुढ़ापा दगा दे गई जवानी

(समधी को बूढा बता कर समधिन उन की खूब चोक ले रही है)

समधी पे आया बुढ़ापा दगा दे गई जवानी।
पहला बुढ़ापा उनकी आँखों पे आया, समधिन ने चश्मा लगवाया,
दगा दे गई जवानी।
दूजा बुढ़ापा उनके बालों पे आया, समधिन ने खिजाब लगवाया,

दगा दे गई जवानी।
तीजा बुढ़ापा उनकी कमर पे आया, समधिन ने लट्ठ दिलवाया,
दगा दे गई जवानी।
चौथा बुढ़ापा उनके दांतों पे आया, समधिन ने डेनटिस्ट बुलाया,
दगा दे गई जवानी।
पंचवा बुढ़ापा उनके दिल पे आया, समधिन ने दूजा ब्याह रचाया,
दगा दे गई जवानी।

8. मैंने रात कहरवा खूब सुना

(यह अलग टाइप की गालियाँ हैं. ससुराल में जब बहू से गाना सुनाने को कहा जाता है तो वह इस तरह के मजेदार गाने सुनाती है और कोई उस का बुरा नहीं मानता)

मैंने रात कहरवा खूब सुना।
सासू जी मुझसे कहके गईं, सासू जी मुझसे कहके गईं
बहू, आँगन में झाड़ू दे देना
पर मैं अलबेली भूल गई, री मैं अलबेली भूल गई,
मैंने आँगन में कूड़ा डाल दिया ।
सासू जी मुझसे कहके गईं, सासू जी मुझसे कहके गईं
बहू, चूल्हे में आग जला देना
मैं अलबेली भूल गई री, मैं अलबेली भूल गई,
मैंने चूल्हे में पानी डाल दिया ।
सासू जी मुझसे कहके गईं, सासू जी मुझसे कहके गईं
बहू, गइया को खूँटी से बाँध देना
मैं अलबेली भूल गई री, मैं अलबेली भूल गई,
मैंने देवर को खूँटी से बाँध दिया ।
सासू जी मुझसे कहके गईं, सासू जी मुझसे कहके गईं
री बहू, जोगी को भिक्षा दे देना
मैं अलबेली भूल गई री, मैं अलबेली भूल गई,
मैंने जोगी को ननदी दे डाली।
मैंने रात कहरवा खूब सुना।

9. मैं अंगरेजी पढ़ी लिखी मेरी कदर बिगड़ गई मम्मी जी

(मॉडर्न बहू के कारनामे बताने वाला गीत, सासों को सावधान करने के लिए)

मैं अंगरेजी पढ़ी लिखी मेरी कदर बिगड़ गई मम्मी जी।
सासो कहे बहू बर्तन माजो, बर्तन मांजे मम्मी जी,
बर्तन मांजते जग टूट गया हैंडिल रह गया मम्मी जी।
मैं अंगरेजी –
सासो कहे बहू खाना बनाओ, खाना बनाया मम्मी जी,
खाना बनाते रोटी जल गई भूखी रह गई मम्मी जी।
मैं अंगरेजी –
सासो कहे बहू प्रेस करो, कपड़े प्रेस किए मम्मी जी,
प्रेस करते साड़ी जल गई, पल्लू रह गया मम्मी जी।
मैं अंगरेजी –
सासो कहे बहू पैर दबाओ, पैर दबाने जो मैं चली,
पैर के बदले गर्दन दब गई, ये क्या हो गया मम्मी जी।
मैं अंगरेजी –

10. आज मेरी नन्दी बिकाय कोई ले ले

(कन्या का विवाह हो या बच्चे का जन्म, सबसे ज्यादा गालियाँ ननदी को ही दी जाती हैं)

आज मेरी नन्दी बिकाय कोई ले ले।
रूपइया में ले लो अठन्नी में ले लो, अगर मन चाहे चवन्नी में ले लो,
आज मेरी नन्दी बिकाय कोई ले ले।

चवन्नी में ले लो दुअन्नी में ले लो, अगर मन चाहे इकन्नी में ले लो।
आज मेरी नन्दी बिकाय कोई ले ले।

इकन्नी में ले लो, अधन्नी में ले लो, अगर मन चाहे खोटे सिक्के में ले लो.
आज मेरी नन्दी बिकाय कोई ले ले।

11. हम घर न थे समधन रानी आय गई

(समधन के लिए कितने खतरनाक प्लान सोच रखे हैं. मजे की बात यह है कि दोनों पक्ष के लोग इन गीतों पर खूब ठहाके लगाते हैं, कोई बुरा नहीं मानता)

हम घर न थे समधन रानी आय गई।

हम घर होते तो मिर्चा मंगाते, मिर्चा के बीजों के लड्डू बनाते,
वही लड्डू समधन को खिलाते, हम घर नहीं थे समधन रानी आय गई।

हम घर होते तो केले मंगाते, केले के छिलकों का लहंगा सिलाते,
वही लंहगा समधन को पहनाते, हम घर नहीं थे समधन रानी आय गई।

हम घर होते तो बिच्छू मंगाते, बिच्छू के लहंगा मैं बूटा बनाते,
वही लंहगा समधन को पहनाते, हम घर नहीं थे समधन रानी आय गई।

हम घर होते तो सांप मंगाते, सांप का लंहगा में नारा डरवाते,
वही लहंगा समधन को पहनाते, हम घर नहीं थे समधन रानी आय गई।

इस गीत को इस प्रकार भी गाया जाता है

मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो मूली मँगवाती, मूली के पत्तों की, चोली बनवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो बिच्छू मँगवाती, समधन की चोली में, बूटी टँकवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो गोभी मँगवाती, गोभी के पत्तों की चुनरी बनवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती ततइया मँगवाती, समधन की चुनरी में बेल लगवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो अरबी मँगवाती, अरबी के पत्तों का, लहँगा बनवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो साँप मँगवाती, समधन के लहँगे में नाड़ा डलवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो बन्दर बुलवाती, समधन के गाल बंदर से कटवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो गधइया बुलवाती, समधन को गधइया की सवारी करवाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं
मैं घर होती तो जूते मँगवाती, समधन को जूतों की माला पहनाती,
मैं घर ना थी समधन मेरी आईं

12. मैं सासू घर देखि आई, आज मेरी गुइयाँ

(आज के प्री वेडिंग शूट के जमाने में बच्चे यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि एक समय लड़की शादी के पहले केवल ख्यालों में ही ससुराल जा सकती थी)

मैं सासू घर देखि आई, आज मेरी गुइयाँ।

हमरे ससुर जी की बड़ी बड़ी मोछियां, मैं नोच नाच फेंक आई, आज मेरी गुइयाँ।
मैं सासू घर देखि आई, आज मेरी गुइयाँ।

हमरे जेठ जी की बड़ी-बड़ी धोतिया, मैं फाड़ फूड़ फेंक आयी, आज मेरी गुइयाँ।
मैं सासू घर देखि आई, आज मेरी गुइयाँ।

हमरे देवर जी के बड़ी-बड़ी जुलफें, मैं कैंची से काटि आयी, आज मेरी गुइयाँ।
मैं सासू घर देखि आई, आज मेरी गुइयाँ।

हमरे बलम जी की, बड़ी-बड़ी अँखियाँ, मैं नयना लड़ाइ आई, आज मेरी गुइयाँ।
मैं सासू घर देखि आयी, आज मेरी गुइयाँ।

13. पुदीने वाला आया है, ओ सासू रानी

(बन्नी गीत हों, जच्चा गीत हों या गालियाँ, बेचारी ननदी सब से प्राइम टारगेट होती है)

पुदीने वाला आया है, ओ सासू रानी।

पुदीने वाले के पगड़ी नहीं है,
ससुर जी की दे दो, ओ सासू रानी।

पुदीने वाले के कुर्ता नहीं है,
जेठ जी का दे दो, ओ सासू रानी।

पुदीने वाले के धोती नहीं है,
देवर जी की दे दो, ओ सासू रानी।

पुदीने वाले के बीबी नहीं है,
ननद जी को दे दो, ओ सासू रानी।

14. तुम लगो हमारे समधी जी तुम्हें गाली कैसे गाऊँ

(ये अदा तो सब से निराली है. समधी को गाली देती जा रही हैं और कह रही हैं कि तुम हमारे समधी हो तुम्हें गाली कैसे दे सकती हूँ)

तुम लगो हमारे समधी जी तुम्हें गाली कैसे गाऊँ।

गाली कैसे गाऊँ, तुम्हें कमरे में बिठाऊँ,
कमरे में बिठाऊँ तुम्हें मूसल से धमकाऊँ,

तुम लगो हमारे समधी जी तुम्हें गाली कैसे गाऊँ।

गाली कैसे गाऊँ, तुम्हें चौक में बिठाऊँ,
चौक में बिठाऊँ तुम्हें सोटे से धमकाऊँ,
तुम लगो हमारे समधी जी तुम्हें गाली कैसे गाऊँ।

गाली कैसे गाऊँ, तुम्हें बाग में बिठाऊँ,
बाग में बिठाऊँ तुम्हें झाड़ू से धमकाऊँ,
तुम लगो हमारे समधी जी तुम्हें गाली कैसे गाऊँ।

गाली कैसे गाऊँ तुम्हें आँखों से समझाऊँ,
तुम लगो हमारे समधी जी तुम्हें गाली कैसे गाऊँ।

15. खो गई खो गई रे, अरे हाँ खो गई खो गई रे

(हर बार समधन खो जाती है और देखिये, कैसी कैसी जगहों पर मिलती है)

खो गई खो गई रे, अरे हाँ खो गई खो गई रे, समधन दिल्ली के बाज़ार में

समधी भी ढूँढें, बाराती भी ढूँढें, पा गई, पा गई रे, अरे हाँ पा गई, पा गई रे
हलवाई की दुकान पर, रबड़ी खा रही थी, हलवाई की दुकान पर
खो गई खो गई रे, – – –

भईया भी ढूँढें, और जीजा भी ढूँढें, पा गई, पा गई रे, अरे हाँ पा गई, पा गई रे,
पनवाड़ी की दुकान पर, बीड़ा चब रही थी, पनवाड़ी की दुकान पर।
खो गई खो गई रे,

बेटा भी ढूँढें, भतीजे भी ढूँढें, पा गई, पा गई रे, अरे हाँ पा गई, पा गई रे,
फ़ल वाले की दुकान पर, केले खा रही थी, फ़ल वाले की दुकान पर।
खो गई खो गई रे,

पोता भी ढूँढें, पतोहू भी ढूँढें, पा गई, पा गई रे, अरे हाँ पा गई, पा गई रे,
भड़भूँजे की दुकान पर, चने चाब रही थी, भड़भूँजे की दुकान पर।
खो गई खो गई रे,

16. समधी हो गए रे नचनिया, कैसे सपरी

(यह वाला तो कुछ ज्यादा ही मजेदार है)

समधी हो गए रे नचनिया, कैसे सपरी
केश काढ़ चोटी गुँथवाएँ, बिंदी माथ लगाएँ, नैन में कजरा, नाक में नथनी, गले में माला डालें,
नाचें-गाएँ लचकनिया, कैसे सपरी। समधी हो गए रे
पैंट के ऊपर लहँगा पहनें, चोली गोटे वाली, उसके ऊपर ओढ़ चुनरिया, चाल चलें मतवाली,
बाजें पैरों में पैंजनियाँ, कैसे सपरी। समधी हो गए रे
लखनऊ का खुद को बतलाएँ, नाम बताएँ चमेली, भरी सभा में छमछम नाचें, जैसे नार नवेली,
बल खाए रे कमरिया, कैसे सपरी। समधी हो गए रे
हाथ में इनके कंगन सोहें, और अँगूठी चार, भरे बाज़ार में समधी, कुँजड़न से जतलावें प्यार,
इनके बिगड़े हैं चलनवा, कैसे सपरी। समधी हो गए रे

17. देखो समधन रानी जी, किस ठाठ बाट से आई हैं

(समधन जी निरी देहातिन हैं, इसलिए उनकी खातिरदारी करने में बड़ी परेशानियाँ आ रही हैं)

देखो समधन रानी जी, किस ठाठ बाट से आई हैं
आँख का काजल गालों तक, और होंठ की लाली कानों तक,
लाल चुनरिया धरती तक, वो सड़क झाड़ती आई हैं।
देखो समधन ....
समधन जी की खातिर मैंने, कुर्सी मेजें लगवाईं,
समधन रानी बैठना न जानें, फिर दरियाँ बिछवाईं हैं।
देखो समधन ——-
समधन जी की खातिर मैंने, कोल्ड ड्रिंक थीं मँगवाईं,
समधन रानी पीना न जानें, फिर लस्सी मँगवाईं हैं।
देखो समधन..........
समधन जी की खातिर मैंने, बढ़िया बिस्कुट मँगवाईं,
समधन रानी खा ना जानें, फिर रोटी सिकवाईं हैं।
देखो समधन——
समधन जी की खातिर मैंने, पान इलायची मँगवाईं,
समधन रानी खा ना जानें, फिर छाली मँगवाईं हैं।
देखो समधन———
समधन जी की खातिर मैंने, घुँघरू ढोलक मँगवाईं,
समधन रानी बजाना न जानें, फिर ताली बजवाईं हैं।
देखो समधन——-
समधन जी की खातिर मैंने, समधी जी बुलवाए हैं,
उनको तो वो कुछ भी ना मानें, फिर अपने भिजवाए हैं।

देखो समधन———

18. गंगा कैसी बहे, हमें देखने का चाव

(गालियों में कभी कभी थोड़ी अश्लीलता भी देखने को मिलती है, लेकिन तब भी उस हँसी मजाक के माहौल में कोई बुरा नहीं मानता)

गंगा कैसी बहे, हमें देखने का चाव, धारा कैसी बहे, हमें देखने का चाव।

जब समधन जी न्हाने निकरीं, जब समधन जी,
संग चले सब, संग चले सब यार। गंगा कैसी बहे........

जब समधनजी को जाड़ा लागा, जब समधन जी को,
लिपट गए सब, लिपट गए सब यार। गंगा कैसी बहे.......

जब समधन जी को गरमी लागी, जब समधन जी को,
पंखा झलें सब पंखा झलें सब यार, गंगा कैसी बहे.......

न्हाय धोय जब बाहर निकरीं, न्हाय धोय जब,
दरशन कर रहे, दरशन कर रहे यार। गंगा कैसी बहे.......

जब समधन जी को भूख लगी तब, जब समधन जी को,
भोग लगावें, भोग लगावें सब यार। गंगा कैसी बहे......

19. ओ जी जमाई राजा, बताओ तो कहाँ गए थे

(गालियों की एक ख़ास बात यह होती है कि ये एकतरफा होती हैं, केवल कन्या पक्ष के लोग लोग ही गालियाँ गाते हैं. वर पक्ष के लोग जवाबी गालियाँ नहीं गा सकते)

ओ जी जमाई राजा, बताओ तो कहाँ गए थे।

अपनी अम्मा को बेचन गए थे, कि निबुआ डोल गया।
चली ज़ोर की हवा, कि निबुआ डोल गया।

अम्मा उतारी मीना बाजार में, अम्मा उतारी जौहरी बाजार में,
गाहक परखन लागे, कि निबुआ डोल गया।

जार जार रोवे समधी हमारे, जार जार रोवे समधी बिचारे
माल पराया हुआ, कि निबुआ डोल गया।

20. घर घर बजत बधइया, आए हैं लाला

(एक छोटी सी लेकिन मजेदार गाली)

घर घर बजत बधइया, आए हैं लाला।

सगरे बराती जेवन बैठे,
ढाई सेर के खउआ, आए हैं लाला।

मंडप के नीचे समधी जी बैठे,
जैसे बरात के नउआ, आए हैं लाला।

समधी की बोली ऐसे लागे,
जैसे बोले कउआ, आए हैं लाला।

देखन में समधी ऐसे लागें,
जैसे कोई हउआ, आए हैं लाला।

21. हमारी गली आ जाना, प्यारे समधी जी

(समधी आयेंगे तो उन से समधन क्या क्या काम करवाएँगी यह पूरी लिस्ट तैयार है. जरा सी गलती होने पर सजा देने का भी पूरा इंतजाम है. मतलब समधी जी की तो खैर नहीं है)

हमारी गली आ जाना, प्यारे समधी जी।
महलों बुलाऊँ, चक्की चलवाऊँ,
पीसोगे मोटा तो मारूँगी सोटा, अरे, मारूँगी हंटर घुमाय,
हमारी गली.......
बागों बुलाऊँ, घास खुदवाऊँ,
छोड़ोगे काँटा तो मारूँगी चाँटा, देऊँगी खुरपी थमाय,
हमारी गली.......
कुआँ बुलाऊँ, पानी भरवाऊँ,
जो छलकेगी गगरी तो मारूँगी कंकरी, देऊँगी पूरो भिजाय,
हमारी गली......
पथनौरे बुलाऊँ, गोबर थपवाऊँ, देऊँगी उपले थमाय, हमारी गली......
(पथनौरा – वह स्थान जहाँ उपले थापने के लिए गोबर इकठ्ठा किया जाता है)

22. पूछो पूछो कहाँ पे बारात रुकी है

(बरात जहाँ रूकती है उसे जनवासा कहते हैं. जनवासे से सारे बरातियों का आँखों देखा हाल सुनिए)

पूछो पूछो कहाँ पे बारात रुकी है।

लड़की वाले पूछ रहे हैं, कहाँ बन्ने के भैया,
जनवासे में खड़े खड़े, वो करते ता ता थईया,
पूछो पूछो.......
लड़की वाले पूछ रहे हैं, कहाँ बन्ने के मौसा,
उस कोने में खड़े खड़े, वो उड़ा रहे समोसा।
पूछो पूछो........
लड़की वाले पूछ रहे हैं, कहाँ बन्ने के मामा,
छत के ऊपर खड़े खड़े, वो बाँध रहे पाजामा।
पूछो पूछो........
लड़की वाले पूछ रहे हैं, कहाँ बन्ने की बूआ,
छुप छुपकर वो ठूंस रहीं हैं, दे पूए पे पूआ।
पूछो पूछो........
लड़की वाले पूछ रहे हैं, कहाँ बन्ने की बहना,
ताका झाँकी करती डोलें नहीं किसी से कहना।
पूछो पूछो ......
लड़की वाले पूछ रहे हैं, कहाँ बन्ने की अम्मा,
चौराहे पर खड़ी खड़ी, वो देवें सबको चुम्मा।
पूछो पूछो......

23. ठठेरे आयेंगे

(पहले जमाने में बर्तन बनाने वाले ठठेरे घर घर जा कर टूटे फूटे बर्तनों को ठीक भी करते थे और पुराने के एक्सचेंज में नए बर्तन भी देते थे. समधी को समझाया जा रहा है कि ठठेरे आएँ तो समधन को ठीक करा लेना या बदलवा लेना)

एक महिला कोई लाइन बोलती है और “वाह वाह” और “जरूर” यह दो टुकड़े शेष सब मिलकर बोलती हैं।
ठठेरे आयेंगे, ———- वाह वाह !
ठठेरे आयेंगे, ———- वाह वाह
सवेरे आयेंगे, ———- वाह वाह
दूर से आयेंगे, ———- वाह वाह
बदलने आयेंगे, ———- वाह वाह
समधन जी को बदलाना, जरूर !

आनन बदलाना, फानन बदलाना, समधन जी को बदलाना, जरूर !
काली से गोरी करवा लेना, जरूर !
मोटी से पतली करवा लेना, जरूर !
छोटी से लम्बी करवा लेना, जरूर! मटक्को को सीधी करवा लेना, जरूर!
नखरो का नखरा झड़वा लेना, जरूर!
ठठेरे आयेंगे, ———- वाह वाह!

24. सासू लड़ मत लड़ मत, न्यारी कर दे

(आज के जमाने की बहू सास की ज्यादतियाँ सहन नहीं करती. फौरन अलग होने को तैयार रहती है)

सासू लड़ मत लड़ मत, न्यारी कर दे।

तोसे टीका नहीं माँगूँ, तोसे हरवा नहीं माँगूँ,
मेरे बाप का जेवर मेरे आगे कर दे।

तोसे कुरसी नहीं माँगूँ, तोसे मेज नहीं माँगूँ,
मेरे बाप का फर्नीचर मेरे आगे कर दे।

तोसे जेठ नहीं माँगूँ, तोसे देवर नहीं माँगूँ,
मेरे बाप का जमाई मेरे आगे कर दे।

तोसे ननदी नहीं माँगूँ, तोसे नंदोई नहीं माँगूँ,
मेरे बाप का धेवता मेरे आगे कर दे।

जयमाल

1. मन की उमंगों को

(चाहे कितने भी फ़िल्मी गाने बन जाएँ, जो बात इन ओरिजिनल गीतों में है वह बात उन में कहाँ)

मन की उमंगों को डोरी में गूंथ गोरी चल दी पहनाने को हार।
घूंघट में चन्दा सा मुखड़ा छिपाये, सोलह सिंगारो से रति भी लजाये,
प्राणों की कोकिल ने छेड़े तराने, जीवन में आई बहार।
मन की उमंगों को - -

ममता ने पैरो में ताले लगाये, प्रियतम के दर्शन को आगे बढ़ाये,
नैनों में लज्जा का सागर छुपाये, अन्तर में प्रियतम का प्यार।
मन की उमंगों को - -
जीवन की कैसी अनोखी कहानी, उर में उमंगे है आँखों में पानी,
सपनो को सच्चा बनाने चली गोरी, आशा के दीपों को वार।
मन की उमंगों को - -
जीवन के साथी बन्ने जी पधारे, ये ही प्यारी बन्नी प्रियतम तुम्हारे,
जीवन की नैया के आये खिवैया, सौपों इन्हें पतवार।
मन की उमंगों को - -
चरणों में झुक कर करो मन न्यौछावर, प्रियतम खड़े तेरे द्वार।
मन की उमंगों को - - (तर्ज़ : बच्चे मन के सच्चे)

2. देखो चली रे गोरी

(अत्यंत मधुर और उच्च साहित्यिक श्रेणी का जयमाल गीत)

देखो चली रे गोरी, मुस्कान है मधु नैनन मे
प्रीत धरोहर भेट करन को प्रीतम के चरनन में
देखो चली रे गोरी . . .
आगे फूलों की क्यारी, सखियन संग है सुकुमारी
कनअंखियों से देख रही फुलवारी निज प्राणों की
संग सहेली बचपन की, छोड़ डगर ली साजन की
आज लजाती है निज मुख को निरख निरख दर्पण में
देखो चली रे गोरी . . .
नूपुर बोलें छम छम छम, हर्ष झूमता कदम कदम
अंतर खोले प्रेम खड़ा ,देख प्रीत की कोमलता
आज अधरों की वीणा पर, मचले है जयमाल के स्वर
कितना गूढ़ रहस्य छिपा है आज इस गूँगे पन मे
देखो चली रे गोरी . . .
कोमल कर में है जयमाल, लेता है उत्साह उछाल
रुक्मणि को घनश्याम मिले, सीता को श्रीराम मिले
दो प्राणी अनजान मिले, चहुँ दिश हर्ष के फूल खिले
डाल गले जयमाल खिले हैं आज सुमन मधुवन में

3. श्री रघुवर कोमल, कमल नयन को

(रामानंद सागर के प्रसिद्द सीरियल रामायण में रविन्द्र जैन जी द्वारा गाया गया मधुर जयमाल गीत)

श्री रघुवर कोमल, कमल नयन को,
पहनाओ जयमाला, पहनाओ जयमाला।
यह पुण्य मुहूर्त, स्वर्णिम अवसर,
फिर नहीं आने वाला, पहनाओ जयमाला॥
दो-चार चरण चलते-चलते,
श्री रघुवर तक ऐसे पहुँचे।
ज्यों छुईमुई के पल्लव हों,
सिमटे-सिमटे, सकुचे-सकुचे॥
श्रीराम चकित चितवैं सीता का, अद्भुत रूप निराला।
पहनाओ जयमाला॥

घोड़ी

1. बन्ना घोड़ी ना चढ़े, वो तो कार मांगे

(मॉडर्न बन्ना घोड़ी चढ़ने को तैयार नहीं है, महँगी महँगी कार माँग रहा है)

बन्ना घोड़ी ना चढ़े, वो तो कार मांगे
कार मांगे फेरारी कार मांगे-2
बन्ना घोड़ी पे ना चढ़े, वो तो कार मांगे
उसके दादा कहे, घोड़ी चढ़ लाडले
उसके ताऊ कहे, घोड़ी चढ़ लाडले
बन्ना ऐसा हठीला, वो तो कार मांगे
बन्ना घोड़ी न चढ़े ....
(इसी तरह पापा, चाचा, भैया, मामा, मौसा, फूफा और जीजा सभी के नाम लेना है)

2. घोड़ी बंगाले से आई, जिस पर चढ़ा न उतरा जाय

(बंगाल से स्पेशल घोड़ी मंगाई गई है, लेकिन बन्ने राजा भी एक ही फितरती हैं. दादा, नाना, पापा के हाथों से घोड़ी नहीं चढ़ रहे हैं. दादी, नानी मम्मी के हाथ से चढ़ रहे हैं)

घोड़ी बंगाले से आई, जिस पर चढ़ा न उतरा जाय।
ले गोदी उसके दादा चढ़ावे उछल कूद रह जाय,
ले गोदी उसकी दादी चढावे, उचक तुरंत चढ़ जाय,
घोड़ी बंगाले से आई - -
ले गोदी उसके पापा चढ़ावे, उछल कूद रह जाय,
ले गोदी उसकी मम्मी चढ़ाये, उचक तुरंत चढ़ जाय,
घोड़ी बंगाले से आई - -
ले गोदी उसके नाना चढ़ाये उछल कूद रह जाय,
ले गोदी उसकी नानी चढ़ावे उचक तुरंत चढ़ जाय।
घोड़ी बंगाले से आई - -

(इसी तरह सब के नाम लेते जाओ, गीत, आगे बढ़ता जायेगा)

3. झूम रही सारी बारात कि बन्ना घोड़ी बैठ गयो

(बरात का असली आनंद तो बन्ने के घोड़ी चढ़ने के बाद ही शुरू होता है)

झूम रही सारी बारात कि बन्ना घोड़ी बैठ गयो-2
आगे आगे दादा नचत है, आगे आगे ताऊ नचत है
तो झूम रही सारी बारात कि बन्ना घोड़ी बैठ गयो
दादी बाकी फूली न समाए, ताई बाकी फूली न समाए
तो दादी नजर उतारें कि बन्ना घोड़ी बैठ गयो (इस तरह पापा, चाचा, भाई, मामा, मम्मी, चाची, भाभी, मामी आदि सभी रिश्तेदारों के नाम लेना है)

भात

1. सोने का महल उसमें, चाँदी का दरवाजा

(तर्ज़ - कौन दिसा में ले के चला रे)

(भाई जो भात ले कर आता है उसको देखने की ललक हर बहन को होती है)

सोने का महल उसमें, चाँदी का दरवाजा,
मेरा भैया आया रे, भतैया आया रे
जरा देखन दे, देखन दे
टीका भी लाया भैया, बिंदिया भी लाया
उसके टीके की झलक, उसकी बिंदिया की झलक,
जरा देखन दे, देखन दे।
झाले भी लाया भैया, हरवा भी लाया,
उसके झाले की झलक, उसके हरवे की झलक,
जरा देखन दे, देखन दे।

2. मेरे द्वारे की शोभा बढ़ाना

(बहन को भाई का रुपया पैसा नहीं चाहिए, केवल प्यार और आशीर्वाद चाहिए)

मेरे द्वारे की शोभा बढ़ाना, ओ भैया मेरे भात लेके आना
सोने का न लालच, न चाहूं मैं पैसा
कुछ भी नहीं मेरे भैया के जैसा
मंगल आशीष दे जाना, ओ भैया मेरे भात ले के आना
कुछ भी ना मांगू मैं, कुछ भी ना चाहूं
भैया तेरे जीवन में खुशियां मैं चाहूं
रोली का टीका लगवाना, ओ भैया मेरे भात ले के आना
आकर बहन को गले से लगाना
पीला भी लाना भैया, चूड़ा भी लाना
शान से चूनर उढ़ाना, ओ भैया मेरे भात ले के आना

3. मेरे आंगन निकले चांद, भैया उसके पहले आना

(भाई जब भात ले कर आता है तो ससुराल में बहन का मान बढ़ता है. बहन को यह चिंता भी रहती है कि भाई समय से पहले ही आ जाए तभी सब को अच्छा लगेगा)

मेरे आंगन निकले चांद, भैया उसके पहले आना

आंगन की शोभा भैया, मेरे चौक की शोभा भैया
वो समय निकल न जाए, भैया उसके पहले आना
मेरे आंगन निकले चांद —
आकर मेरा मान बढाना, मेरे सर पर चुनर उढ़ाना
चाहे रोज-रोज न आना भात के वक्त जरूर आना
ये मौका नहीं गंवाना, भैया भात के पहले आना
मेरे आंगन निकले चांद —

4. मेरा रंगरंगीला परिवार, भात तुम ले आना भतैया

(बहन का परिवार बहुत बड़ा है. भात लाने वाला भाई कहीं डर न जाए इसलिए बहन उसे पहले से ही सावधान कर दे रही है)

मेरा छैलछबीला परिवार, भात तुम ले आना भतैया
जितने पत्ते पीपल में भतैया
मेरे उतने देवर जेठ, देख मत डर जाना भतैया
मेरा रंगरंगीला परिवार...
जितने पत्ते तुलसी में भतैया
मेरी उतनी देवरानी जिठानी, देख मत डर जाना भतैया
मेरा रंगरंगीला परिवार...
जितने मोती माला में भतैया
उतने मेरे ननद ननदोई, देख मत डर जाना भतैया
मेरा रंगरंगीला परिवार...
जितने तारे अंबर में भतैया
उतने ही मेरे बाल गोपाल, देख मत डर जाना भतैया
मेरा रंगरंगीला परिवार...

5. तेरी बहन खड़ी दरवाजे, कूंडी खोल रे भैया

(बेटे या बेटी की शादी तय होने के बाद बहन भाई के घर जा कर उसे अपने घर भात ले कर आने का निमंत्रण देने जाती है. इसे भात न्यौतना कहते हैं)

तेरी बहन खड़ी दरवाजे, कूंडी खोल रे भैया
कुंडी खोल रे भैया, दरवाजा खोल रे भैया
तेरे भानजे का ब्याह, न्यौतन आई रे भैया
तेरी बहन खड़ी दरवाजे, कुंडी खोल रे भैया

न चाहिए बिंदी टीका रे, न चाहिए झुमका नथनी रे
एक ओढने की चुनरी लेता आइयो रे भैया
तेरी बहन खड़ी दरवाजे . . .
न चाहिए चूड़ी कंगन, न चाहिए गले का हार रे
एक लाख का चूड़ा, लेता आइयो रे भैया
तेरी बहन खड़ी दरवाजे . . .
न चाहिए साड़ी-ब्लाउज, न चाहिए लहंगा सलवार
एक सर की चुनरी लेता आइयो रे भैया
तेरी बहन खड़ी दरवाजे . . .
न चाहिए रुपैया पैसा, न चाहिए सोना-चांदी रे
बस एक रुपैया लेता आइयो रे भैया
तेरी बहन खड़ी दरवाजे . . .
भैया जल्दी आना रे, संग़ में भाभी-बच्चों को लाना रे
आकर अपनी बहन का मान बढाना रे भैया
तेरी बहन खड़ी दरवाजे . . .

6. भतेतन खो गई रे लखनऊ के बाजार में

(भात के मौके पर बहनें भात लेकर आने वाली भाभी से मजाक भी कर लेती हैं)

भतेतन खो गई रे
ससुर भी ढूंढे जेठ भी ढूंढे कहीं नहीं वह पाई
अरे मिल गई मिल गई रे हलवाई की दुकान पे
भतेतन मिल गई रे
वो तो दोना चाटे रे हलवाई की दुकान पे
देवर भी ढूंढे नंदोई भी ढूंढे कहीं नहीं वह पाई
अरे मिल गई मिल गई रे पनवाड़ी की दुकान पे
भतेतन मिल गई रे
वो तो पान चबाए रे पनवाड़ी की दुकान पे
भैया भी ढूंढे जीजा भी ढूंढे कहीं नहीं वह पाई
अरे मिल गई मिल गई रे बजजवा की दुकान पे
भतेतन मिल गई रे
वो तो कपड़ा नापे रे बजजवा की दुकान पे

मेहंदी गीत

(बन्नी को मेहंदी लगाने से वैवाहिक उत्सव की शुरुआत होती है. अपने मन की उमंगों को घर की महिलाएँ, बहनें और सखियाँ, गीत गा कर प्रकट करती हैं)

1. बन्नी के गोरे गोरे हाथ, मेहँदी लगाओ रे,

बन्नी के गोरे गोरे हाथ, मेहँदी लगाओ रे,
इस पे बन्ने का लिख दो नाम
बन्नी हमारी चाँद का टुकड़ा, बन्ना हैं राजकुमार
आँखों में कजरा, कानो में झुमका, कर दो सोलह श्रृंगार
ढोलक बाजे, बाजे मंजीरा, शहनाई बज रही द्वार
मिलजुल गाओ गीत ख़ुशी के, आया है शुभ दिन आज

2. मेरी बन्नी के गोरे-गोरे हाथ मेहंदी खूब रची।

मेरी बन्नी के गोरे-गोरे हाथ मेहंदी खूब रची।
खूब रची मेहंदी, खूब रची॥
बन्नी के दादाजी मेहंदी ले आए,
मेहंदी ले आए जी, मेहंदी ले आए।
दादी रानी रचाएँ दोनों हाथ, के मेहंदी खूब रची॥
मेरी बन्नी के ...
बन्नी के पापाजी मेहंदी ले आए,
मेहंदी ले आए जी, मेहंदी ले आए।
मम्मी रानी रचाएँ दोनों हाथ,
के मेहंदी खूब रची॥
बन्नी के चाचाजी मेहंदी ले आए,
मेहंदी ले आए जी, मेहंदी ले आए।
चाची रानी रचाएँ दोनों हाथ,
के मेहंदी खूब रची॥

3. बन्ने के हाथों में मेहंदी रची है

बन्ने के हाथों में मेहंदी रची है,
बन्नी की आँखों में काजल सजी है।
चाँदी की थाली में मेहंदी सजाई,
सोने के कटोरे में पानी पिलाया।
बन्ने के प्यार की मेहंदी, सारे मिलके लगाओ रे...
बना के हाथों में मेहंदी रची है,
बन्नी की आँखों में काजल सजी है।
मेहंदी रचाओ रे, सब मंगल गाओ रे,
बन्ने के हाथों में मेहंदी रची है!

4. मेहंदी की शुभ घड़ी आज

(पार्वती के विवाह में माँ मैना देवी के आँगन में सभी देवियाँ आकर उन्हें मेहंदी लगा रही हैं)

मेहंदी की शुभ घड़ी आज, मैना तेरे आँगन में।
गौरा रचाएँ दोनों हाथ, मैना तेरे आँगन में॥
मेहंदी लगाने माँ सरस्वती आई - 2
बज रहे सुर और ताल, मैना तेरे आँगन में॥
मेहंदी लगाने माँ लक्ष्मी जी आई - 2
बाँट रहे धन और दान, मैना तेरे आँगन में॥
मेहंदी लगाने माँ सीता जी आई - 2
मिल रहे सर्वसुहाग, मैना तेरे आँगन में॥
मेहंदी लगाने माँ राधा रानी आई - 2
बरस रहा है प्रेम, मैना तेरे आँगन में॥

हल्दी गीत

(बन्नी का श्रृंगार हल्दी लगाने के साथ शुरू होता है. इस अवसर पर भी मंगल गीत गाए जाते हैं और हँसी मजाक का माहौल होता है. आजकल की शादियों में तो हल्दी की रस्म एक बड़ा इवेंट बन गई है)

1. तन बदन पे हल्दी लगी हाथ बंधे कंगना

तन बदन पे हल्दी लगी हाथ बंधे कंगना
राम जाने कब होगा बन्ना जी से सामना
शीश बनी के टीका सोहे
झूमर संभाले बन्नी बन्ना जी के अंगना
राम जाने कब होगा बन्ना जी से सामना
कान बनी के झुमका सोहे
कुण्डल संभाले बन्नी बन्ना जी के अंगना
राम जाने कब होगा बन्ना जी से सामना
पाँव बन्नी के पायल सोहे
बिछुए संभाले बन्नी बन्ना जी के अंगना
राम जाने कब होगा बन्ना जी से सामना
हाथ बन्नी के कंगन सोहे
चूड़ियां संभाले बन्नी बन्ना जी के अंगना
राम जाने कब होगा बन्ना जी से सामना

2. दादाजी ने मंगवाई जल्दी-जल्दी

(और अब सुनिए मॉडर्न हल्दी गीत)
दादाजी ने मंगवाई जल्दी-जल्दी
ये बढ़िया सी हल्दी आर्डर किया फोन से
यह हल्दी मंगवाई गई है Amazon से

पापाजी ने मंगवाई जल्दी-जल्दी
ये बढ़िया सी हल्दी आर्डर किया फोन से
यह हल्दी मंगवाई गई है Amazon से

ब्यूटीफुल बन्नी जरा और निखरेगी
दादी मम्मी के हाथो हल्दी जब लगेगी
उत्सव मनेगा धूमधाम से

ताऊ जी ने मंगवाई जल्दी-जल्दी
ये बढ़िया सी हल्दी आर्डर किया फोन से
यह हल्दी मंगवाई गई है Amazon से

चाचा जी ने मंगवाई जल्दी-जल्दी

ये बढ़िया सी हल्दी आर्डर किया फोन से
यह हल्दी मंगवाई गई है Amazon से

ब्यूटीफुल बन्नी जरा और निखरेगी
ताई चाची के हाथों से हल्दी जब लगेगी
उत्सव मनेगा धूमधाम से

3.हल्दी बड़ी है खुशबूदार,

हल्दी बड़ी है खुशबूदार, लगवा लो बन्नी आया है सारा परिवार!
हल्दी बड़ी है खुशबूदार...
पापा तुम्हारे दूर से लाए, मम्मी पिसाएं, शिव गौरा को मनाएं,
होगा अटल ये सुहाग, लगवा लो बन्नी,
हल्दी बड़ी है खुशबूदार!
चाचा तुम्हारे दूर से लाए, चाची पिसाएं, विष्णु लक्ष्मी को मनाएं,
भरा रहेगा भंडार, लगवा लो बन्नी,
हल्दी बड़ी है खुशबूदार!
भैया तुम्हारे दूर से लाए, भाभी पिसाएं, राम सीता को मनाएं,
सुंदर होगा संस्कार, लगवा लो बन्नी,
हल्दी बड़ी है खुशबूदार!

4. हल्दी लगाओ रे, तेल चढ़ाओ रे

हल्दी लगाओ रे, तेल चढ़ाओ रे
बन्नी का गोरा बदन दमकाओ रे
हल्दी लगाओ ...

बन्नी हमारी चंदा का टुकड़ा-२
फूलों जैसे है बन्नी का मुखड़ा-२
मुखड़ा सजाओ रे, कंचन बनाओ रे
बन्नी का गोरा बदन दमकाओ रे
हल्दी लगाओ ...

बन्नी की बहियाँ फूलों की डारी-२
नाज़ुक नाज़ुक बन्नी हमारी-२
केसरिया हल्दी का उबटन लगाओ रे-२

बन्नी का गोरा बदन दमकाओ रे
हल्दी लगाओ ...

5. लगाओ सखियाँ हल्दी धीरे धीरे

लगाओ सखियाँ हल्दी धीरे धीरे
सोने की कटोरी में हल्दी पिसाओ
गोरी गोरी बन्नो का तन महकाओ
निखारो मेरी बन्नी का रंग धीरे-धीरे

बुआ सुहागन हल्दी लगाय
भाभी सुहागन हल्दी लगाय
सुनाओ सखियाँ मंगल धीरे-धीरे

हल्दी लगाओ तेल चढ़ाओ
मल मल के हल्दी का उबटन लगाओ
शर्मीली बन्नी मुस्कुराओ धीरे धीरे

कजरा लगाओ गजरा लगाओ
हीरे मोती का हार पहनाओ
पहनाओ सखिया कंगन धीरे-धीरे
लगाओ सखियाँ हल्दी धीरे धीरे

6. आज ख़ुशियाँ हैं मन में अपार, बन्ने के हल्दी लगी

(बन्ने के भी उतनी ही धूम धाम से हल्दी लगाई जाती है)

आज ख़ुशियाँ हैं मन में अपार, बन्ने के हल्दी लगी
दादी रानी हल्दी चढ़ावे, बाबा देखें हल्दी का निखार
बन्ने के हल्दी लगी ...
ताई रानी हल्दी चढ़ावे, ताऊ देखें हल्दी का निखार
बन्ने के हल्दी लगी....
मम्मी रानी हल्दी चढ़ावे, पापा देखें हल्दी का निखार
बन्ने के हल्दी लगी...
बुआ रानी हल्दी चढ़ावे, फूफा देखें हल्दी का निखार

बन्ने के हल्दी लगी...
दीदी रानी हल्दी चढ़ावे, जीजा देखें हल्दी का निखार
बन्ने के हल्दी लगी.....
सखियाँ सारी हल्दी चढ़ावे, गावे मंगला चार
बन्ने के हल्दी लगी......
आज ख़ुशियाँ हैं मन में अपार बन्ने के हल्दी लगी......

7. खुशियों की छाई है बहार, बन्नो तेरी हल्दी में

खुशियों की छाई है बहार, बन्नो तेरी हल्दी में
आया है सारा परिवार, बन्नो तेरी हल्दी में

पहली हल्दी दादाजी लावें, दादी पिसावें गणपति को चढ़ावें।
पूर्ण हुए सब काज बन्नो तेरी हल्दी में॥

दूसरी हल्दी पापाजी लावें, मम्मी पिसावें लक्ष्मी मैया को चढ़ावें।
भर गए सब भंडार बन्नो तेरी हल्दी में॥

तीसरी हल्दी चाचाजी लावें, चाची पिसावें सीता माँ को चढ़ावें।
दे दिया धर्म संस्कार बन्नो तेरी हल्दी में॥

चौथी हल्दी भैया लावें, भाभी पिसावें गौरा मैया को चढ़ावें।
दे दिया अमर सुहाग बन्नो तेरी हल्दी में।
दे दिया सुख-सौभाग्य बन्नो तेरी हल्दी में॥

पाँचवीं हल्दी फूफाजी लावें, बुआ पिसावें राधा रानी को चढ़ावें।
दे दिया प्रेम का ज्ञान बन्नो तेरी हल्दी में॥

ज्यौनार

1. राजा जनक करें ज्योनार

(ज्योनार के गीत बारातियों को बड़े प्रेम और आदर के साथ खाना खिलाते समय वधू पक्ष की महिलाओं द्वारा गारी के साथ गाए जाते हैं. कहीं कहीं पुरुषों की पीठ पर महिलाओं द्वारा हल्दी के थापे लगाने का चलन भी होता है, जिस में खूब हँसी मजाक होती है)

राजा जनक करें ज्योनार, जतन से हरे हरे, जतन से परसो री
पाँव पखार जतन से पौंछौ, आसन देओ बिछाय,
कंचन थार और सीप कटोरा, चांदी के गरुआ लगाय,
जतन से हरे हरे, जतन से बैठाओ री, राजा जनक –

थोरी तो छज्जन पे जाओ, मीठी गारी गाओ,
थोरी घर के भीतर जा के, हल्दी घोल के लाओ,
थाप मारे हरे हरे, जबर से लगाओ री, राजा जनक –

पूड़ी और कचौड़ी परसो, संग में खस्ता चार,
पापड़ कचरी दही बड़ा और, चटनी सौंठ अचार,
जतन से हरे हरे, जतन से परसो री, राजा जनक —

मठरी मट्ठे सैमै परसो, दाल मोठ दमदार,
अनन्नास रसभरी शरीफा, केला आम अनार,
जतन से हरे हरे, जतन से परसो री, राजा जनक —

मालपुआ और बरफी परसो, रबड़ी लच्छेदार,
ख़ुरमा खुरचन लड्डू पेड़ा, मक्खन मिश्रीदार,
जतन से हरे हरे, जतन से परसो री, राजा जनक —

ठंडाई और शरबत परसो, कांजी बूँदीदार,
दूध भरे बेला भी परसो, खांड मलाई डार,
जतन से हरे हरे, जतन से परसो री, राजा जनक —

छह रस छप्पन व्यंजन परसो, अंत में पान सुपार,
मोरछली के पंखा लै के, सब की करौ बयार,
जतन से हरे हरे, जतन से परसो री, राजा जनक —

2. सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए

(सीता मैया ने दावत दी तो सारे देवी देवता और वानर सेना को बुलाया. लेकिन एक गलती वह कर बैठीं कि हनुमान जी को भी बुला लिया. देखिये फिर क्या गजब हुआ)

सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
ब्रह्मा न्योते विष्णु न्योते, न्योते सब परिवार
वानर सेना सबरी न्योती, न्योते पवन कुमार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
ब्रह्मा आए विष्णु आए आए सब परिवार।
वानर सेना सबरी आई आए पवन कुमार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
आतर डारी पातर डारी डारे दौना चार
वानर सेना सबरी बैठी, बैठे पवन कुमार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
पूरी और कचौड़ी परसी, परसे लड्डू चार।
सब्जी रायतौ सब ही परसो रबड़ी लच्छे दार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
पूरी खाईं कचौड़ी खाई रबड़ी लच्छेदार।
सब्जी रायतो सबरो खायो खाली करे भंडार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
हाथ जोड़ के सीता मैया गईं राम के पास।
समझा लो अपने लाला को, खाली किये भंडार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
हंस के तबहिं राम जी बोले सुनो सिया मेरी बात।
तुलसी दल को भोग लगाओ फिर से भरें भंडार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
हाथ जोड़ के सीता मैया गईं तुलसी के पास।
तुलसी दल को भोग लगाओ, हनुमत लई डकार, पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी है ज्योनार, पवन सुत हरे हरे,पवनसुत न्योत दिए।
सीता मैया ने करी ज्योनार पवन सुत हरे

भाँवर

1. हमारे लिए वर ढूँढो जी

(जब फेरे लेने का समय आता है तब भी चंचल सखियाँ एकाध गीत गाती हैं जिन्हें भांवर गीत कहा जाता है)

अजी बाबा जी अजी ताऊ जी
हमारे लिए वर ढूँढो जी

सास हो जैसी गऊ माता
ससुर हों दिल्ली के दादा जी।

पति हों बाल ब्रह्मचारी
जो राखै प्राणों से प्यारी जी

गड़ा दो केले के खम्बे जी
और दिला दो मन्त्रों से फेरे जी।
(इसी प्रकार पिता, चाचा, मौसा, मामा, जीजा, भाई के नाम)

2. सिया रघुवर जी के संग, परन लागीं भांवरियाँ

(फेरे पड़ने के समय घर की बड़ी बूढ़ियाँ राम सीता को याद करना नहीं भूलतीं)

सिया रघुवर जी के संग, परन लागीं हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ
छायो चहुंदिस प्रेम का रंग, परन लागीं हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ
देख के छवि अति न्यारी उनकी, मोह में पड़ गई सीता प्यारी
इक टक ऐसे उनको निहारे, वो तो उन पे जाए वारी
सिया रघुवर जी के संग, परन लागीं हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ
प्रीत का धागा उन संग जोड़े, राम पे वो दिल जाए हारी
गौरी माँ से विनती करे वो, बन जाए वो राम की प्यारी
सिया रघुवर जी के संग, परन लागीं हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ
वो है अयोध्या जाने को बैठी, चूनर ओढ़े लागे प्यारी

राम सिया के ब्याह की घड़ियाँ, देखके चहुंदिस है खुशियारी
ये पावन कमल कदम, बढ़न लागे हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ
सिया रघुवर जी के संग, परन लागीं हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ
छायो चहुंदिस प्रेम का रंग, परन लगी हरे हरे
परन लागी भांवरियाँ

सुहाग गीत

1. सुहाग बरसे बन्नी तेरे अँगनवा

(बन्नी के अखंड सौभाग्य के लिए जो मंगल गीत गाया जाता है उसे सुहाग गीत कहते हैं)

सुहाग बरसे बन्नी तेरे अँगनवा
दादी के आँगन सुहाग बन्नी मांगे
अमर रहे बन्नी तेरो सिंदुरवा
सुहाग बरसे बन्नी तेरे अँगनवा
बुआ के आँगन सुहाग बन्नी मांगे
अमर रहे बन्नी तेरो कंगनवा
सुहाग बरसे बन्नी तेरे अँगनवा
भाभी के आँगन सुहाग बन्नी मांगे
अमर रहे बन्नी तेरी चुनरियां
सुहाग बरसे बन्नी तेरे अँगनवा
मौसी के आँगन सुहाग बन्नी मांगे
अमर रहे बन्नी तेरो बिछुवा
सुहाग बरसे बन्नी तेरे अँगनवा
दीदी के आँगन सुहाग बन्नी मांगे
अमर रहे बन्नी तेरो सजनवा

2. मैया रानी ने भेजा सुहाग सुहागन तेरे लिए

(सुहाग को देवी माँ का आशीर्वाद माना जाता है)

मैया रानी ने भेजा सुहाग सुहागन तेरे लिए
टीका भी भेजा मां ने झुमका भी भेजा
और भेजी है बिंदिया लाल
सुहागन तेरे लिए
चूड़ी भी भेजी मां ने,कंगना भी भेजा
और भेजी है मेहंदी लाल
सुहागन तेरे लिए
लहंगा भी भेजा मां ने, साड़ी भी भेजी
और भेजी चुनरिया लाल
सुहागन तेरे लिए
मैया रानी ने भेजा सुहाग, सुहागन तेरे लिए

3. लाडो सोने की कटोरी सुहाग मांगने जाए

(दादी नानी अपनी लाड़ो को सुहाग का आशीर्वाद दे रही हैं)

लाडो सोने की कटोरी सुहाग मांगने जाए

गई गई लाडो रानी बाबा के दरबार
गई गई लाडो रानी ताऊ के दरबार

दे दो दे दो दादी रानी अमर सुहाग
दे दो दे दो ताई रानी अमर सुहाग

दिया दिया दादी रानी ने अमर सुहाग
दिया दिया ताई रानी ने अमर सुहाग

लिया लिया लाडो रानी ने अमर सुहाग
लाडो सोने की कटोरी सुहाग मांगने जाए

छंद

(विवाह समारोह के बीच में एक रस्म होती है छंद की. कन्या पक्ष की महिलाएं वर से छंद सुनाने की फरमाइश करती हैं. वर को भी मौका मिलता है गालियों का उधार चुकता करने का)

छन्द पकाऊँ, छन्द पकाऊँ छन्द के ऊपर बरफी।
दूजा छन्द जब कहूं, जब सलहज दे अशरफी।।

छन्न पकाई छन्न पकाई, छन्न पके का खुरमा।
आपकी बेटी को ऐसे रक्खूं, जैसे आँख का सुरमा।।

छन्न पकाई छन्न पकाई, छन्न पके की डाली।
सासू मैया, प्यारी लागे हमको छोटी साली।।

छन्न पकाई छन्न पकाई, छन्न पके की हल्दी।
फेरे तो अब हो चुके, विदा कीजिये जल्दी।।

छन्न पकाई छन्न पकाई, छन्न पके का लोटा।
ऐसों के हम ब्याने आए, जहाँ पानी का भी टोटा।

छन्न पकाई छन्न पकाई, छन्न पके की सेम।
ससुर हमारे लाट साहब, सास हमारी मेम।।

छन्न पकाऊँ छन्न पकाऊँ छन्न का मैं हूँ आदी।
अगला छन्द जब सुनाऊँ जब गोद में बैठाये दादी।।

ढ़ोल बजे मृदंग बजे और बजे शहनाई।
उठो सास जी तिलक करो और जल्दी करो विदाई।।

छन्न पकाऊँ छन्न पकाऊँ छन्न के ऊपर किनकी।
हम अपनी को ले चले, तुम काहे को ठिनकी।।

रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे, सड़क में जम गई काई।
सासु जल्दी करो विदाई बेटी हुई पराई।।

गमले में गमला उस में पेड़ की डाली।
वो दूल्हा ही क्या, जिसकी नहीं कोई साली।।

लोटे पे लोटा, लोटे में जल।
(शहर) को छोड़कर (शहर) को चल।।

छंद पकिया, छंद पकिया छंद के ऊपर प्याली।
जीजा जी तो वही करेंगे जो कहे उनकी साली।।

छन्न पकाई छन्न पकाई छंद के ऊपर ताला/ताली
अगला छन्द तब सुनाऊं जब नच के दिखाए साला/साली

छन्न पकाई छन्न पकाई छंद के ऊपर ताली।
अगला छन्द तब सुनाऊं जब गोद में बैठे साली / इक पप्पी दे साली।।

छन्न पकाई छन्न पकाई छंद के ऊपर जीरा।
बारात आयी सोना, जमाई आया हीरा।।

छन्न पकाई छन्न पकाई छंद के ऊपर बाम।
सास हमारी पान की बेगम, ससुर हुकुम के गुलाम।।

छन्न पकाई छन्न पकाई चांद है कितना कूल।
कुड़ी तुम्हारी कली चम्पे दी, मैं गुलाब दा फूल।।

छन्न पकाई छन्न पकाई छंद के ऊपर आम।
सास ससुर के चरणों मे मेरा सादर प्रणाम।।

छन्न्न पकाई छन्न्न पकाई, छन्न्न पकाऊँ शातिर।
शहर तुम्हारे आए हैं हम इस बुलबुल की खातिर।।

छन्न पकाई छन्न पकाई छंद के ऊपर धूल।
आपकी लड़की को ऐसे रखेंगे जैसे गुलाब का फूल।।

छन पकाई छन पकाई छंद के ऊपर जुम्मा।
अगला छन्द तब सुनाऊं जब छोटी साली दे चुम्मा।।

सजनी हमको मिल गई, बांधी प्रेम की डोर ।
मिल-जुलकर ऐसे रहें, जैसे चंद चकोर

करम लेख विधि ने लिखा, लिखा अनोखा भाग ।
सबसे ऊपर लिख दिया, प्यारी का अनुराग

छन पकाऊँ, छन पकाऊँ, छन के ऊपर बस्ते
जितने यहां छोटे बड़े सबको मेरी नमस्ते

कजरी

1. नन्हीं नन्हीं बुँदियाँ रे, सावन का मेरा झूलना रे

नन्हीं नन्हीं बुँदियाँ रे, सावन का मेरा झूलना रे।
एक झूला डाला मैंने बाबाजी के राज में,
लंबी लंबी पेंगे रे, सावन का मेरा झूलना रे।

एक झूला डाला मैंने बाबुल जी के राज में,
लकड़ी की काठी रे, सावन का मेरा झूलना रे।

एक झूला डाला मैंने भैया जी के राज में,
गोद भतीजा रे, सावन का मेरा झूलना रे।

एक झूला डाला मैंने सासू जी के राज में,
लंबा लंबा घूंघट रे सावन का मेरा झूलना रे।

(इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है)

नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे, सावन का मेरा झूलना रे

एक सुख देखा मैंने अम्मा के राज में
हाथों में गुड़िया रे, सखियों संग मेरा खेलना रे
नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे...

एक सुख देखा मैंने, भाभी के राज में
गोद में भतीजा रे गलियों का मेरा घूमना रे
नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे...

एक सुख देखा मैंने बहना के राज में
हाथों में कसीदा रे फूलों का मेरा काढ़ना रे
नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे...

एक दु:ख देखा मैंने सासू के राज में
धड़ी भर गेहूँ रे चक्की का मेरा पीसना रे
नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे...

एक दुख देखा मैंने जिठनी के राज में
धड़ी भर आट्टा रे चूल्हे का मेरा फूँकना रे
नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे
सावन का मेरा झूलना रे

2. कच्ची नीम की निवौरी सावन जल्दी अइयो रे

कच्ची नीम की निवौरी सावन जल्दी अइयो रे।
बाबा दूर मति ब्यहियो दादी नहीं बुलायेगी।
कच्ची नीम की निबौरी ...

बाबुल दूर मति ब्यहियो अम्मा नहीं बुलायेगी।
कच्ची नीम की निबौरी ...

भइया दूर मति ब्यहियो भाभी नहीं बुलायेगी।
कच्ची नीम की निबौरी ...

चाचा दूर मति ब्यहियो चाची नहीं बुलायेगी।
कच्ची नीम की निबौरी ...

मामा दूर मति ब्यहियो मामी नहीं बुलायेगी।

3. हो कैसे खेलन जइहो सावन में कजरिया

हो कैसे खेलन जइहो सावन में कजरिया, बदरिया घिर आई ननदी।
तू तो जात है अकेली, कोई संग न सहेली,
हो छैला (कान्हा) रोक लिहैं तोहरी डगरिया, बदरिया घिर आई ननदी।

बिजली चम-2 चम-2 चमके, मेघा रिमझिम-2 बरसे,
हो काली नागिन जैसी रात अँधियारी, बदरिया घिर आई ननदी।

बादल गरज रहा घनघोर, घर में सैंया नाहीं मोर,
मैं तो ताकत रहिली पिय की डगरिया, बदरिया घिर आई ननदी।

कितने आशिक घायल होइहैं, कितने डामल फांसी पइहैं,
कितने पीसत होइहैं जेल में चकरिया, बदरिया घेरे आई ननदी।
हो कैसे खेलन जइहो सावन में कजरिया, बदरिया घिर आई ननदी।

4. शिव शंकर चले कैलाश कि बुंदियां पड़ने लगीं

शिव शंकर चले कैलाश कि बुंदियां पड़ने लगीं।
गौरा जी ने बो दी हरी हरी मेहंदी, शंकर ने बो दी भांग, कि बुंदियां पड़ने लगीं।
गौरा जी ने सींची हरी हरी मेहंदी, शंकर ने सींची भांग, कि बुंदियां पड़ने लगीं।

गौरा जी ने काटी हरी हरी मेहंदी, शंकर ने काटी भांग, कि बुंदियां पड़ने लगीं।
गौरा जी ने पीसी हरी हरी मेहंदी, शंकर ने घोटी भांग, कि बुंदियां पड़ने लगीं।

गौरा जी ने लगाई हरी हरी मेहंदी, शंकर ने पीली भांग, कि बुंदियां पड़ने लगीं।
गौरा जी के रच गई हरी हरी मेहंदी शंकर को चढ़ गई भांग, कि बुंदियां पड़ने लगीं।

5. झूला पड़ा कदम की डाली, झूलैं कृष्ण मुरारी रे

झूला पड़ा कदम की डाली, झूलैं कृष्ण मुरारी रे।

झूला झूलन राधा आयीं, संग में ललिता प्यारी रे।
झूला पड़ा कदम की डाली, झूलैं कृष्ण मुरारी रे।

पेंग मारिके श्याम झुलावें, सुधि-बुध खोवें, सारी रे।
झूला पड़ा कदम की डाली, झूलैं कृष्ण मुरारी रे।

6. अरी बहना तीजन की आई है बहार

अरी बहना तीजन की आई है बहार, बागन में चल के झूल लें –
संग की सहेली बहना सब चलीं
अरी बहना नख शिख करें श्रृंगार, बागन में –

मेहंदी रचाओ री बहना हाथ में – 2
अरी बहना नैनन में कजरा डार, बागन में –

रेशम की डोरी बहना ले चली – 2
अरी बहना पटली जड़ाऊ नमदार, बागन में –

हिलमिल के डारो झूला बाग में – 2
अरी बहना गावे गीत मल्हार, बागन में –

7. झूला तो पड़ गए, अम्बुआ की डार पे जी

झूला तो पड़ गए, अम्बुआ की डार पे जी,
एजी कोई राधा को, गोपाला बिन राधा को, झुलावे झूला कौन,
झूला तो पड़ गए, अम्बुआ की डार पे जी,

धीरज धर ले, मन समझाए ले री,
एजी अगले सावन में, राधा री अगले सावन में झूलेंगे कान्हाँ संग,
धीरज धर ले, मन समझाए ले री,

राधा का जीवन श्याम बिना, रामायण जैसे राम बिना,
संग की सहेलियाँ, समझें ना बात को जी,
एजी कोई उन बिन, हांजी हमें उन बिन, कछु ना सुहाए,
झूला तो पड़ गएँ, अम्बुआ की डार पे जी,

इन बागन में, इन फूलन में, हम झूले प्रीत की झूलन में,
अब ये फुलवा, चुभ रहे शूल से जी,
एजी इन बागन में, अकेले इन बागन में, पड़े ना अब पाँव,

झूला तो पड़ गएँ, अम्बुआ की डार पे जी,

मन भावन ये रुत, सावन की, कछु साजन की, कछु बावन की,
बैरी पपीहरा, पिऊ पिऊ रट रह्यो जी,
एजी वोतो जाने ना, पपीहा बैरी जाने ना, बिरहणी का हाल,
झूला तो पड़ गए, अम्बुआ की डार पे जी,

सावन में पपीहे के जैसे, बिरहा के दिन बीते ऐसे,
बंशी बजे ना, अब सखी चैन की जी,
एजी मेरा मनवा, ओ बहना मेरा मनवा, हुआ बेचैन,
झूला तो पड़ गए, अम्बुआ की डार पे जी,

8.कौने देसवा जाय लागि तुम

कौनै देसवा जाय लाग तुम बाँध के गठरिया
बदरिया घिर आई रे बलमा

तुम जात हो अकेली, कोई संग न सहेली
कोई रोक न ले तुम्हरी डगरिया, बदरिया घिर आई रे बलमा

गंगा मैया की कसम, तोको जाई न देवै हम
जो तुम जाई लागि तो रोके डगरिया, बदरिया घिर आई रे बलमा

भाभी बोले ऐसी बोली, सुन के दिल को लागे गोली
भैया कैसे जइयो भाभी की नगरिया, बदरिया घिर आई रे बलमा

होली के गीत, होरी

1. होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा

होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा।
कै मन केशर घोरी अवध में, कै मन उड़त अवीरा।

अवध में होली खेले रघुवीरा।
नौ मन कैमन केशर घोरी अवध में, दस मन उड़त अवीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।

के के हाथ कनक पिचकारी, के के हाथ अवीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।
राम के हाथ कनक पिचकारी, लछमन हाथ अवीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।

केकर भीजै पाग पिछौरा, केकर चोली चीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।
राम के भीजै पाग पिछौरा, सीता की चोली चीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।

कहवा धुवइला पाग पिछोरा, कहवा चोली चीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।
गंगा धुवइला पाग पिछोरा, सरजू चोली चीरा।
अवध में होली खेले रघुवीरा।

2. आज बिरज में होली रे रसिया

आज बिरज में होली रे रसिया, आज बिरज में होली हो रसिया ।
होली रे रसिया बरजोरी रे रसिया
ग्वाल बाल मिलि खेलें होली, और करें बरजोरी रे रसिया।

कौन गाँव के कुँअर कन्हाई, कौन की राधा गोरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

नन्दगाँव के कुँअर कन्हाई, बरसाने की राधा गोरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

उड़त गुलाल लाल भये बादल, केशर के रंग घोरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

बाजत ताल मृदंग झांझ ढप, और मंजीरन जोड़ी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

दोऊ मिल के फाग खेलत हैं, कहि-2 होरी रे होरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ करौरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

कान्हा के हाथ, कनक पिचकारी, राधा के हाथ करौरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया।

भर पिचकारी, कन्हैया ने मारी, भीगी चूनर कोरी रे रसिया।
आज बिरज में होली रे रसिया,

होली के रंग मगन सब नाचें, गावें दै दै ताली हो रसिया।
आज बिरज में होली है रसिया।

राधा श्याम सँग होली खेलें, करत हैं प्रेम ठिठोली रे रसिया।
आज बिरज में होली है रे रसिया।

(इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है)

आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
अपने-अपने घर से निकसीं, कोई श्यामल, कोई गोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केशर रंग में घोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप, और नगारे की जोड़ी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
कै मन लाल गुलाल मँगाई, कै मन केशर घोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
सौ मन लाल गुलाल मगाई, दस मन केशर घोरी रे रसिया॥
आज बिरज में ...
'चन्द्रसखी' भज बाल कृष्ण छबि, जुग-जुग जीयौ यह जोरी रे रसिया॥

आज बिरज में ...

3. पहली पिचकारी मोरे माथे पे मारी

पहली पिचकारी मोरे माथे पे मारी,
बिंदिया की आब बिगारी रे रसिया।
दूजी पिचकारी मोरी अंगिया पे मारी,
चुनरी की आब बिगारी रे रसिया।
तीजी पिचकारी गले बिच मारी,
हरवा की आब बिगारी रे रसिया।
चौथी पिचकारी मोरे पैरो पे मारी,
पायल की आब बिगारी रे रसिया।

4. हरा रंग डालो बसंती मिलाय के

हरा रंग डालो बसंती मिलाय के, बसंती मिलाय के 2
हरा रंग..
माथे पै बेंदी, बेंदी सोहे लाला, नथिया बचाय के.
हरा रंग..
कानो में झुमकी, झुमकी सोहे लाला, कुंडल बचायके.
हरा रंग..
अंग में चुनरी, चुनरी सोहे लाला लहंगा बचाय के.
हरा रंग..
पैरों में पायल, पायल सोहे लाला बिछुआ बचाय के.
हरा रंग..

5. मेरो खोय गयो बाजूबंद, रसिया होरी में

मेरो खोय गयो बाज़ूबंद, रसिया होरी में,
बाज़ूबंद मेरो बड़ो रे मोल को,
तो पे बनवाऊँ पूरे तोल को,
नन्द के परजंद, रसिया होरी में,
मेरो खोय गयो बाज़ूबंद, रसिया होली में।

सास लड़ेगी मेरी नंदुल लड़ेगी,
खसम की सिर पे मार पड़ेगी,
हुई जाय रस भंग, रसिया होरी में,
मेरो खोय गयो बाजूबंद, रसिया होली में ।

उधम तैने लाला बहुत मचायो,
लाज शरम जाने कहाँ धरि आयो,
मैं तो होय गई तोसे तंग, रसिया होरी में,
मेरो खोय गयो बाजूबंद, रसिया होली में।

तेरी मेरी प्रीत पुरानी,
तूने मोहन नाय पहचानी,
मोकू ले चल अपने संग, रसिया होरी में,
मेरो खोय गयो बाजूबंद, रसिया होली में।

6. लाल मेरी अँगिया न छूऔ

लाल मेरी अँगिया न छूऔ, तिहारे करूँगी कपोलन लाल॥
यह अँगिया नाहिं धनुष जनक को, छुबत टुटौ तत्काल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .
नहिं अँगिया गौतम की नारी, छुबत उठी नन्दलाल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .
जावौ तुम खाबौ सुदामा के तन्दुल, गैयन के प्रतिपाल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .
कहा बिलोकत कुटिल भृकुटि कर, नाहिं है पूतना काल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .
यह अँगिया कालीनाग न समझो, नथ्यौ जाय पाताल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .
इतनी सुन मुसकाय साँवरे, लियौ अबीर गुलाल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .
'सूरश्याम' मुख मसक छिड़क अंग, सखियाँ करीं निहाल॥
लाल मेरी अँगिया न छूऔ . . .

भजन

(लोकगीतों के इस संग्रह में केवल वही भजन संकलित किए गये हैं जिन्हें लोकगीतों के रूप में ही गाया जाता है. इन में से अधिकतर भजनों के रचयिता अज्ञात हैं)

1. कान्हा बरसाने में आए जैयो, बुलाय गई राधा प्यारी

कान्हा बरसाने में आए जैयो, बुलाय गई राधा प्यारी
बुलाय गई राधा प्यारी, बुलाय गई राधा प्यारी,
कान्हा बरसाने में आए जैयो, बुलाय गई राधा प्यारी,
कान्हा माखन मिश्री खाय जैयो, बुलाय गई राधा प्यारी।।

जब कान्हा रे तोहे प्यास लगेगी, जब कान्हा रे तोहे प्यास लगेगी
आहा ठंडा पानी पी जइयो, बुलाई गई राधा प्यारी,
कान्हा बरसाने मे आय जइयो, बुलाई गई राधा प्यारी।।

जब कान्हा रे तोहे ठंड लगेगी, जब कान्हा रे तोहे ठंड लगेगी,
आहा काली कंबलिया ले जइयो, बुलाई गई राधा प्यारी
कान्हा बरसाने मे आय जइयो, बुलाई गई राधा प्यारी।।

2. मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है, हैरान है जमाना मंजिल भी मिल रही है,
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है।

तुम साथ हो जो मेरे किस बात की कमी है, किसी और चीज की भी दरकार अब नहीं है,
तेरे साथ से गुलाम अब गुलफाम हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है।

मैं तो नहीं हूँ काबिल तेरा पार कैसे पाऊँ, टूटी हुई जुबां से गुणगान कैसे गाऊँ,
तेरी प्रेरणा से ही ये सब काम हो रहा है।

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है।

3. राधा ढूंढ रही, किसी ने मेरा श्याम देखा

राधा ढूंढ रही, किसी ने मेरा श्याम देखा।
राधा तेरा श्याम, हमने वृन्दावन में देखा -2,
रास रचाते हुए, हो राधा तेरा श्याम देखा।

राधा तेरा श्याम हमने, गोकुल में देखा -2,
गइयाँ चराते हुए, ओ राधा तेरा श्याम देखा ।।

राधा तेरा श्याम, हमने बंसीवट पे देखा -2,
बंसी बजाते हुए, हो राधा तेरा श्याम देखा।

राधा तेरा श्याम हमने गोपी के घर देखा -2,
माखन चुराते हुए, हो राधे तेरा श्याम देखा।

राधा तेरा श्याम हमने गोवर्धन में देखा -2,
परवत उठाते हुए, हो राधा तेरा श्याम देखा।

राधे तेरा श्याम हमने बरसाने में देखा -2,
होरी मचाते हुए हो राधा तेरा श्याम देखा।

4. कभी राम बनके, कभी श्याम बन के

कभी राम बनके, कभी श्याम बन के, चले आना प्रभु जी चले आना।
तुम राम रूप में आना -2
सीता साथ लेके, धनुष हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना॥
तुम श्याम रूप में आना -2
राधा साथ लेके, मुरली हाथ लेके चले आना, प्रभु जी चले आना॥
तुम शिव के रूप में आना -2
गौरा साथ लेके, डमरू हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना॥
तुम विष्णु रूप में आना -2
लक्ष्मी साथ लेके, चक्र हाथ लेके, चले आना प्रभु जी चले आना॥
तुम गणपति रूप में आना -2
रिद्धी साथ लेके, सिद्धी साथ लेके चले आना, प्रभु जी चले आना॥
कभी राम बनके, कभी श्याम बन के, चले आना प्रभु जी चले आना।

5. अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो

अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो, कि दर पै सुदामा गरीब आ गया है,
भटकते -2 न जाने कहाँ से तुम्हारे महल के करीब आ गया है,
अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो –
न सर पै है पगड़ी, न तन पै है जामा, बता दो कन्हैया को नाम है सुदामा,
एक बार मोहन से जाकर के कह दो, कि मिलने सखा बदनसीब आ गया है।
अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो –
सुनते ही दौड़े चले आये मोहन, लगाया गले से सुदामा को मोहन,
हुआ रुक्मणी को बहुत ही अचम्भा-2, ये मेहमान कैसा अजीब आ गया है।
अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो –
बराबर पै अपने सुदामा बैठाये, चरण आँसुओं से श्याम ने धुलाए,
न घबराओ प्यारे जरा तुम सुदामा, खुशी का समा अब करीब आ गया है।
अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो, कि दर पै सुदामा गरीब आ गया है।

6. जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम,
बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम।

माखन ब्रज में एक चुरावे, एक बेर शबरी के खावे,
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के हैं काम।

एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण संहारे,
दोनों दीन के दुख हरते हैं, दोनों बल के धाम।

एक हृदय में प्रेम बढावे, एक ताप संताप मिटावे,
दोनों सुख के सागर है, और दोनों पूरण काम।

7. कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है,
ऐसे श्री भगवान को, बारंबार प्रणाम है।

राधा जिनकी प्यारी है, मोहन विपिन बिहारी है,
ऐसे श्री घनश्याम को बारंबार प्रणाम है।

यशोदा जिनकी मैया है, नंद जी बापैया है,
ऐसे श्री गोपाल को, बारंबार प्रणाम है।

लूट लूट दधि माखन खायो, ग्वाल-बाल संग धेनु चरायो,
ऐसे लीला धाम को, बारंबार प्रणाम है।

द्रुपद सुता की लाज बचायो, ग्राह से गज को फ़ंद छुड़ायो,
ऐसे किरपा धाम को, बारंबार प्रणाम है।

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है,
ऐसे दीनानाथ को, बारंबार प्रणाम है।

8. छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल

छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥
आगे आगे गैया पीछे पीछे ग्वाल। बीच में मेरो मदन गोपाल॥
छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥

कारी कारी गैया, गोरे गोरे ग्वाल। श्याम वरण मेरो मदन गोपाल॥
छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥

घास खाए गैया, दूध पीवे ग्वाल। माखन खावे मेरो मदन गोपाल॥
छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥

छोटी छोटी लकुटी, छोले छोटे हाथ। बंसी बजावे मेरो मदन गोपाल॥
छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥

छोटी छोटी सखियाँ, मधुबन बाग। रास राचावे मेरो मदन गोपाल॥
छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥

9. अच्युतम केशवं कृष्ण दामोदरं

अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं, राम नारायणं जानकी बल्लभम।
कौन कहता हे भगवान आते नहीं, तुम मीरा के जैसे बुलाते नहीं।
अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं, राम नारायणं जानकी बल्लभम।

कौन कहता है भगवान खाते नहीं, बेर शबरी के जैसे खिलाते नहीं।

अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं, राम नारायणं जानकी बल्लभम।

कौन कहता है भगवान सोते नहीं, माँ यशोदा के जैसे सुलाते नहीं।
अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं, राम नारायणं जानकी बल्लभम।

कौन कहता है भगवान नाचते नहीं, गोपियों की तरह तुम नचाते नहीं।
अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं, राम नारायणं जानकी बल्लभम।

10. जीवन का मैं ने सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में

जीवन का मैं ने सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।

मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हे पा जाऊँ मैं,
अर्पण कर दूँ जीवन भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो चरणों का मैं पुजारी बनूँ,
उद्धार पतन अब मेरा है सरकार तुम्हारे हाथों में।

जब-जब धरती पर आना हो, निष्काम भाव से कर्म करूँ,
फिर अंत समय में प्राण तजूँ भगवान तुम्हारे हाथों में।

मुझ में तुम में है भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो,
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।

हम तुमको कभी नहीं भजते, फिर भी तुम हमें नहीं तजते,
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में।

कल्पना बनाया करती है इक सेतु विरह के सागर पर,
जिससे हम पहुँचा करते हैं उस पार तुम्हारे हाथों में।

11. मनिहारी का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया

मनिहारी का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया।
छलिया का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया।

झोली कांधे धरी उसमें चूड़ी भरी, गलियों में शोर मचाया,
श्याम चूड़ी बेचने आया।

राधा ने सुनी ललिता से कही, मोहन को तुरत बुलाया,
श्याम चूड़ी बेचने आया।
चूड़ी लाल नहीं पहनूँ, चूड़ी हरी नहीं पहनूँ, मोहे श्याम रंग है भाया,
श्याम चूड़ी बेचने आया।
राधा पहनन लगी श्याम पहनाने लगे, राधा ने हाथ बढ़ाया,
श्याम चूड़ी बेचने आया।
राधा कहने लगी, तुम हो छलिया बड़े, धीरे से हाथ दबाया,
श्याम चूड़ी बेचने आया।

इस गीत को इस प्रकार से भी गाया जाता है

नटवर नै भेस बनाया, ब्रज चूड़ी बेचने आया
कोई चूड़ी पहन लो छोरियो ऽ ऽ
सखियों ने सुना राधा से कहा
राधा ने झट बुलवाया, ब्रज चूड़ी बेचने आया।
राधा पहरन लगी, स्याम पहराने लगे
बा ने कसकर हाथ दबाया, ब्रज चूड़ी बेचने आया ।
राधा जान गई, कोई छलिया है ये
छलिए ने छल दिखलाया , ब्रज चूड़ी बेचने आया ।
नटवर नै भेस बनाया......

12. आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी

आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी।
माथे पे तुम्हरे चन्दा विराजे, गंगा की छवि न्यारी।
आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी।

गले में तुम्हरे नाग विराजे, भभुती की छवि न्यारी।
आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी।

हाथन में तिरसूल विराजे, डमरू की धुन प्यारी।
आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी।

अंगन में बाघम्बर सोहै, नन्दी बनी सवारी।
आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी।

दुखियों का दुःख हरने वाले, विपदा हरो हमारी।

आओ हमरी नगरिया, ए भोले भंडारी।

13. आये हैं तेरे द्वार, उबार लेउ गणपति देवा

आये हैं तेरे द्‌वार,
उबार लेउ गणपति देवा।
जन का करो कल्याण,
उबार लेउ गणपति देवा॥
यह संसार है दुःख का सागर, करदेउ बेड़ा पार।
उबार लेउ गणपति देवा।
विघ्न विनाशक, जग – रखवाले, हर लो दुःख हमार।
उबार लेउ गणपति देवा।
मात-पिता के तुम हो दुलारे, भक्तों को दे दो प्यार।
उबार लेउ गणपति देवा।
दीन दुखारे शरण तुम्हारे, तुम हो जगत् आधार,
उबार लेउ गणपति देवा।

14. श्याम रे आइ जइयो

राधा रंगीली मेरो नाम, श्याम रे आइ जइयो
जमुना किनारे मेरौ गाँव श्याम रे आ जइयो॥
जमुना किनारे मेरी ऊँची हवेली, मैं ब्रज की गोपिका नवेली
बरसानो मेरो गाम, कि बंसी बाजाइ जइयो
मल-मल कै स्नान कराऊँ, घिस-घिस चन्दन खौर लगाऊँ।
पूजा करूँ सुबह शाम कि माखन खाय जइयो॥
खस-खस कौ बंगला बनवाऊँ, चुन-चुन कलियाँ सेज सजाऊँ।
धीरे-धीरे दाबूँ में पाँव, प्रेम-रस पियाय जइयो॥
देखत रहूँगी बाट तुम्हारी, जल्दी अइयो कृष्णमुरारी।
झाँकी करेंगी ब्रजवाम कि हंस-मुस्काय जइयो॥

15. श्याम आप बसे हैं मथुरा में

श्याम आप बसे हैं मथुरा में, मेरी उमर बीत गयी गोकुल में।

श्याम रस्ते में बाग लगा जाना,
फुलवा चुनूँगी अकेली, जल्दी आ जाना।

श्याम रस्ते में कदंब लगा जाना,
झूला झूलूँगी अकेली, जल्दी आ जाना।

श्याम रस्ते में गैया बँधा जाना,
दुधवा दुहूँगी अकेली, जल्दी आ जाना।
श्याम आप बसे हैं मथुरा में, मेरी उमर बीत गयी गोकुल में।

16. चोरी-चोरी चले, बड़े चोर निकले कान्हा

चोरी-चोरी चले, बड़े चोर निकले कान्हा, दिल के बड़े ही कठोर निकले।
मैया यशोदा ने तुमको पाला, नन्द बाबा ने तुमको सँभाला,
उनको भी छोड़ बड़े भोर निकले, बड़े चोर निकले।

ग्वाल-बाल मिलि गैया चरावें, तुम्हरी भी गैया सँग ले जावें,
पर, तुम तो बड़े ही छिछोर निकले, बड़े चोर निकले।

राधा प्यारी तुम्हें दिल में बसावें, संग तुम्हारे रास रचावें,
उनको भी छोड़ चितचोर निकले, बड़े चोर निकले

17. श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे—

श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे—2
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में जमुना बहें धीरे-धीरे,
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे।
इत मनसुख और उत श्रीदामा, बीच में कान्हा चले धीरे धीरे,
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे।
इत गोपी उत ग्वाल सखा सब, बीच में कान्हा नचे धीरे-धीरे,
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे।
इत ललता उत सखी बिशाखा, बीच में राधा चले धीरे-धीरे,
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे-धीरे।

18. बंशी वाले ने घेर लई, अकेली पनिया गई

बंशी वाले ने घेर लई, अकेली पनिया गई—2
मैं तो गई थी जमुना तट पै, कान्हा खड़ा था री पनघट पै,
बड़ी मुझको री देर भई, अकेली पनिया गई।

श्याम ने मेरी चुनरी झटकी, सर से मेरे गिर गई मटकी,
बहिंया मोरी मरोड़ दई, अकेली पनिया गई।

बड़ा नटखट है श्याम संवारिया, ले डारी मोरी कोरी चुनरिया,
गगरी मोरी फोड़ दई, अकेली पनिया गई।

लाख कही पर एक न मानी, भरने न दे वो मोहे पानी,
मारे लाज के मैं मर गई, अकेली पनिया गई।
मुरली वाले ने घेर लई, अकेली पनिया गई।

19. रुनझुन पैंयाँ धरो, मोरी अम्बे रानी

रुनझुन पैंयाँ धरो, मोरी अम्बे रानी, पायन पयलवा बाजत जाय।
मैया दुआरे एक अन्धा पुकारे,
अन्धे को नयना देउ, मोरी अम्बे रानी, अन्धा तुम्हारी छवि देखत जाय।
मैया दुवारे एक कोढ़ी पुकारे,
कोढ़ी को काया देउ, मोरी अम्बेरानी, कोढ़ी तुम्हार जस गावत जाय।
मैया दुवारे एक बाँझिन पुकारे,
बाँझिन को बालक देउ, मोरी अम्बे रानी, बाँझिन बाल खेलावत जाय।
मैया दुवारे एक गूँगा पुकारे,
गूँगे को बोली देउ, मोरी अम्बे रानी, गूँगा तुम्हार गुण गावत जाय।

20. नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविंदा

नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविंदा
शयाम सुंदर मुख चंदा, भजो रे मन गोविंदा

तू ही नटवर तू ही नागर, तू ही बाल मुकन्दा
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यों तारा विच चंदा
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

सब सखियन में राधा बड़ी हैं, ज्यों नदियां विच गंगा
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

ध्रुव तारे प्रहलाद उबारे, नरसिंह रूप धरंता
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

कालीदह में नाग ज्यों नाथों, फण-फण निरत करंता
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकन्दा
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम का फंदा
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

तू ही नटवर तू ही नागर, तू ही बाल मुकन्दा
भजो रे मन गोविंदा, नटवर नागर नंदा...

नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविंदा
शयाम सुंदर मुख चंदा, भजो रे मन गोविंदा

21. भक्तों को दर्शन दे गयी रे, एक छोटी सी कन्या

भक्तों को दर्शन दे गयी रे, एक छोटी सी कन्या।
भक्तों ने पूँछा निवास तेरा कहाँ है?
ऊँचे-ऊँचे पर्वत बताय गयी रे, एक छोटी सी कन्या।
भक्तों ने पूँछा पहनावा तेरा क्या है?
लहँगा व चूनर बताय गयी रे, एक छोटी सी कन्या।
भक्तों ने पूँछा नाम तेरा क्या है?
दुर्गा व काली बताय गयी रे, एक छोटी-सी कन्या ।
भक्तों ने पूँछा भोग तेरा क्या है?
हलुवा व पूड़ी बताय गयी रे, एक छोटी सी कन्या।
भक्तों को दर्शन दे गयी रे, एक छोटी सी कन्या।

22. कैसो मांगे दान दही को, मारग रोके गिरधारी

कैसो मांगे दान दही को, मारग रोके गिरधारी,
नितप्रति निकसि जाए चोरी सों गूजर बरसाने वाली।
रोके मत गैल, बड़ो दानी भयो छैल, सुन नन्द के ठगैल, तोहे लाज न रही,
रही कुल की जो रीत, और आपस की प्रीत, ऐसी करे अनरीत, रीत तोड़ क्यों दई,

दई उलटी रीत चलाई, जाए घर पूछे महतारी।
कैसो मांगें दान दही को..
पूछों कहाँ माय, तौन लूँगा मैं छुपाय, क्यों न सूधी बतलाए, इठलावे क्यूँ घनी,
घनी देखीं बहु नार, बड़े देवकी कुमार, कहे मोहे ठग वार, मोहे लागे ठगिनी,
ठग नैना तेरे चपल, गुजरिया हिरदै की काली।
कैसो मांगें दान दही को..
कारी जायो रात यासे कारो भयो गात, दही मांग मांग खात, बात ऐंठ के करो,
तोहे कंस को न डर, रोक राखी है डगर, तोहे गोलचा दो धर, घर रोवत फिरो,
फिरो घर घर माँगत छाछ, नाथ तुम कबके बलधारी।
कैसो मांगें दान दही को..
बल देखो कहाँ मेरो, कंस मारूँगा सवेरो, नाहिं फूफा लगे तेरो, रट वाई की लगी,
लई खूब समझाए, कहे बातन बनाए, तोहे दूँगो मैं नचाए, जैसे दही में रई,
रहियत बाबा घर फिरें, तोसी सौ सौ गोबरहारी।
कैसो मांगें दान दही को..
रईयत हमारी लाल, अब बनैं भूमि पाल, जोरि दस पांच ग्वाल, बाल बांकुरे भये
भये मथुरा में आप, बंदी काटे माई बाप, भानुपुर के प्रताप, गाय चराई इंह्या रहे
रहे उलटी आंख दिखाय, कमरिया ओढ़ लई कारी
कैसो मांगें दान दही को..
कामर हमारी, तीन लोक तें हूं न्यारी, तूं तौ जानैं न गंवारी, पांवैं देव हूं न पार
पार पायो नाहिं शेष, इन्द्र अज हू महेश, मेरौ ग्वारिया को भेष, देश प्रेम को प्रचार
चट दऊंगौ कंस फछार, "श्याम" कामर में गुन भारी
कैसो मांगे दान दही को रोके मारग गिरधारी
नित प्रति निकसि गई चोरी तें गोरी बरसाने वारी

23. राधिका गोरी से

राधिका गोरी से, बिरज की छोरी से, मैया करा दे मेरो ब्याह
उमर तेरी छोटी है, नजर तेरी खोटी है, कैसे करा दूँ तेरो ब्याह

जो नहीं ब्याह कराए, तेरी गैया नहीं चराऊँ,
आज के बाद मेरी मैया, तेरी देहली पर ना आऊ,
आएगा, रे मजा, रे मजा, अब जीत हार का,
राधिका गोरी...

चंदन की चौकी पर, मैया तुझको बिठाऊँ,

अपनी राधा से मैं, चरण तेरे दबवाऊँ,
भोजन में बनवाऊँगा, बनवाऊँगा, छप्पन प्रकार के,
राधिका गोरी...

छोटी सी दुल्हनिया, जब अंगना में डोलेगी,
तेरे सामने मैया, वो घूँघट ना खोलेगी,
दाऊ से जा कहो, जा कहो, बैठेंगे द्वार पे,
राधिका गोरी ......

सुन बातें कान्हा की, मैया बैठी मुस्काए,
लेके बलइया मैया, हिवड़े से अपने लगाए,
नजर कहीं लग जाए, ना लग जाए, ना मेरे लाल को,
राधिका गोरी ......

24. मैं तो पूजूंगी गोरी गणेश, गजानन्द प्यारा लागे

(तर्जः मैं तो भूल चली बाबुल का देश पिया का घर प्यारा लगे) .
मैं तो पूजूंगी गोरी गणेश, गजानन्द प्यारा लागे,
मंदिर में देखी तुम्हारी ये मूरत, सब से निराली, अलबेली सी सूरत, हो ऽ ऽ ऽ
भारत जैसा ऽ ऽ ऽ , भारत जैसा ये भक्तों का देश, गजानन्द प्यारा लागे।
भोग लगाऊं, लड्डू मेवा चढ़ाऊं,
शंकर को ध्याऊं, गौरी को मनाऊं,
हो ऽ ऽ ऽ नहीं ऐसा कोई दूजा देव, गजानन्द प्यारा लागे।
बैठी हूं मैं तेरे द्वारे पे आके,
मन की आशा मेरी पूरी करा दे
हो ऽ ऽ ऽ रिद्धि सिद्धि से भर दे भण्डार, गजानन्द प्यारा लागे।

25. जिनके हृदय श्री राम बसे

जिनके हृदय श्री राम बसे, तिन और को नाम लियो न लियो
जिनके हृदय श्री राम . . .
कोई मंदिर जाकर नमन करे, कोई घर में बैठ के भजन करे
जिन दीन दुखी संग किरपा की, तिन ईश को नाम लियो न लियो
जिनके हृदय श्री राम . . .
कोई हीरे मोती दान करे और दान का रोज बखान करे
जिन कन्या धन को दान कियो, तिन और को दान दियो न दियो

जिनके हृदय श्री राम बसे . . .

कोई काशी मथुरा गमन करे कोई हर की पौड़ी पे स्नान करे

जिन मात पिता की सेवा की तिन्ह तीरथ धाम कियो न कियो

जिनके हृदय श्री राम बसे . . .

26. इकली घेरी बन में आय, श्याम तैनें कैसी ठानी रे

इकली घेरी बन में आय, श्याम तैनें कैसी ठानी रे

श्याम मोय वृन्दान जानौ, लौट कैं बरसाने आनौ। मेरे कर जोरी की मानो।

जो मोय होय अबेर लड़े घर नन्द-जिठानी रे॥

इकली...

ग्वालिनी मैं समझाऊँ तोय, दान तू दधि कौ देजा मोय। तभी ग्वालिन जाने दऊँ तोय।

जो तू नाहीं करै होय तेरी ऐंचा-तानी रे॥

इकली...

दान हम कबहूँ नाँय दीयौ, रोक मेरौ मारग क्यों लीयौ। बहुत सौ ऊधम तुम कीयौ।

आज तलक या ब्रजमें ऐसौ कोई भयो न दानी रे॥

इकली....

ग्वालिनी बातन रही बनाय, ग्वाल बालन कू लउँ बुलाय। तेरौ सब दधि माखन लुटि जाय

इठलावै तू नारि, छाय रही तोकू ज्वानी रे॥

इकली...

कंस राजा पर करूँ पुकार, पकर बँधवाय दिवाऊँ मार। तेरी सब ठकुरई देय निकार।

जुल्म करे न डरे तके तू नारि बिरानी रे॥

इकली...

कंस का खसम लगै तेरौ, मार के कर दउँगो केरौ। वाई कूँ जन्म भयो मेरौ।

करूँ कंस निर्बंस मैंट दउँ नाम – निशानी रे॥

इकली...

आय गए इतने में सब ग्वाल, पड़े आँखन में डोरा लाल। झूम के चलें अदाँ की चाल

लुट गई ग्वालिन मारग में, घर गई खिसियानी रे॥

इकली...

करी लीला जो श्यामाश्याम, कौन वरनन कर सकै तमाम। करूँ बलिहार सभी ब्रजधाम।

कहते ”घासीराम“ नन्द कौ है सैलानी रे॥

इकली...

27. मैया कर दै मेरो ब्याह, मँगाय दै दुलहिन गोरी-सी

मैया कर दै मेरो ब्याह, मँगाय दै दुलहिन गोरी-सी॥
गोरी गुनवारी, होय भोरी-सी बिचारी,
झलकारे नथवारी, बड़े गोप की लली।
लली ढूँढ़ दै री माय, यामें कहा तेरौ जाय,
झट दुल्हा बनाय, बात मान ले भली॥
भली छोटे हाथन बीच, रचाय दे मेंहदी थोरी-सी।
मैया कर दै मेरौ ब्याह. . . .

थोरी-सी बरात, ग्वाल-बाल पाँच सात,
मलि हरदी मो गात, सीस सेहरा बँधाय।
धाय कर पूरी रीत, गोपी गाय देंगी गीत,
दे दे नयौ पटपीत, बागौ रेशमी धराय।
धर मुकुट ब्याहिबे जाऊँ, कछाय दै कछनी कोरी-सी
मैया कर दै मेरौ ब्याह. . . .

कोरी करै बात, बुरौ बलदाऊ भ्रात,
लै न जाऊँगो बरात, राखै कबहु न मेल।
मेल राखै न कबहु, ताय भोलो कहैं तू हू,
मैया ढूँढ़ दै बहू, सब बन जाय खेल।
खेलन वा दिन घर आई, काहू की छोरी भोरी-सी।
मैया कर दै मेरौ ब्याह. . . .

भोरी ऐसी ढुँढ़वाय, ले गोदी में बिठाय,
रूठ जाऊँ ले मनाय, कर राखै मन बस।
बस बाबा ते बचाय, मेरी बियार करै आय,
हौले-हौले बतराय, आये बातन में रस।
रस-गाहक दुलहिन 'श्याम', प्रीत बढ़े चन्द्र चकोरी-सी।
मैया कर दै मेरौ ब्याह. . . .

28. मेरौ बारौ सो कन्हैंया कालीदह पै खेलन आयो री

मेरौ बारौ सो कन्हैंया कालीदह पै खेलन आयो री॥
ग्वाल-बाल सब सखा संग में गेंद को खेल रचायौरी॥ मेरौ...
काहे की जाने गेंद बनाई काहे को डण्डा लायौरी॥ मेरौ...

रेशम की जानें गेंद बनाई, चन्दन को डण्डा लायौरी।मेरौ...

मारौ टोल गेंद गई दह में गेंद के संग ही धायौरी॥ मेरौ...

नागिन जब ऐसे उठि बोली, क्यों तू दह में आयौरी॥ मेरौ...
कैं तू लाला गैल भूलि गयो, कै काऊ ने बहकायौरी॥ मेरौ...

कैसे लाला तू यहाँ आयो, कैं काऊ ने भिजवायोरी॥ मेरौ...
ना नागिन मैं गैल भूल गयो, ना काऊ ने बहकायौरी॥ मेरौ...

नागिन नाग जगाय दे अपनों याहीकी खातिर आयौरी॥ मेरौ...
नाँय जगाये तो फिर कहदे ठोकर मारि जगायौरी॥ मेरौ...

हुआ युद्ध दोनों में भारी, अन्त में नाग हरायौ री॥ मेरौ...
नाग नाथि रेती में डारौ फन-फन पे बैंन बजायौरी॥ मेरौ...

रमनदीप कूँ नाग भेज दियौ फनपै चिन्ह लगायौरी॥ मेरौ...
'घासीराम' ने रसिया कथिके, भर दंगल में गायौरी॥ मेरौ...

29. तुम हमारे थे प्रभुजी तुम हमारे हो

तुम हमारे थे प्रभुजी तुम हमारे हो, तुम हमारे ही रहोगे ओ मेरे प्रियतम
तुम्हें छोड़ सुनि नंददुलारे कोई न मीत हमारो
किसके द्वारे जाई पुकारूं और न कोई सहारो
अब तो आ के बाँह पकड़ लो ओ मेरे प्रियतम
तुम हमारे थे प्रभुजी तुम हमारे हो, तुम हमारे ही रहोगे ओ मेरे प्रियतम
हम तुम्हारे थे प्रभुजी हम तुम्हारे हैं हम तुम्हारे ही रहेगें ओ मेरे प्रियतम
तेरे कारण सब जग छोड़ा तुम संग नाता जोड़ा
एक बार प्रभु बस ये कह दो तू मेरा मैं तेरा
साँची प्रीत की रीत निभा दो ओ मेरे प्रियतम
तुम हमारे थे प्रभुजी तुम हमारे हो, तुम हमारे ही रहोगे ओ मेरे प्रियतम
हम तुम्हारे थे प्रभुजी हम तुम्हारे हैं हम तुम्हारे ही रहेंगे ओ मेरे प्रियतम
दास की यह विनती सुन लो ओ बृज राज दुलारे
आखिरी आस यही जीवन की पूरण करो न प्यारे
बार इक हिय से लगा लो ओ मेरे प्रियतम
तुम हमारे थे प्रभुजी तुम हमारे हो, तुम हमारे ही रहोगे ओ मेरे प्रियतम
हम तुम्हारे थे प्रभुजी हम तुम्हारे है, हम तुम्हारे ही रहेगें ओ मेरे प्रियतम

30. सबसे ऊंची प्रेम सगाई

सबसे ऊंची प्रेम सगाई, सबसे ऊंची प्रेम सगाई

दुर्योधन के मेवा त्याग्यो, साग विदुर घर खाई |

जूठे फल शबरी के खाये, बहु विधि स्वाद बताई |

राजसूय यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हा, तामे जूठ उठाई |

प्रेम के बस पारथ रथ हांक्यो, भूल गये ठकुराई |

ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई |

प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं, आप बने हरि नाई |

सूर क्रूर एहि लायक नाहीं, केहि लगो करहुं बड़ाई |

31. मीठे रस से भरी रे राधा रानी लागे

मीठे रस से भरी रे, राधा रानी लागे, मने कारो कारो जमुनाजी रो पानी लागे ॥
यमुना मैया कारी कारी राधा गोरी गोरी । वृन्दावन में धूम मचावे बरसाना री छोरी ।
व्रजधाम राधाजू की रजधानी लागे, मने कारो कारो जमुनाजी रो पानी लागे

कान्हा नित मुरली मे टेरे सुमरे बरम बार |कोटिन रूप धरे मनमोहन, तऊ ना पावे पार |
रूप रंग की छबीली पटरानी लागे, मने कारो कारो जमुनाजी रो पानी लागे

ना भावे मने माखन-मिसरी, अब ना कोई मिठाई। मारी जीबड़या ने भावे अब तो राधा नाम मलाई ।
वृषभानु की लली तो गुड़धानी लागे, मने कारो कारो जमुनाजी रो पानी लागे

राधा राधा नाम रटत है जो नर आठों याम । तिनकी बाधा दूर करत है राधा राधा नाम
राधा नाम मे साफल जिंदगानी लागे, मने कारो कारो जमुनाजी रो पानी लागे

टेसू के गीत

दशहरे से पहले नवरात्र में छोटे लड़के तीन खपच्चियों पर टेसू का शीश सा बनाकर टोलियों में घर घर घूमते हैं और पैसे माँगते हैं। छोटी लड़कियाँ एक छेदों वाली छोटी मटकी में दिया जलाकार टेसू की पत्नी झाँझी के नाम पर पैसे माँगती हैं। टेसू गीतों में बेसिरपैर की तुकबन्दी सी होती है जबकि झाँझी के गीत गम्भीर होते हैं। शरद पूर्णिमा की रात को जमा किए गए धन से टेसू की बारात निकाली जाती है। उधर लड़कियाँ भी जमा किए गए धन से झाँझी के विवाह की तैयारी करती हैं। किसी सार्वजनिक स्थान पर धूमधाम से टेसू और झाँझी का विवाह कर दिया जाता है। और फिर उनका विसर्जन कर दिया जाता है. टेसू का नाता महाभारत से जुड़ा हुआ है. कहा जाता है कि टेसू जिनका वास्तविक नाम बर्बरीक था, भीम के पुत्र घटोत्कच के पुत्र थे. वे परमवीर थे और महादानी थे. उन्होंने अपनी मां को वचन दिया था कि महाभारत में जिस किसी की सेना हार रही होगी वह उस की ओर से युद्ध लड़ेंगे.

भगवान श्रीकृष्ण को पता था कि अगर बर्बरीक कौरवों की तरफ से युद्ध लड़ेंगे तो वह 1 दिन में ही महाभारत युद्ध समाप्त कर देंगे और पांडवों की हार होगी. इसलिए उन्होंने साधु का भेष रखकर बर्बरीक से उनका सिर मांग लिया. बर्बरीक ने भी अपना सिर भगवान को अर्पित कर दिया. लेकिन उन्होंने इच्छा जाहिर की कि उन्हें महाभारत का युद्ध देखना है. इसलिए बर्बरीक के सिर को तीन डंडियों के सहारे पर्वत पर रख दिया, जहां से उन्होंने पूरी महाभारत देखी. भगवान कृष्ण ने उन्हें वरदान दिया कि कलयुग में खाटू श्याम के नाम से उनकी पूजा की जाएगी.

1. आगरे को जाएँगे, चार कौड़ी लाएँगे

(पारम्परिक टेसू की आँखों और नाक तथा इसके मुख के स्थान पर कौड़ी चिपकाई जाती है। अतः चार कौड़ियों की आवश्यकता होती है। बाद में ये कौड़ियाँ सँभालकर रख ली जाती हैं क्योंकि इनको शुभ और कल्याणकारी माना जाता है।)

आगरे को जाएँगे, चार कौड़ी लाएँगे
कौड़ी अच्छी हुई तो, टेसू में लगाएँगे,
टेसू अच्छा हुआ तो, गाँव में घुमाएँगे,
गाँव अच्छा हुआ तो, चक्की लगबाएँगे,
चक्की अच्छी हुई तो, आटा पिसवाएँगे,
आटा अच्छा हुआ तो, पूए बनवाएँगे,
पूए अच्छे हुए तो, गपगप खा जाएँगे,
खाकर अच्छा लगा तो बाग घूमने जाएँगे,
बाग अच्छा हुआ तो, माली को बुलाएँगे,
माली अच्छा हुआ तो, आम तुड़वाएँगे,
आम अच्छे हुए तो, घर भिजवाएँगे,
घर भिजवाकर, अमरस बनवाएँगे,
अमरस अच्छा हुआ तो, आगरे ले जाएँगे।
आगरे को जाएँगे, चार कौड़ी लाएँगे—

2. टेसू रे टेसू घंटार बजइयो

टेसू रे टेसू घंटार बजइयो,
इक नगरी दो गाँव बसइयो,
बस गए तीतर, बस गए मोर,
फिरत चमारिया लै गए चोर,
चोरन के घर खेती हुई,
खाय चमरिया मोटी हुई,
मोटी है कै मायके आई,
माय कहै मेरी लाड़ो आई,
सिर के बाल कहाँ धर आई।

3. टेसू रे टेसू घंटार बजाना

टेसू रे टेसू घंटार बजाना, इक नगरी दस गाँव बसाना।
उड़ गए तीतर रह गए मोर, गबरू बैल को ले गए चोर,
चोरों के घर खेती हुई, खाके चोरनी मोटी हुई,
मोटी होके मायके आई, देख हँसे सब लोग लुगाई,
गुस्सा होके पहुँची दिल्ली, दिल्ली से लाई दो बिल्ली,
एक बिल्ली कानी, सब बच्चों की नानी,
नानी नानी टेसू आया, संग में अपने झाँझी लाया,
मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को माँगे दही बड़ा,
दही बड़ा हो हइया, झट निकाल रुपइया,
रुपए के तो ला अखरोट, मुझको दे दे सौ का नोट।

4. मेरा टेसू यहीं खड़ा

मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को माँगे दही बड़ा,
दही बड़ा बहुतेरा, खाने को मुँह टेढ़ा
आगरे की हाट में
आगरे की हाट में जाटनी बिहार की,
झुमके उसके लाख के तो नथनी हज़ार की
बैठ के अपने रंगमहल में ढोलकी बजाती,
ढोलकी की तान अपने तोते को सुनाती
तोता बैठा रेल में तो मैना भी संग में चढ़ी,

सीटी मार के धुआँ उड़ाती रेल फ़ौरन चल पड़ी
रेल के पहले ही डिब्बे में टेसू जी थे खड़े हुए,
तीन टाँग और काली टोपी जिसमें लड्डू पड़े हुए
लड्डू पेड़े खाने वाले काले हैं कल्यान जी,
दूध दूधिया पीने वाले गोरे हैं मलखान जी
लाल सिंदूर लगा लंका में कूद पड़े हनुमान जी,
जय बोलो सीता मइया की लंका जीते राम जी।

5. टेसू आए बानवीर

टेसू आए बानवीर, हाथ लिए सोने का तीर,
एक तीर से पत्ते झाड़े, कान्हा जी देखत रहे ठाड़े
कान्हा जी की बन्सी बाजी, राधा छून छनाछन नाची,
एक घुँघरू टूट गया, दूध का मटका फूट गया
या तो जल्दी मटका जोड़ो, या फिर अपना बटुआ खोलो,
रुपया धेली जो कुछ हो, टेसू बीर के नाम पे दो।
(उपरोक्त गीत बर्बरीक की उस कथा पर आधारित है जिसमें उनहोंने एक ही बाण से पेड़ के सारे पत्तों में छेद कर दिया था)

6. मेरा टेसू यहीं अड़ा

मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को माँगे दही बड़ा,
सूख गया मेरा टेसू, एक टाँग पर खड़ा खड़ा
टेसू को लोमड़ी काट गई, दद्दू की हँडिया चाट गई,
हँडिया रखी थी खटिया पे, दद्दू की खटिया घाट गई,
खटिया बड़ी के दद्दू बड़ा, मेरा टेसू यहीं अड़ा।

7. एक पिटारा हमने खोला

एक पिटारा हमने खोला, उसमें से निकला भप्पू गोला,
भप्पू गोले को दिया तमाचा, कठपुतली बनकर वह नाचा
कठपुतली ने गाड़े खूँट, बँधे मिले उनमें सौ ऊँट,
उन ऊँटों पर हुई सवारी, राह में मिल गई सड़ी सुपारी
सड़ी सुपारी को जब काटा, उसमें से निकला नौ मन आटा,
नौ मन आटे की बनाई रोटी, उसमें से निकली झाँझी छोटी
झाँझी ने जब घूँघट खोला, पीछे से यों टेसू बोला,

महाभारत की रेलमपेल, मैंने देखा सारा खेल
कहता हूँ डंके की चोट, फौरन दे दो सौ का नोट।

8. चन्दा दे दो, चन्दा दे दोचन्दा दे दो, चन्दा दे दो

मेंढक बोले टर्री टर्री, नाई की मूँछें हरी हरी,
गाय की पूँछ पे धान उगा, गाय ने किसकी मूँछ चरी,
अजी मूँछ बड़ी के नाई बड़ा, मेरा टेसू यहीं अड़ा।
चन्दा दे दो, चन्दा दे दो ...

9. टेसू राजा बीच बाज़ार

टेसू राजा बीच बाज़ार, खड़े हुए ले रहे अनार
इस अनार में कितने दाने? जितने हों कम्बल में खाने
कितने हैं कम्बल में खाने? भेड़ भला क्यों लगी बताने
एक झुंड में भेड़े कितनी? एक पेड़ पर पत्ती जितनी
एक पेड़ में कितने पत्ते? धोबी के घर जितने लत्ते
धोबी के घर कितने लत्ते? जितने कलकत्ते में कुत्ते
बीस लाख तेईस हज़ार, दाने वाला एक अनार
टेसू राजा कहें पुकार, लाओ मुझको दे दो चार

10. लौकी बक लौक चचेड़ा

लौकी बक लौक चचेड़ा, लौकी ऊले बांस बसेड़ा
ऊलत ऊलत कहाँ गई, धुबनिया के टोला
अरी धुबनिया चोर आयो, केतो गयो केतो आयो
आज जो मेरो धोबी होतो, मार लकड़ियाँ ढेर कर देतो

11. टेसू हो तुम वामन वीर

टेसू हो तुम वामन वीर,
हाथ लिये सोने का तीर
बजरंग बेटा खड़ा निशान,
बाएँ हाथ चला पहिचान
हरे बाग मा डेरा परिगा,
सब लोगों ने पूँछी बात

कितना लोग तुम्हारे पास,
अस्सी पियादे, नौ असवार

12. मेरा टेसू यहीं अड़ा

मेरा टेसू यहीं अड़ा
खाने को माँगे दही बड़ा
दही बड़े ने पूछी बात
कह दे बेटा मन की बात
आगरे के टेकरे से
लड़की सुनार की
उसके भूरे-भूरे बाल
उसकी नथनी हजार की
सोने के कान फूल
सोने की आरसी
महल बैठी ढोलकी बजाती
ढोलकी की तान अपने यार को सुनाती
यार का दुपट्टा सारे शहर की निशानी
माँगो रे लड़को आई दीवाली
रेल चली है खटके से
चवन्नी निकालो मटके से

13. टेसू आए घर के द्वार

टेसू आए घर के द्वार।
खोलो रानी चंदन किवार।
टेसू की मर गई नानी,
नानी बड़ी सयानी।
नानी की थी बिल्ली,
बिल्ली बड़ी चिबिल्ली।
बिल्ली खाए बर्फी, बर्फी में लगी पन्नी,
दे दो एक चवन्नी॥

14. इमली की जड़

इमली की जड़ से निकली पतंग, नौ सौ मोती नौ सौ रंग

एक रंग मैंने माँग लिया, दिल्ली जाय पुकार किया
दिल्ली से आया काला कोट, मार सिकंदर पहली चोट
कोट चोट चूल्हे की ओट, चूल्हा माँगे सौ का नोट
(जिससे माँगा जा रहा है वह भी बड़ा बेशरम है, वह कहता है) –
चूल्हे में मारूँ धक्का, जाय पड़े कलकत्ता
बिल्ली का सा बच्चा, मैं तेरा चच्चा, चल भाज यहाँ से

15. टेसू जी अगड़ करें

(जब कई गीत गाने के बाद भी किसी घर से कुछ न मिले तो चिल्ला चिल्लाकर ऐसा कुछ गाते हैं)

टेसू जी अगड़ करें, टेसू जी बगड़ करें, टेसू जी तो लैई के टरें
पक्की ईंट का बंगला, इसमें रहवै कंगला,
घर घर जाओ माँग के लाओ, जल्दी ला इस कंगले को खवाओ

सन्दर्भ सूची

अपनी परम्पराओं से प्रेम करने वाली कुछ विदुषी महिलाओं ने लोकगीतों की कुछ पुस्तकें प्रकाशित कराई हैं. श्रीमती चंद्रा त्रिपाठी द्वारा संकलित 'स्वर सरिता', श्रीमती श्यामलता कर्नावट द्वारा संकलित 'श्याम रत्नावली' (हिंदी और राजस्थानी भाषा में) एवं श्रीमती माया श्रीवास्तव द्वारा संकलित 'माटी के गीत' पुस्तकें पढ़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ. इन सभी का प्रयास अत्यधिक प्रशंसनीय है. इन पुस्तकों के कुछ गीतों को मैंने अपनी पुस्तक में संकलित किया है.

मेरी बड़ी बहनें बचपन से ही बहुत से लोकगीत गाती थीं. अपनी मिट्टी की गंध से रचे बसे उन गीतों को भी मैंने इस पुस्तक में स्थान दिया है.

इन्टरनेट मीडिया से भी मुझे बहुत से गीत प्राप्त हुए हैं जिन्हें इस पुस्तक में सम्मिलित लिया गया है.

लेखक की अन्य कृतियाँ

प्रिंट एवं ई-बुक्स

हिंदी कहावत कोश - हार्ड कवर एडिशन - amazon.in पर उपलब्ध.

इस पुस्तक का विमोचन केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा 14 सितम्बर 2024 हिंदी दिवस पर किया गया. दस हजार से अधिक कहावतें, कहावतों की कहानियाँ एवं चित्र.
हिंदी कहावत कोश - kindle edition ई-बुक रीडर्स के लिए
शम्बूक वध एवं कालिया मर्दन पेपरबैक amazon.in पर उपलब्ध.
शम्बूक वध एवं कालिया मर्दन kindle edition
Ram & Shambook Krishna & Kalia   Kindle Edition (English version for overseas readers)

वेबसाइट्स
hindikahawat.in दस हजार से अधिक हिंदी कहावतें, कहावतों की कहानियाँ, लोकगीत, बच्चों की कहावतें, ट्रकों की कहावतें, संस्कृत कहावतें, मुहावरे, कहावतों से सम्बंधित प्राचीन शब्दावली एवं वस्तुओं के चित्र
healthhindi.in स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारिक जानकारी पर लेख एवं वीडियोज

यू-ट्यूब चैनल्स
Hindikahawatkosh हिंदी कहावतों एवं पहेलियों पर रुचिकर शार्ट वीडियोज @sharad110659 स्वास्थ्य जानकारी देने वाले वीडियोज
Drsharadflute बांसुरी की मधुर धुनें - सुगम संगीत एवं भक्ति संगीत